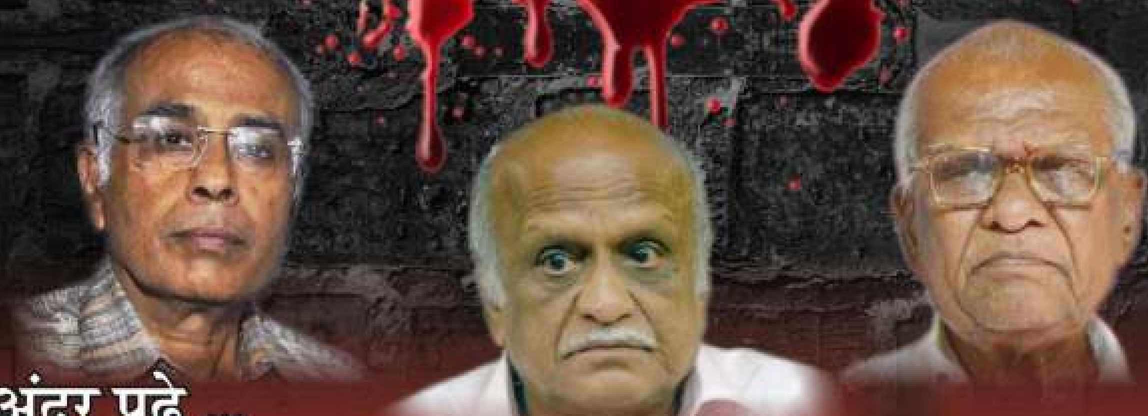
वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

नवंबर - 2015



अंदर पढ़े ...

- किधर जा रहा है देश
- अपने पुरस्कार सम्मान वापस करना
- दीर्घायु भोगने का रहस्य
- मानव अधिकारों का उलंघन
- व अन्य सथाई स्तम्भ

20/-

कलम की ताकत को गोलियों से नहीं दबाया जा सकता...

Reg. No. HARHIN/2014/60580

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

अनुपम राजपुरा - 94683-89373

बलबीर चन्द लोंगोवाल - 98152-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

वार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर, नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली ।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App : Readwhere.com

Tarksheel on Twitter: @gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक जाट धर्मशाला, कुरुक्षेत्र में दिनांक 17-01-2016, दिन रविवार को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

संपर्क सूत्रः

बलवंत सिंह- 9416324802
बलजीत भारती -8295051400

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। चैक/कैश शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416336203 पर एस.एम.एस करें।

नोट किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

संपादकीय

किधर जा रहा है देश....

हरियाणा में फरीदाबाद जिले़ के गांव सुनपेड़ में घटी दर्दनाक घटना ने हरेक संवेदनशील व्यक्ति के मन को व्यथित कर दिया है। मीडिया रिपोर्टो के अनुसार 21 अक्तूबर की रात जितेन्द्र के घर पर वह आफत बन कर टूट पड़ी जब कुछ लोगों ने उनके घर में तेल छिड़क कर आग लगा दी, जिसमें दो बच्चे दिव्य और गौरव जल कर मर गए। जिते-द्र की पत्नी भी जलने से घायल हो गई।

इस प्रकार की व्यथित करने वाली दुर्घटनाएं हरियाणा जैसे आर्थिक रूप से अग्रणी राज्य में घटने पर बेहद अफसोस होता है। हरियाणा में इससे पूर्व भी दलितों के उत्पीड़न का ना थमने वाला सिलसिला जारी है। दुलीना, गोहाना, मिर्चपुर, भगाणा आदि स्थानों पर दलितों के उत्पीड़न की घटनाएं बहुत कुछ सोचने पर विवश कर देती हैं। दलितों पर होने वाले अत्याचार राज्य के आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर शर्म से सिर झुका देने वाले हैं। सोनीपत व हांसी के भारसा गांव के किशोरों का कथित प्रताड़ना से जीवन लीला समाप्त कर लेना भी कानून व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न लगाता है।

हरियाणा ही क्यों पूरे देश में दलितों के हक में बेहद कानून होने के बावजूद दलित उत्पीड़न की घटनाएं होती रहती हैं। शिक्षा और शासन प्रशासन में दलितों की भूमिका बढ़ी है। ये तथ्य भी सामंती पवृति के लोगों को रास नहीं आ रहा है वे दलितों को अपमानित करने का कोई भी अवसर हाथ से जाने नहीं देते, जहां भी दलित वर्ग मुखर होकर अपना अस्तित्व सिद्ध करना चाहते हैं, उन्हें दबाने की मानसिकता से ग्रस्त लोग तत्काल सक्रिय हो उठते हैं।

हरियाणा में पूंजीवादी व्यवस्था का गहरा प्रभाव होने के बावजूद भी सामाजिक ढांचे में पूंजीवादी जीवन मूल्य नहीं बन पा रहे हैं। अभी भी सामंती व कबीला युग के अवशेष इन जीवन मूल्यों का विरोध कर रहे हैं। सामाजिक ताना-बाना मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में बेहद जटिल रूप धारण किए हुए है। छुआछूत भले ही दम तोड़ चुकी हो परन्तु समानता का अधिकार महिलाओं व दलितों के लिए अभी भी बेहद सीमित है। दबंग सामंती समाज के प्रभावी होने के कारण उत्पीड़न होता रहता है। पूंजीवादी व्यवस्था के प्रभाव के कारण उपभोक्तावाद से लैस संसाधन टी.वी., इंटरनेट, मोबाईल आदि के आने के बाद देश दुनिया में हो रहे बदलाव को हम केवल देख रहे हैं। पूंजीवादी जीवन मूल्यों के विरूद्ध अक्सर आवाज़ें उठती रहती है और आधुनिकता को निष्क्रिय करने की कोशिश की जाती है। उन जीवन मूल्यों को अपनाना समझो समाज के वर्चस्व वाले लोगों का कोपभाजन बनना है।

शहरी वर्ग भले ही इन बदलावों के कारण स्वीकृति की दिशा में जा रहा है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी पिछड़ापन है। घूंघट प्रथा, भ्रूण हत्या,जादू-टोना जैसे विषयों पर अभी भी अभियान चलाने पड़ते हैं। दलित वर्ग पर होने वाली जातीय हिंसा की पुनरावृत्ति रोकने के लिए आवश्यक है कि सरकार जमीनी स्तर पर लोक सर्म्पक विभाग के माध्यम से आपसी भाईचारा बढ़ाने वाले व्यक्तियों व संस्थाओं को प्रश्रय प्रदान करे और उत्पीड़न की मानसिकता वाले दबंगों पर तत्काल कानूनी कार्रवाई करने के लिए एक अलग त्वरित कार्रवाई विभाग बनाए जो उत्पीड़ित परिवारों को तत्काल सुरक्षा व आर्थिक सहायता उपलब्ध करा सके।

सामाजिक समरसता के नारे को बुलन्द किया जाए ताकि भाईचारा बना रहे और प्रदेश दुखद दुर्घटनाओं से बचा रहे। ....गुरमीत अंबाला

साहित्यकारों द्वारा
अपने पुरस्कार-सम्मान वापिस करना एक शुभ संकेत

-हेमराज स्टेनो मो : 098769-53561

सभी को पता ही है कि केंद्र में विराजमान भाजपा नेतृत्व वाली सरकार ने चुनाव के समय दौरान जनता के साथ बड़े-बड़े वायदे किए थे। जैसे कि मोदी जी प्रचार रहे थे कि उनके पास महंगाई को खत्म करने का फार्मूला है, काला धन कुछ ही दिनों के अंदर वापिस लाकर प्रत्येक व्यक्ति के खाते में 15-15 लाख रुपए जमा करवा देंगे, बेरोजगारी को जड़ से खत्म कर देंगे, सभी को रोजगार मिलेगा, भारतवर्ष में बुलेट ट्रेनें चलेंगी। रेलवे स्टेशनों को हवाई अड्डों जैसी सुविधाएं मिलेंगी, किसानों को स्वामीनाथन की रिपोर्ट के अनुसार लागत मूल्य पर 50 प्रतिशत लाभ का भाव दिया जाएगा तथा कितना ही कुछ और भी।

परन्तु हुआ इसके बिल्कुल उल्ट। न महंगाई घटी न ही कोई अन्य सुविधा मिली। यूपी का मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी से सवाल कर रहा है कि वे महंगाई घटाने वाला अपना फार्मूला ही बता दें, महंगाई तो जब घटेगी, तब देखा जाएगा। परन्तु मोदी जी मौन हैं। इसी प्रकार किसानों को उनकी फसलों के उचित दाम देने वाली बात तो कहीं चली गई, बल्कि उनकी जमीनें छीनने के लिए नया भूमि अधिग्रहण बिल संसद में लाया गया, जोकि बाद में वापिस ले लिया गया। कमाल की बात तो यह देखो कि गृहमंत्री राजनाथ सिंह कह रहे हैं कि यह भूमि अधिग्रहण बिल किसानों के हितों के कारण वापिस लिया गया है। इसका साफ मतलब है कि जो भूमि अधिग्रहण बिल यह सरकार ला रही थी, वह किसानों के हितों के खिलाफ था। परन्तु पहले सारी केंद्रीय सरकार बार-बार किसानों के हित में दर्शा रही थी। इसी प्रकार बुलेट ट्रेनें चलाने के बारे में अब खबरें आ रही हैं कि यहां कोई बुलेट ट्रेन नहीं चल सकती, क्योंकि इतना धन नहीं। इस प्रकार बुलेट ट्रेन चलाना भी एक शोशा ही था। वैसे यहां यह बताना भी अनुपयुक्त नहीं होगा कि बुलेट ट्रेन का किराया ए.सी. की टिकट से दोगुना होना था, जिस पर कोई साधारण व्यक्ति सफर नहीं कर सकता। बुलेट ट्रेन की बात तो छोड़ो रेलवे स्टेशनों को हवाई अड्डों जैसी सुविधाएं प्रदान करने के लिए 400 रेलवे स्टेशन चुने गए थे, जिनमें से केवल एक स्टेशन को ही एक प्राईवेट कम्पनी ने हामी भरी है, शेष 399 तो वैसे ही रह गए।

यहां पर अब यह बात करना उचित रहेगा कि जोकि सभी को ज्ञान होना चाहिए। जब द्वितीय विश्व युद्ध के समय इटली में फासीवाद आया तो वहां की फासीवादी राजनीतिक पार्टी ने कहा था कि पूंजीपतियों को फांसी पर लटकाएंगे, परन्तु वह पूंजीपतियों द्वारा दिए गए फण्डों की सहायता के सहारे ही विजयी हुई थी। अब देखो यही बात मोदी जी भी कहते रहे हैं कि 'सब का साथ, सब का विकास'। परन्तु जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है कि लोग तो दर-दर धक्के खा रहे हैं, परन्तु यदि रियायत मिली है तो पूंजीपतियों को ही मिली है। यह हमारे कहने की ही बात नहीं है, बल्कि भाजपा के अध्यक्ष अमित शाह ने लोगों को 'अच्छे दिन आने वाले हैं' वाली बात को केवल राजनीतिक लिफाफेबाजी (जुमला) ही कहा है और अब देख लो, ये कहीं पर भी लोगों को आर्थिक रियायतें देने की बात नहीं करते। आप स्वयं ही सोच लें कि क्यों? क्योंकि इनका गुप्त एजेण्डा ही और था जोकि अब सबके सामने आ रहा है। वह क्या था? वह था देश को साम्प्रदायिक आधार पर बांटते हुए अल्पसंख्यकों के मन में आतंक का वातावरण उत्पन्न करते हुए उन द्वारा ऐलाने गए प्रत्येक आदेश को सिर सिर झुका कर मानने वाला माहौल बनाने के लिए थोड़े-बहुत

जनतांत्रिक अधिकारों को भी समाप्त करते हुए यहां पर लोगों के मन में आतंक का माहौल पैदा करने के लिए बात तो हिन्दू राष्ट्र स्थापित करने की करते जाना परन्तुं नीतियां पूंजीपतियों के हित में लागू करते जाना।

इस प्रकार की रणनीति के अधीन ही दादरी में पहले तो मंदिर में से स्पीकर द्वारा एनाऊंसमेंट करवाई गई। एनाऊंसमेंट कोई भजन-बंदगी करने के लिए एकत्र होने की नहीं, बल्कि यह कि मोहमद अखलाक के घर में गाय का मांस बनाया गया है। कहने से तात्पर्य यह है कि लोगों की धार्मिक भावनाओं को भड़का कर साम्प्रदायिक रंग देने की एनाऊंसमेंट करवाई गई। फिर लोगों की भावनाओं को भड़काकर मोहम्मद अखलाक की हत्या करवाई गई। बाद में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कई दिनों तक चुप्पी धारण किए रखी। फिर बिहार में जाकर चालू सी जुबान के साथ इस घटना को दुखदायी कहकर काम चला दिया। उसके पश्चात् भाजपा मोहम्मद अखलाक के कातिलों पर से न केवल हत्या का केस वापिस लेने की मांग कर रही है बल्कि पीड़ित मुस्लिम परिवार पर गोहत्या का मुकद्दमा दर्ज करने की मांग भी कर रही है। इसी प्रकार हिमाचल प्रदेश में एक ट्रक चालक को यह कहकर मार दिया गया कि वे गायों को बुचड़खाने में ले जा रहे थे। उसकी हत्या करने के पश्चात् विश्व हिन्दू परिषद कह रही है कि सरकार ट्रक चालक को मारने वालों के खिलाफ मुकद्दमा दर्ज करके उन्हें व्यर्थ में परेशान कर रही है, वे तो गौरक्षक थे। यदि ये हिन्दुत्वी गोहत्या का विरोध करते हैं तो फिर इन्हें केंद्र सरकार के सामने मांग रखनी चाहिए कि सभी प्रांतों में गाय को बेचने पर प्रतिबंध लगाया जाए। जब इस प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं है तो गायों को खरीदने वालों को मार देना किस प्रकार से जायज है? वैसे यदि यह प्रतिबंध लगा भी हो तो भी गौरक्षकों को कानूनी प्रक्रिया अपनानी चाहिए न कि स्वयं ही जज बनकर मृत्युदंड का फैसला सुनाना। जल्लाद बनकर किसी व्यक्ति को मौत के घाट उतार देना कैसे वाजिब ठहराया जा सकता है? अतः अल्पसंख्यकों को मार कर उनके मनों के अंदर दहशत बैठाने की बात स्पष्ट रूप से सामने आ रही है।

अभी हाल ही में अखबारी रिपोर्टें आई हैं कि भाजपा के अध्यक्ष अमित शाह ने अपनी पार्टी के दो-चार नेताओं को डांट पिलाई है कि वे बयान देने से पूर्व अपनी ऊपर वाली लीडरशिप से बात कर लिया करें। इनमें हरियाणा का मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, संजीव बलियान, साक्षी महाराज, संगीत सोम, महेश शर्मा शामिल हैं। कमाल की बात यह देखो कि इनको डांटा तो गया है परन्तु इन पर कार्रवाई कोई नहीं की गई। डांट-डपट भी यह कहते हुए की गई है कि वे हिदुत्व संबंधी बयान देते हुए समय का ध्यान रख लिया करें। यह क्यों कहा? क्योंकि हरियाणा के मुख्यमंत्री खट्टर ने बयान दिया था कि 'मुस्लिम इस देश में रह तो सकते हैं, परन्तु उन्हें बीफ खाना छोड़ना होगा।' उधर बिहार प्रांत में चुनाव होने थे। इस बयान से भाजपा को मुस्लिम वोटों का घाटा पड़ता था। बस, इस कारण से ही इन द्वारा दिए जाते भड़काऊ बयान को अनुचित नहीं कहा, बल्कि इतनी ही बात कही है कि वे ऐसे बयान समय को ध्यान में रखकर ही दिया करें।

चूंकि इन साम्प्रदायिक तत्वों द्वारा अपनी साम्प्रदायिक नीति एवं उसके अनुसार किए जाते कर्मो का संवेदनशील व्यक्तियों द्वारा विरोध करना जारी था एवं जारी है, परन्तु ऐसे तत्व विरोध को बर्दाश्त नहीं कर सकते। क्योंकि फासीवाद का प्रकट रूप में लक्षण यह होता है कि ऊपर से आया हुआ प्रत्येक आदेश सिर-माथे कबूल करो। जैसे कि डा. नरेन्द्र दाभोलकर ने अंधविश्वासों के विरुद्ध संघर्ष का झंडा उठाया तो उसकी हत्या कर दी गई। इसी प्रकार गोबिन्द पनसारे की हत्या कर दी गई। अभी हाल ही में एम.एम. कलबुर्गी की हत्या भी करवा दी गई। कलबुर्गी लिंगायत सम्प्रदाय के लोगों को कन्नड़ के संत कवि बस्वना की शिक्षाओं को मानने के लिए प्रेरित करता था तथा मूर्ति-पूजा एवं अन्य धार्मिक अंधविश्वासों का विरोध करता था। इन्हीं कारणों से बजरंग दल जैसे हिन्दुत्वी संगठन उनके शत्रु बन गए। इनके मन में यह डर था कि यदि लिंगायत हिस्सा उनकी हिन्दू आस्था को मानना छोड़ जाता है तो कनार्टक में से भाजपाइयों से एक बड़ा वोट बैंक छिन सकता है। उधर फिल्म एवं टेलीविजन इंस्टीच्यूट की बात ले लो। गजेन्द्र चौहान को इस संस्था का

अध्यक्ष थोप दिया गया है। बात यह नहीं कि सरकार के पास संस्थाओं के अध्यक्ष लगाने का अधिकार नहीं है। अधिकार तो है परन्तु लगाया तो केवल उसी को ही जा सकता है जो उस पदवी के योग्य हो। गजेन्द्र चौहान के पास कोई भी ऐसी योग्यता नहीं सिवाए इसके कि उसने महाभारत सीरियल में युधिष्ठर का रोल निभाया था। इस इंडस्ट्री के विद्यार्थियों एवं अन्य कलाकारों के द्वारा इसका विरोध जारी है, परन्तु केंद्र के कान पर कोई जूं नहीं सरकी। मोदी साहिब मौन हैं!

यह तो हैं उन द्वारा साम्प्रदायिक ज़हर फैलाने के कुछ उदाहरण। अब पूंजीपतियों को रियायतें देने वाली बात भी कर लो। मोदी जी विदेशी दौरों में व्यस्त ही रहते हैं। वहां पर जाकर पूंजीपतियों को विश्वास दिलाते हैं कि वे भारत में पूंजी लगाएं एवं कमाई करें भारत सरकार हर सुविधा प्रदान करेगी। टैक्सों में भी व श्रम कानूनों में संशोधन कर के भी, जोकि श्रमिकों का थोड़ा-बहुत कल्याण कर सकते हों। इन कानूनों को इस प्रकार से संशोधित करेगी कि कोई श्रमिक पूंजीपति के लिए बिल्कुल भी सिरदर्दी न बन सके। उद्योगपतियों के लिए औद्योगिक कॉरीडोर बनेगा, वहां पर केवल उद्योग ही उद्योग होंगे, कृषि को उजाड़ दिया जाएगा। इस प्रकार के एक औद्योगिक कॉरीडोर में 18 करोड़ लोगों के उजड़ जाने का अनुमान है एवं इनके पुनर्वास का भी कोई प्रबंध नहीं है। ये उजड़े हुए लोग युद्ध द्वारा उजाड़े हुए लोगों की भांति दर-दर भटकते फिरेंगे। अरूंधती राय लिखती हैं कि इन्हें उजाड़ने के लिए सरकार सेना का प्रयोग भी कर सकती है। इसी प्रकार से पूंजीपतियों को रियायतों देने की श्रृंखला बहुत लंबी है।

अतः सरकार की और खासतौर पर भाजपा की साम्प्रदायिक नीति के द्वारा दहशत फैला कर वास्तव में पूंजीपतियों की हितैषी नीतियों का विरोध होना स्वाभाविक भी है एवं उचित भी। परन्तु क्योंकि ये प्रत्येक विरोध को कुचल देने की नीति अपना रहे हैं, इसलिए लेखकों एवं अन्य बुद्धिजीवियों को अपनी बात कहने पर ही सरेआम कत्ल कर एवं करवा दिया जाएगा। इस प्रकार ऐसे दमघोटू माहौल में विचार बनाने एवं प्रकट करने की आजादी ही खत्म हो जाती है। इस दमघोटू माहौल के चलते साहित्यकारों ने साहित्य अकादमी की बैठक बुलाने की बात रखी, परन्तु साहित्य अकादमी के अध्यक्ष ने इस बात को एक ही कुतर्क देकर ठुकरा दिया कि इस बैठक पर 15 लाख रुपए का खर्च आएगा। अतः यह बैठक नहीं बुलाई जा सकती। तात्पर्य यह कि लेखकों की स्वतंत्रता जाए तो जाए परन्तु वे 15 लाख रुपए खर्च नहीं कर सकते। जबकि हम प्रायः देखते हैं कि अकेले-अकेले नेता एवं मंत्री 15 लाख रुपए की राशि तो वैसे ही छोटी-छोटी बातों पर ही उड़ा देते हैं मोदी साहिब ने जो सूट एक बार पहना था, वह 10 लाख रुपए का था। अब इस साहित्य अकादमी का झंडा बदलने की बात भी ले आए हैं। पहले वाले झंडे में ऊपर वाले हिस्से में गेरूआ रंग बीच में सफेद रंग एवं धर्म चक्र है तथा नीचे हरा रंग है जोकि उपजाऊपन, वृद्धि एवं शुभकामना को प्रकट करता है। परन्तु अब एकमात्र रंग भगवा बना कर झंडे को ही बदल देने की बात कर रहे हैं। यद्यपि यह साहित्य अकादमी एक स्वायत संस्था है परन्तु इस स्वायतता की सांस्कृतिक मामलों का मंत्री धज्जियां उड़ा देता है। जब वह कहता है कि 'हम सार्वजनिक वार्तालाप मे ंसे प्रत्येक उस विचार का सफाया कर देंगे, जिसका पश्चिमीकरण किया हुआ है तथा जहां पर भारतीय (वास्तव में हिन्दुत्वी-अनुवादक) संस्कृति एवं सभ्यता को पुनःबहाल करने की आवश्यकता है। चाहे वह इतिहास हो अथवा सांस्कृतिक विरासत अथवा हमारी संस्थाएं हों, जोकि लंबे समय से भ्रष्ट की हुई हैं।' यह बात इन हिन्दुत्व वादियों के फासीवादी मनसूबों को सामने ले आती हैं कि हिन्दुत्वी संस्कृति एवं अन्य सार्वजनिक वार्तालाप में अन्य सभी प्रकार का सफाया कर देना।

इसलिए साहित्यकारों द्वारा सम्मान एवं पुरस्कार वापिस करते हुए ऐसे फासिवादी हमलों का विरोध करना एक शुभ, दिलेराना एवं नेतृत्वकारी कदम है। इस प्रतिक्रम का सहयोग करना एवं इन हमलों का अन्य सभी तपकों को भी विरोध करने हेतु आगे आने की समय की मांग है अन्यथा काला एवं खूंखार दौर देखना पड़ेगा।

-हिन्दी अनुवाद

बलवंत सिंह लैक्चरार

देवता–गण

कर्नल इंगरसोल

हर जाति ने किसी न किसी देव को जन्म दिया है। वह देव बहुत कुछ अपने जन्मदाताओं के अनुरूप ही रहा है। जिसे उस जाति के लोग घृणा करते उन्हें वह देव भी घृणा करता और जिसे वे प्रेम करते, उन्हें वह देव भी प्रेम करता। वह सदैव विजयी पक्ष की ओर ही रहा है-स्वजाति के अतिरिक्त शेष सभी से घृणा करने वाला।

सभी देवता-गण स्तुति, प्रार्थना और पूजा के आग्रही रहे हैं। अधिकांश देवता-गण यज्ञों में प्रसन्न होते रहे हैं और निर्दोष रक्त से तो उन्हें मानों दिव्य सुगंधि आती रही है। इन तमाम देवताओं का यह आग्रह रहा है कि उनके बहुत से पुरोहित हों और पुरोहितों का आग्रह रहा है कि जनता उनका पालन पोषण करे और इन पुरोहितों का सबसे बड़ा काम यही रहा है कि वे अपने-अपने देवता की महिमा गाते रहें और कहते रहें कि उनका देवता दूसरे सब देवताओं को एक साथ हरा सकता है।

इन देवताओं की रचना बेहिसाब तरह की हुई है और एक से एक बढ़कर भद्दी शक्ल की। किसी के हजार हाथ हैं और किसी के सौ सिर हैं, किसी के गले में जीवित सांपों की माला है, किसी के हाथ में मुगदर है, किसी के हाथ में ढाल-तलवार है, किसी के पर हैं, कोई दिखाई ही नहीं देता, कोई एकदम नग्न है, किसी की केवल पीठ ही पीठ दिखाई देती है। कुछ बड़े इर्ष्यालु, तो कुछ बड़े ही मूर्ख, कुछ कभी-कभी आदमी बन गए हैं, तो कुछ हंस, कुछ बैल और कुछ बतखें। कुछ सुंदर मानवी कन्याओं से प्रेम भी करते रहे हैं। कुछ विवाहित रहे हैं-सभी का रहना अच्छा था-कुछ अनंतकाल से अविवाहित ही माने जाते हैं। कुछ के बच्चे हुए हैं और वे बच्चे भी अपने माता-पिता की तरह पूजने लग गए हैं।

इन देवताओं में से अधिकांश देवता बड़े ही बदला लेने वाले जंगली, कामुक तथा अज्ञानी रहे हैं, क्योंकि उन बेचारों के ज्ञान प्राप्ति के साधन उनके पुरोहित ही थे। इसलिए हम उनके अज्ञान पर अधिक आश्चर्य नहीं कर सकते।

ये देवता-गण यदि सबसे अधिक किसी बात में प्रसन्न होते हैं तो वह है कि नास्तिकों की हत्या और आज भी यदि इन्हें सबसे अधिक क्रोध आता है-तो उस आदमी पर जो उनके अस्तित्व से ही इंकार करे।

कोई जाति इतनी दरिद्र नहीं रही है कि उसके पास एक ही आध देवता रहा हो। ये देवता इतनी आसानी से बनाए जा सकते थे और इनके बनाने में इतना कम खर्चा पड़ता था कि साधारणतयः देवता बाजार ठसाठस भरा रहा है और स्वर्ग में भीड़ लगी रही है।

जब कभी लोग इन देवताओं में किसी एक देवता की भी पूजा नहीं कर सके हैं अथवा उसके पुरोहितों को भोजन वस्त्र नहीं दे सके हैं (दोनों पर्यायवाची रहे हैं) तो उसने लोगों को प्रायः महामारी और अकाल से दंडित किया है। पुरोहित सदैव न केवल इन विपत्तियों की पूर्व सूचनाएं देकर अपना कर्त्तव्य निभाते रहे हैं, बल्कि जब ये विपत्तियां आन पड़ी हैं तब ये सिद्ध करने में प्रयत्नशील रहे हैं कि इनका एकमात्र कारण यही रहा है कि उन्हें पर्याप्त नहीं मिला।

जिस प्रकार जातियां भिन्न-भिन्न हैं, उसी प्रकार ये देवता भी। बड़ी और शक्तिशाली जातियों के देवता बड़े-बड़े और शक्तिशाली तथा छोटी और निर्बल जातियों के देवता भी छोटे और निर्बल। इनमें से प्रत्येक देवता अपने भक्तों को इस लोक तथा परलोक में सुखी रखने की आशा देता है और जो उसे एकदम न माने अथवा सर्वोपरि न माने तो उसे अनंत दंड का भय दिखाता है, किंतु किसी एक भी देवता को न मानना तो महान अपराध है।

आप मानवी रक्त से अपना हाथ रंग ले, किसी निर्दोष व्यक्ति के नाम को कलंकित कर दें, किसी हंसते हुए बालक का उसकी मां की गोद में ही गला घोंट दें, किसी सुंदरी को जो तुम्हें प्यार करती है और तुम्हारा विश्वास करती है, धोखा दे दें, घर घाट का न रहने दें, छोड़ कर चले जाए, तब भी तुम्हारे लिए आशा है। इस सबके लिए और इन सब अपराधों के लिए तुम क्षमा किए जा सकते हो, उस दिवालिया न्यायालय से तुम्हें मुक्ति मिल सकती है। किंतु यदि इन देवताओं के अस्तितव से इन्कार करो, तो वह मधु और करूणामय मूर्ति घृणा का अवतार बन जाती है।

हमारे पूर्वजों के पास न केवल देवता बनाने के कारखाने थे, किन्तु वे दानवों और राक्षसों का भी निर्माण करते थे। पतित देवता ही प्रायः दानव बनते थे। ये पिशाच मनुष्यों से सहानुभूति रखते थे। उनके बारे में एक बड़ी आश्चर्यकर बात यह है कि लगभग सभी सांप्रदायिक परम्पराओं में, सभी देव परम्पराओं में, सभी मजहबों में ये दानव देवताओं की अपेक्षा अधिक दयालू और मानवी गुणों से विभूषित रहे हैं।

कुछ जातियों ने दूसरी जातियों के देवताओं को अपना लिया। हमें स्वीकार करना पड़ता है कि हमारी जाति भी ऐसी ही एक जाति है। यहूदी लोग जब एक जाति न रहे तो उनके लिए उनके देवता का उपयोग नहीं रह गया। हमने उनके देवता और उनके शैतान दोनों को ही हथिया लिया।

मुझे इन देवताओं और शैतानों की कल्पनाओं के अस्तित्व में आने का कारण बहुत अस्पष्ट नहीं प्रतीत होता। वह सम्पूर्ण रूप से स्वाभाविक प्रक्रिया है। आदमी ने ही इन सबको पैदा किया है और समान परिस्थिति में वह फिर पैदा कर सकता है। न केवल आदमी ने इन देवताओं को पैदा ही किया है, किंतु उसने इन्हें अपने इर्द-गिर्द की सामग्री से ही पैदा किया है। उसने देवताओं को प्रायः अपने ही जैसा बनाया है-उसने उनके हाथ, सिर, पैर, आंखें, कान बनाए हैं और उन्हें वाणी दी है। प्रत्येक जाति ने अपने देवताओं और शैतानों से ही अपनी भाषा तो बुलवाई है, उसने उनके मुंह में इतिहास, भूगोल, ज्योतिष की-लगभग उन सब विषयों की जिनमें लोग गलतियां करते हैं, गलतियां भी रख दी हैं। कोई एक भी देवता ऐसा नहीं हुआ, जो अपनी निर्माता-जाति का पुरोगामी हुआ हो। नीग्रो लोगों के देवता काली चमड़ी और घुंघराले बालों वाले थे। मंगोलों के देवताओ का रंग पीला और आंखें बादाम की सी शक्ल की। यहूदी चित्र नहीं बना सकतेथे, यदि सकते तो हम देखते कि उनका जेहोवा लंबी दाढ़ी, लंबूतरे चेहरे और तोते की सी नाक वाला है। 'जेअस' पूर्णरूप से यूनानी था। 'जीवे' रोमन परिषद के किसी एक सदस्य के समान। मिश्र के देवताओं का चेहरा उन लोगों के चेहरों की तरह ही स्थिर और शांत था, जिन्होंने उन्हें बताया था। उत्तरी देशों के देवता उनके गर्म-गर्म कपड़ों से लदे थे और दूसरे कुछ देशों के नंगे। भारत के देवता हाथियों की सवारी करते थे और कुछ द्वीपों के देवता बड़े तैराक थे। उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव के देवता व्हेल मछली की चर्बी के बड़े ही शौकीन। लगभग सभी जातियों ने देवताओं की या तो मूर्तियां बनाई हैं या चित्र। नीचे के स्तर के लोगों ने उन्हें सचमुच के देवता मान लिया और इन्हीं देवताओं की वे प्रार्थनाएं करते रहे और इन्हीं को बलि चढ़ाते रहे।

कुछ देशों में आज भी यदि लंबी प्रार्थनाओं के बाद भी लोगों की इच्छाएं पूरी नहीं होतीं, तो वे उन देवताओं को 'नपुंसक' मान लेते हैं अथवा उनको बहुत भला बुरा कहते हुए उनका मुक्कों और गालियों से स्वागत करते हैं। वे कहते हैं, ''कब से हे कुत्ते के पिल्ले, तुझे इस शानदार मंदिर में बैठाया है, सोने से मढ़ा है, बढ़िया-बढ़िया भोजन खिलाए हैं, धूप बत्ती जलाई है, इतना सब करने पर भी तू इतना अकृतज्ञ है कि जो हम मांगते हैं वह नहीं देता।'' तब वे उस देवता को नीचे गिराकर गलियों की गंदगी में घसीटते हैं। इस बीच में यदि उनकी इच्छा पूरी हो जाए तो वे बड़े क्रिया कलाप के साथ उसे उठाकर ले जाते हैं और धो साफ करके फिर

मंदिर में प्रतिष्ठित करते हैं। वहां पहुंच कर वे उसके सामने लेट-लेट कर क्षमा याचना करते हैं। वे कहते हैं सच बात है हम जरा अधिक उतावले हो गए और तुमने भी इच्छा की पूर्ति में अधिक देर कर दी। तुमने यह मार क्यों खाई? लेकिन जो हो गया सो हो गया। अब हम उसकी बात न सोचें। यदि तुम बीती बात को भूल जाओगे तो हम तुम पर पहले से भी अधिक सोने का पानी चढ़ा देंगे।

आदमी को कभी देवताओं की कमी नहीं है। उसने लगभग हर चीज की पूजा की है-गंदे से गंदे पशुओं तक की। उसने आग की, पृथ्वी की, वायु की, जल की, प्रकाश की, तारागण की पूजा की है और शताब्दियों तक बड़े-बड़े सांपों के सामने दंडवत हुए हैं। जंगली लोग, कभी-कभी सभ्य लोगों से उन्हें जो चीजें मिलती रही, उन्हीं को देवता बना लेते रहे हैं। टोड लोग गऊ के गले में बांधने की घंटी को पूजते हैं और कोट लोग पूजते हैं दो तश्तरियों को जिनमें से वे एक को पति और दूसरे को पत्नी समझते हैं।

शारीरिक बल में पुरुष क्योंकि स्त्री से बड़ा-चढ़ा रहा है, इसलिए अधिकांश बड़े-बड़े देवता नर ही हुए हैं। यदि स्त्री पुरुष की अपेक्षा बलवान होती तो प्रकृति की अधिष्ठाता देवतागण स्त्रियां होतीं।

कोई बात इससे अधिक स्पष्ट नहीं हो सकती कि हर जाति के लोग अपने देवताओं को अपनी विशेषताओं से विभूषित कर देते हैं और हर व्यक्ति अपने देवता को अपनी विशेषताओं से।

अपने आसपास जो सुझा दे, उसके अतिरिक्त आदमी के न कोई विचार होते हैं न हो सकते हैं। जिस बात को उसने देखा नहीं, अनुभव किया नहीं, जो उससे सर्वथा भिन्न है, ऐसी किसी वस्तु की वह कल्पना नहीं कर सकता। जो कुछ उसने देखा है, अनुभव किया है, सुना है तथा जिसका अन्य इंद्रियों द्वारा ज्ञान प्राप्त किया है, उसमें वह अतिश्योक्ति कर सकता है। कभी कर सकता है, उन्हें मिला सकता है, पृथक बना सकता है, बदशक्ल बना सकता है, सुंदरत्तर बना सकता है, उत्तम बना सकता है, दो के चार बना सकता है और उनकी परस्पर तुलना कर सकता है, किन्तु वह कुछ भी नया उत्पन्न नहीं कर सकता। शक्ति के प्रदर्शन को देखकर वह किसी को सर्वशक्तिमान बना सकता है। जीवन को देखकर वह अमृतत्व की बात कर सकता है। समय के बारे में कुछ ज्ञान होने पर वह अनंत काल तक कह सकता है। चेतना का कुछ ज्ञान होने पर वह परमात्मा की बात कर सकता है। ईर्ष्या द्वेष को देखकर वह शैतान की बात सोच सकता है। उसके अंधकारपूर्ण जीवन में थोड़ी सी प्रसन्नता की किरणें दिखाई दे जाएं, तो वह स्वर्ग की बात कर सकता है। दुख दर्द के अनेक रूप देखकर वह नरक की बात कर सकता है।

इतना सब होने पर भी इन सारे विचारों का एक ही आधार है, केवल एक आधार। शेष आलीशान इमारत आदमी ने जो कुछ अपनी इंद्रियों द्वारा अनुभव किया है, उसी में अतिश्योक्ति करके, कमी करके, मिलाकर, पृथक करके, बद शक्ल बनाकर, सुंदरतर बनाकर, बढ़िया बनाकर और एक के चार करके खड़ी की है। यह ऐसा ही है जैसे हम एक शेर को बाज के पर लगा दे, घोड़े की पूंछ लगा दें और हाथी की लगा दें सूंड। हमने अपनी कल्पना से एक भयानक दैत्य की रचना कर ली, लेकिन तब भी इन दैत्य के सभी अंग वास्तव में विद्यमान हैं। मनुष्य निर्मित सभी देवताओं का यही हाल है।

प्रकृति से आगे आदमी विचार के क्षेत्र में भी नहीं जा सकता। उससे ऊपर उठ नहीं सकता, उससे नीचे गिर नहीं सकता। आदमी अपने अज्ञान में मान बैठा कि सारी प्रकृति किसी चेतन शक्ति से उत्पन्न है और उससे उसका सीधा संबंध है। इस चेतन शक्ति से मैत्री बनाए रखना सभी धर्मों का उद्देश्य रहा है और आज भी है। भय के मारे अथवा सहायता मांगने के लिए अथवा किसी ऐसे उपकार के बदले में (जिसे उसने माना कि उसका हुआ है।) कृतज्ञता प्रकट करने के हेतु उसने घुटते टेक कर प्रणाम किया है। जिसे वह समझ बैठा कि किसी

कारण क्रुद्ध हो गया है, उसने उसे प्रार्थनाओं द्वारा शांत करने का प्रयत्न किया है। विद्युत की चमक और कड़क ने उसे डरा दिया है। ज्वालामुखी पर्वतों के सामने उसे घुटने टेकने पड़े हैं। भयानक जानवरों द्वारा भरे हुए जंगलों ने अथाह गहराईयों में रेंगते हुए बड़े-बड़े अजगरों ने, अनत सागर ने, चमकते हुए तारागण ने, भयानक सूर्य ग्रहणों तथा चंद्र ग्रहणों ने और सबसे बढ़कर सदैव सिर पर सवार रहने वाली मृत्यु ने आदमी को यह विश्वास दिला दिया कि वह तो अदृश्य किंतु दुष्ट शक्तियों के हाथ का खिलौना भर है। विचित्र और भयानक बीमारियों ने, ज्वर की सर्दी-गर्मी ने, पागलपन के दौरों ने, अचानक अर्धांग के आक्रमणों ने, रात्रि के अंधकार ने तथा उसके दिमाग में भरे हुए स्वपनों ने उसे विश्वास दिला दिया कि उसके पीछे अनंत भूत प्रेत लगे रहते हैं। किन्हीं कारणों से उसने मान लिया कि ये सब प्रेत समान रूप से शक्तिशाली नहीं हैं और सभी बुरे भी नहीं हैं और जो बड़े हैं वे छोटों पर अधिकार रखते हैं। इसलिए उसने समझा कि उसका अस्तित्व तभी तक सुरक्षित है जब तक वह अधिक शक्तिशाली प्रेतों का कृपापात्र बना रहे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने प्रार्थनाओं, स्तुतियों, पूजा तथा बलिदान का आश्रय दिया। मनुष्य की जंगली अवस्था ने प्रायः ये ही विचार सर्वव्यापक रहे हैं।

युगों तक सभी जातियों के लोग यही मानते रहे हैं कि रोगी और पागल मनुष्य भूत प्रेतों से अभिभूत होता है। सहस्त्रों वर्ष तक इन भूत प्रेतों को डराकर भगा देना ही एकमात्र चिकित्सा रही है। पुरोहित लोग प्रायः बहुत ही बेमेल और जोर-जोर से चिल्लाते रहे हैं। वे सींगों से नाद करेंगे, ढोल पीटेंगे, झांझ बजाएंगे और अत्यंत भयानक मंत्रों को जोर से चिल्लाएंगे। यदि वह चिल्लाहट चिकित्सा असफल रही, तब वह किसी अधिक शक्तिशाली प्रेत की मदद मांगेंगे।

इन प्रेतात्माओं को शांत रखना बड़े ही महत्व की बात समझी जाती रही है। गरीब मनुष्य ने जब वह बर्बर अवस्था में था, यह समझ कर कि किसी चीज की भेंट देने से आदमियों के दिल कोमल पड़ जाते हैं, अपनी सबसे प्रिय वस्तुएं इन प्रेतों को भेंट की। उसने अपने प्रिय पुत्र का रक्त तक इन्हें चढ़ा दिया है, भले ही उसका हृदय फट जाए। वह अपने से भिन्न किसी तरह के देवता की कल्पना ही न कर सकता था, इसलिए उसने स्वाभाविक तौर पर यही समझा कि इतने बड़े दुख और शोक के यह आकाश के प्राणी कुछ न कुछ तो अवश्य ही प्रभावित होंगे।

उस समय बर्बर मनुष्य की यही हालत थी जो अब सभ्य मनुष्य की है- एक वर्ग दूसरे वर्ग के भयों पर जीता था और उनसे व्यापार चलाता था। कुछ लोगों ने अपने जिम्मे यह काम ले लिया कि वे देवताओं को शांत रखेंगे और साथ ही मनुष्यों को यह बताएंगे कि इन अदृश्य शक्तियों के प्रति उनका क्या कर्त्तव्य है। यही पुरोहित जाति की उत्पत्ति का आरंभ है। पुरोहित ने अपने बारे में बताया कि वह देवता के क्रोध से असहाय मनुष्य की रक्षा करने वाला है। वह स्वर्ग की अदालत में आदमी का वकील है। वह अदृश्य लोक में अमन के झंडे के साथ प्रोटैस्ट और प्रार्थना लेकर पहुंचा और वहां से लौटा तो अपने साथ आज्ञा, अधिकार और शक्ति लाया। आदमी ने अपने ही नौकर-पुरोहित के सामने घुटने टेक दिए और पुरोहित ने भी रोब दाब कर (लाभ उठाकर) जो उसके और देवताओं के काल्पनिक संबंध के कारण उसका आदमियों के दिलों पर बैठ गया था और अपने ही भाइयों को रेंगने वाला, ढोंगी और गुलाम बना डाला।

पुराने समय में सभी को प्रेतों का अस्तित्व स्वीकृत था। लोगों को इसमें कुछ संदेह न था। इस विश्वास से स्वाभाविक तौर पर यह बात पैदा हुई कि प्रेतों को दबाने के लिए मनुष्य को या तो स्वयं देवता बनना होगा या फिर किसी देवता की सहायता लेनी होगी। धर्मों के सभी संस्थापकों ने प्रेतों को अपने वशीभूत करके तथा प्रकृति के नियमों को रोक कर अपनी दैवी उत्पत्ति को सिद्ध किया है। भूत प्रेतों को निकाल सकना दैवी होने का प्रमाण पत्र था। यदि

कोई पैगम्बर प्रेतों को अभिभूत न कर सकता था। तो वह अच्छी नजर से न देखा जाता था। ऊंची से ऊंची श्रेष्ठतम भावनाओं की सूक्तियों और निष्कलंक जीवन का कोई मूल्य न था, यदि उसके साथ आश्चर्यकर बातें दिखाने तथा प्रेतों को अभिभूत करने की शक्ति न हो।

यहां अच्छी और बुरी शक्तियों में जो विश्वास पैदा हुआ है। उसका कारण है अच्छी और बुरी परिस्थिति, जो स्थिति आदमी को अच्छी लगी, उसका कारण अच्छी शक्ति समझी गई। यह मान लिया गया कि सारी परिस्थितियों के कारण अच्छे या बुरे प्रेत हैं और प्रेतों को अच्छी या बुरी परिस्थिति के हिसाब से अच्छा या बुरा माना जाने लगा। इस प्रकार दैत्य की कल्पना भी देवता की कल्पना के समान ही सर्वव्यापक बन गई।

बहुत से लेखकों का ख्याल है कि जो विचार सर्वव्यापक हैं, वे सत्य होने ही चाहिएं, क्योंकि सभी सर्वव्यापक विचार भीतर से उत्पन्न होते हैं, वे असत्य हो ही नहीं सकते। यदि किसी विचार का सर्वव्यापी होना ही उसके भीतर से उत्पन्न होने का प्रमाण है और यदि किसी विचार का भीतर से उत्पन्न होना ही उसके सत्य होने का प्रमाण है, तो जो लोग भीतर से उत्पन्न होने वाले विचारों में विश्वास करते हैं, उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि प्रकृति के ऊपर किसी देवता के अस्तित्व का प्रमाण। इसलिए किसी शैतान का अस्तित्व भी उतना ही स्वयंसिद्ध है, जितना किसी देवता का। सच्ची बात यह है कि भली परिस्थिति से देवता की कल्पना की गई है और बुरी परिस्थिति से शैतान की और यह मान लेना कि शैतान हमारी प्रसन्नता का कारण होगा, उतना ही स्वाभाविक तथा तर्कानुकूल है, जितना यह मान लेना कि देवता हमारी विपत्ति का। इसलिए यदि कोई महान चेतना शक्ति इस सारी परिस्थिति का निकट कारण है, तो यह निर्णय करना कठिन है कि वह शक्ति मानव की मित्र है या शत्रु। यदि सारी परिस्थिति अच्छी होती तो हम कह सकते थे कि उसकी उत्पत्ति किसी सम्पूर्ण कल्याणकारी अस्तित्व से हुई है। यदि वह बुरी ही बुरी होती तो हम कह सकते थे कि उसकी उत्पत्ति किसी सर्वथा अकल्याणकारी अस्तित्व से हुई है। लेकिन आदमी की परिस्थिति अच्छी और बुरी दोनों होती है, आदमी पर उसका अच्छा और बुरा दोनों तरह का प्रभाव पड़ता है, इससे यह सिद्ध होता है कि उसका कारण भिन्न और परस्पर विरोधी शक्तियां होंगी, या कोई ऐसी एक शक्ति जो कभी दया से अभिभूत हो उठती है, कभी ईर्ष्या से या वे सभी यों ही पैदा होती हैं और इससे उनका कोई संबंध नहीं कि आदमी पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है।

सभी घटनाएं किसी न किसी अच्छी-बुरी दैवी शक्ति के हस्तक्षेप का परिणाम हैं-यह मूर्खों का सिद्धांत लगभग सर्वव्यापक रहा है और आज भी है। अधिकांश लोग किसी न किसी ऐसी दैवी शक्ति में विश्वास करते हैं जो प्राकृतिक घटनाओं के क्रम में परिवर्तन कर सकती है। यह लगभग सभी के प्रार्थना करने से सिद्ध होता है। इस क्षण भी हजारों आदमी किसी न किसी काल्पनिक शक्ति के आगे हाथ फैला रहे होंगे कि वह उनका पक्ष ले। कुछ स्वास्थ्य चाहते हैं, कुछ चाहते हैं कि उनके प्रिय दूर स्थित व्यक्ति सुरक्षित रहें, कुछ धन चाहते हैं, कुछ वर्षा चाहते हैं। कुछ रोग निवृति चाहते हैं, कुछ भोजन की याचना करते हैं, कुछ अधिक बुद्धि चाहते हैं और कुछ कभी-कभी भगवान को वही कुछ करने को कह देते हैं जो वह अच्छा समझता हो। इन सभी प्रार्थनाओं का आधार वह विश्वास है कि कोई एक शक्ति प्राकृतिक घटनाओं के क्रम को न केवल बदल सकती है, किंतु बहुत करके बदलेगी ही।

......क्रमश

(लेखक की पुस्तक 'स्वतंत्रा चिंतन' में से)

अनमोल वचन

वे घोर अंधेरे में उस चीज को ढूंढ रहै हैं जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है

-डेजिडीरियस इरास्मस (1466-1536 ई.)

दीर्घायु भोगने का रहस्य

–सुरजीत सिंह ढिल्लों
0175–2214547

दीर्घायु का अर्थ जाने बगैर हम परस्पर एक–दूसरे को लंबी आयु भोगने का आशीर्वाद देने के आदी हैं। आशीर्वाद स्वीकार करके कुछेक के मन में इस अनुभव का उठना भी स्वाभाविक है : –

'ज़िंदगी की दुआ न दे ए ज़ालिम,
यह ज़िंदगी किस को रास आई है।'

जब हमने होश संभाला और सोचना विचारना आरंभ किया, तब लंबी आयु व्यतीत करने की कामना भी हमारे मन में जागृत हुई। आज इसी स्वपन को साकार करने के यत्न सभी कर रहे हैं। किसी भी लक्ष्य की पूर्ति के लिए इससे संबंधित सब कुछ के प्रति ज्ञानवान होने की आवश्यकता होती है। इसलिए यह जानना जरूरी है कि आयु यदि अल्प व्यतीत होती है तो क्यों और यदि यह लंबी व्यतीत होती है तो क्यों तथा क्यों हम अन्य प्राणियों के मुकाबले में लंबी आयु व्यतीत कर रहे हैं? ऐसा क्यों तथा इस प्रकार भी क्योंकि हम में से कुछ लोग अपने साथियों से अधिक समय इस संसार से विदा होने के लिए ले रहे हैं?

हम अन्य प्राणियों जैसे ही प्राणी हैं। शारीरिक रूप में भी एवं क्रियाशीलता के रूप में भी। यदि ऐसा है तथा उन जैसी प्राकृतिक प्रवृतियों के हम भी स्वामी हैं, तो फिर आयु के प्रसंग में हमारा अनोखापन क्यों? यह अनोखापन और भी रहस्यमयी लगता है, जब हम अन्य प्राणियों के मुकाबले में अपनी परिस्थिति का जायज़ा लेते हैं। अन्य प्राणियों के मुकाबले में हमारा, किसी भी प्रकार के बचाव साधन के बगैर दुर्बल शरीर है, जोकि प्राकृतिक आपदाओं की मार झेलने के योग्य भी नहीं। हम न तो चीते–बिल्ली की भांति तेज तर्रार हैं तथा न ही हिरण की भांति तीव्र गति से दौड़ सकते हैं। तैराक भी हम मछली से निम्न स्तर के हैं तथा गैंडे, हाथी की भांति हम बलवान भी नहीं हैं। फिर भी, इन सभी प्राणियों के मुकाबले में सफल जीवन व्यतीत कर रहे हैं तथा इन सभी पर हावी होकर हम जीवन व्यतीत कर रहे हैं तथा लगभग इन सभी से अधिक लंबी आयु भी व्यतीत कर रहे हैं। लगभग इसलिए, क्योंकि प्राणियों में से कछुआ सभी से अधिक लंबी आयु व्यतीत करता है, जोकि 200 वर्षो के लगभग होती है।

सन् 1832 में ग्लापेग्स टापुओं में, जिन कछुओं के साथ डार्विन की पहचान हुई थी, उनमें से एक–दो अभी भी जीवित हैं। अन्य प्राणी, आयु के प्रसंग में हमारे मुकाबले में नहीं है। कुछ वृक्ष हैं, जोकि सदियों तक हरे–भरे रहते हैं। इनकी दीर्घायु का रहस्य इनका स्थायित्व है तथा इनके जीवन का आधार बनती गतिविधियों की धीमी गति है। कुछओं के लंबी आयु व्यतीत करने का भी यद्यपि यही कारण है। चलते हुए भी ये ऐसे लगते हैं जैसे कि रुके हुए हों और चलने की तैयारी कर रहे हों। कछुए का दिल भी एक मिनट में चार–पांच बार धड़कता है तथा यही दशा शरीर के अंदर की अन्य गतिविधियों की भी है। हम ही ऐसे प्राणी हैं, जो कि अत्यंत व्यस्त जीवन व्यतीत करते हुए भी, शताब्दी पूर्ण करें अथवा नहीं, परन्तु शताब्दी पूर्ण करने के योग्य हैं।

हम रोओं के साथ ढके हुए शरीर वाले दुधारु पशुओं में से हैं, जिनकी आयु का सीधा संबंध शरीर के आकार के साथ है। जितना बड़ा पशु– प्राणी का आकार, उतनी लंबी आयु यह भोगने के योग्य है। पशुओं में से सबसे छोटा आकार श्रीऊ (अफ्रीकी देश

मैडागास्कर में पाया जाने वाला प्राणी) का है। छछून्दर जैसा जीवन व्यतीत कर रहे इस जानवर की एक वर्ष से कुछ महीने ऊपर की आयु है। शरीर के आकार में इससे बड़ी चूहिया का चार -पांच वर्ष का जीवन काल है, जबकि खरगोश का 15 वर्ष का, कुत्ते का 18 वर्ष का तथा जंगली सूअर का 20 वर्षो का जीवन काल है। उधर घोड़ा 40 वर्ष तथा हाथी लगभग 60 वर्ष पूर्ण करके मृत्यु को प्राप्त होते हैं। स्पष्ट है कि ये प्राणी, अपने-अपने शारीरिक आकार के अनुकूल आयु भोगते हैं।

दिल की धड़कन का संबंध भी आयु के साथ है, परन्तु आकार की भांति यह सीधा संबंध नहीं, विपरीत संबंध है। जितना तीव्र गति के साथ प्राणी का दिल धड़कता है, उतने ही कम समय के लिए दिल का स्वामी प्राणी जीवित रहता है। श्रीऊ का दिल प्रति मिनट 1000 बार धड़कता है, उतनी बार धड़कने के लिए हाथी का दिल 49 दिनों का समय ले लेता है। दिल के बारे में मोटा सा अनुमान है कि एक अरब बार धड़क लेने के उपरांत यह कार्यमुक्त होकर धड़कना बंद कर देता है और प्राणी की मृत्यु हो जाती है।

अन्य प्राणियों में दिल की धड़कन के एवं शारीरिक आकार के आयु के उल्टे अथवा सीधे संबंध होने के बारे में अनुमान हैं, परन्तु मानव के दर पर आ कर ये ठहर जाते हैं। हमारा दिल प्रति मिनट 72 बार धड़कता है। इस हिसाब के अनुसार 70 वर्ष की आयु पार कर चुके व्यक्ति का दिल ढाई अरब बार धड़क चुका होता है, अनुमान से अढ़ाई गुणा अधिक बार। हमारी जनसंख्या में 70 वर्ष की आयु बिता चुके व्यक्ति अनगिनत हैं, जिनमें से कुछ चुनिंदा लोग अभी 20 अथवा 30 वर्ष अभी और अपनी आयु में जोड़ सकते हैं। 100 वर्ष की आयु बिता चुके व्यक्ति का दिल तो पौने चार अरब बार धड़क चुका होता है। उधर शारीरिक आकार के आयु के साथ संबंध के प्रसंग का अनुमान का उल्लंघन भी हम कर रहे हैं। हम घोड़े से छोटे हैं और हाथी के पास खड़े तो हम तुच्छ दिखाई देते हैं। फिर भी इनसे अधिक आयु हम भोग रहे हैं। अन्य प्राणियों पर लागू हो रहे ये अनुमान हमारे ऊपर लागू क्यों नहीं हो रहे?

हम एवं अन्य सभी प्राणी कोशिकाओं द्वारा निर्मित हैं, जोकि शरीर के अंदर परस्पर इस प्रकार मिली हुई हैं, जिस प्रकार किसी इमारत में ईंटें होती हैं। सभी कोशिकाओं की बनावट का एक आधार है तथा एक प्राणी की समस्त कोशिकाएं, एकमात्र प्रारंभिक कोशिका की संतान होती हैं, जिससे उस प्राणी के जीवन का आरंभ हुआ होता है तथा जो नर के शुक्राणु के, मादा के अण्डाशय में समा जाने के उपरांत अस्तित्व में आया होता है। प्राणी शरीर की प्रत्येक कोशिका के हिस्से में, जीनों के रूप में वह जानकारी आई होती है, जोकि प्रारंभिक कोशिका को नर एवं मादा, अपनी-अपनी प्रजनन कोशिकाओं के द्वारा सौंपी होती है। इसी मिली-जुली जानकारी के अनुकूल प्राणी के शरीर का निर्माण होता है तथा इसके जीवन का आधार बनती क्रियाएं पूर्ण होती रहती हैं।

शरीर की शुरू हुई प्रगति के दौरान, प्रारंभिक कोशिका लगातार बार-बार बंट रही होती है, जिसके फलस्वरूप कोशिकाएं उपज अंगों एवं प्रणालियों में योजनाबद्ध होते रहते हैं, टांगों में, बाजुओं में, दिल में, दिमाग में, गुर्दों में, फेफड़ों में एवं अस्थिपिंजर इत्यादि में। इन अंगों के द्वारा निभाई जा रही भूमिकाओं सामूहिक प्रकटावा ही प्राणी के जीवन का आधार होता है। शरीर के अंदर भिन्न-भिन्न क्रियाएं निभा रहे अंगों एवं प्रणालियों के मध्य में सहयोग का बना रहना आवश्यक है तथा जब तक यह बना रहता है, प्राणी जीवन का आनंद लेता रहता है। शारीरिक अंगों एवं प्रणालियों के दरम्यान सहयोगी संतुलन को बनाए रखने के लिए दिमाग जिम्मेवार होता है। अंगों प्रणालियों के दरम्यान सहयोग जब भंग हो जाता है, तब प्राणी की मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार आयु का दिमाग के साथ भी संबंध है, दिल एवं आकार से अधिक गहरा संबंध।

शेष पृष्ठ 16 पर.....

मानव-अधिकारों का उल्लंघन सरकारी आतंकवाद ही है!

-सुमीत सिंह
09779230133

अंग्रेजों द्वारा भारत पर कब्जा करने के बाद सबसे पहले ये तानाशाही नीति लागू की गई कि देश में ऐसे सख्त कानून लागू किए जाएं ताकि लोग हुकूमत के खिलाफ किसी भी तरह की बगावत या विरोध करने की हिम्मत न दिखा सकें। इसीलिए देश की जनता को हर तरह के जुल्म से दबाने के लिए अंग्रेजों द्वारा इंडियन पीनल कोड, क्रिमिनल प्रोसीजर कोड और पुलिस एक्ट 1861 के साथ-साथ नजरबंदी कानून जैसे और भी कई काले कानून लागू किए गए, जिनके तहत हुकूमत द्वारा ज्यादा संवैधानिक शक्तियां प्राप्त की गई। अंग्रेज हुकूमत द्वारा 8 अप्रैल 1929 को मानव अधिकारों का उल्लंघन करते दो काले कानून ट्रेड डिस्पयूट बिल और पब्लिक सेफ्टी बिल दिल्ली असेंबली में पेश किए गए, जिनका शहीद भगत सिंह और बीके दत्त द्वारा धुएं वाले बम फैंक कर सख्त विरोध किया गया। यही कारण था कि अंग्रेजों द्वारा ऐसे ही काले कानूनों की वजह से भारतवर्ष पर दो सौ साल राज्य किया गया।

बहुत शर्म की बात है कि आजादी के बाद भी भारत सरकार द्वारा देश की जनता को गुलाम बनाने के लिए ऐसे सभी काले कानूनों को हूबहू लागू किया गया। केंद्रीय सत्ता पर काबज सरकारों द्वारा लागू की जा रही जनता विरोधी नीतियों और मानवीय अधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ उठ रही जनता की लहरों को दबाने के लिए सरकारों द्वारा समय-समय पर एस्मा, राष्ट्रीय सुरक्षा एक्ट, मीसा, टाडा, पोटा, अफसपा, मकोका और गैर कानूनी गतिविधियां रोकू कानून जैसे खतरनाक कानून लागू किए गए हैं, जो नागरिकों के जनतांत्रिक अधिकारों को खत्म कर रहे हैं और सिर्फ मुनाफाखोर कार्पोरेट जगत के पक्ष में भुगत रहे हैं।

हमारी केंद्र और राज्य सरकारों का निंदनीय पक्ष यह है कि छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखंड, बिहार, आंध्रप्रदेश, पश्चिमी बंगाल और महाराष्ट्र के जंगलों और पहाड़ों के कुदरती खजानों को देश-विदेश के कार्पोरेट परिवारों और कम्पनियों को सस्ते दामों में बेच कर लुटाया जा रहा है और आदिवासी और कबाईली लोगों को उजड़ने और भूखे मरने पर मजबूर किया जा रहा है। अगर कोई मानव अधिकार संगठन सरकारों के इस शोषण के खिलाफ और दलितों-आदिवासियों के पक्ष में आवाज उठाता है तो उसे माओवादी और देशद्रोही कहकर झूठे केसों में फंसाया जाता है। पीयूसीएल के प्रधान डा. विनायक सेन को इन्हीं झूठे आरोपों के कारण देशद्रोह के झूठे केस में तीन साल नाजायज जेल में रहना पड़ा था। माओवाद को खत्म करने की आड़ में अब तक हजारों निर्दोष आम लोगों को मौत के घाट उतारा गया है। वहां की औरतों के साथ बलात्कार करके उनकी हत्या की गई है और लगभग 680 से ज्यादा गांवों को जलाया गया है। यह सभी गैर कानूनी संस्था सलवाजुडूम और केंद्रीय सुरक्षा बलों द्वारा किया जा रहा है।

इसी तरह पंजाब में आतंकवाद के समय आतंकवादी संगठनों द्वारा धर्म के नाम पर अपने राजनीतिक विरोधियों को खत्म किया गया। वहीं पंजाब पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा बलों द्वारा हजारों नौजवानों को झूठे पुलिस मुकाबलों में मारा गया। ऐसे ही जम्मू कश्मीर और उत्तर-पूर्वी राज्यों में पिछले 50 साल से लगाू काले कानून अफसपा (आर्मड फोर्सस स्पेशल पावर एक्ट) की आड़ में हजारों निर्दोष लोगों को फौज और सुरक्षाबलों द्वारा गोली का निशाना बनाया गया है, पर ऐसे नाजायज कत्लों के लिए जिम्मेवार दोषी पुलिस और फौजी अधिकारियों को कोई सजा नहीं दी गई, क्योंकि इस काले कानून में पुलिस और सुरक्षा बलों को असीमित अधिकार दिये गये हैं। इस कानून को खत्म करवाने के

लिए मनीपुर की एक जांबाज औरत इरोम शर्मिला 4 नवम्बर 2000 से आमरण अनशन पर बैठी हुई है और उसे एक जेलनुमा अस्पताल में कैद करके जबरन तरल पदार्थ दिया जा रहा है। इस कानून के तहत पुलिस और फौज को किसी भी नागरिक को शक में बिना वारंट गिरफ्तार करने, घर तोड़ने, जायदाद पर कब्जा करने और गोली मारने के अधिकार दिए गए। बड़ी शर्म की बात है कि इस काले कानून का राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सख्त विरोध होने के बावजूद केंद्र सरकार इस कानून को खत्म करने के लिए तैयार नहीं है। यह कानून मानवीय अधिकारों का सख्त उल्लंघन है।

हमारे देश के पुलिस, प्रशासन, कानूनी और अदालती प्रक्रिया में भ्रष्टाचार और देरी के कारण लाखों ही बेगुनाह लोग कई-कई वर्षों से जेलों में नाजायज फंसे हुए हैं। इसी तरह सरकारों की भ्रष्ट और जनता विरोधी आर्थिक नीतियों का विरोध करने और अपनी जायज मांगों के लिए संघर्ष करने वाले किसान-मजदूर, कर्मचारी, दलित और ट्रेड यूनियन नेताओं को नाजायज़ ही जेलों में बंद करके उनके मानव अधिकारों का उल्लंघन किया जा रहा है । हमारे देश का न्याय ढांचा इतना महंगा है कि आम व्यक्ति की पहुंच से बाहर है। न्याय में देरी का न्याय देने से इंकार करना ही है। यह सरकारी दहशतवाद ही तो है। हमारे देश में जब भी कोई दहशतवाद की घटना घटती है तो देश की खुफिया एजेंसी के अधिकारी और मीडिया के कुछ गैर जिम्मेवार लोग एक अंधी राष्ट्रीय भावना में मुस्लिम नौजवानों को गिरफ्तार करने का माहौल बना देते हैं और फिर निर्दोष मुस्लिम नौजवानों को कई-कई साल जेलों में रखा जाता है।उधर पिछले समय में समझौता एक्सप्रैस, अजमेर, मालेगांव और हैदराबाद में हुए बम धमाकों में हिन्दूवादी संगठनों के मैंबर स्पष्ट तौर पर दोषी ठहराए गए हैं। यह अल्पसंख्यकों के मानव अधिकारों का हनन है।

भारत के संविधान में हर नागरिक को धारा51 में वैज्ञानिक सोच काप्रचार-प्रसार करने और धारा 19 में हर नागरिक को अपने विचार प्रकट करने की आजादी का अधिकार दिया गया है। पर हकीकत यह है कि सरकारों और धार्मिक कट्टरवादी संगठनों द्वारा अपने वैज्ञानिक विचार प्रकट करने की आजादी पर रोक लगाई जा रही है। पिछले समय में भ्रष्ट सरकारों द्वारा प्रकाशकों, बुद्धिजीवियों, तर्कशीलों, सम्पादकों, पत्रकारों और मानव अधिकार संगठनों को धार्मिक भावनाएं भड़काने के झूठे दोष लगाकर नाजायज़ ही जेल में रखा गया है। यह अंतर्राष्ट्रीय घोषणापत्र और संविधान का उल्लंघन है। हिन्दूवादी संगठनों द्वारा 20 अगस्त 2013 को महाराष्ट्र के डा. नरेन्द्र डाभोलकर, फरवरी 2015 में गोबिन्द पंसारे और अगस्त 2015 में प्रो. कलबुरगी जैसे तर्कशील नेताओं और महायौद्धाओं को सिर्फ इसलिए कत्ल कर दिया गया, क्योंकि वे अंधविश्वास, धार्मिक कट्टरवाद और पाखंडवाद के खिलाफ जोरदार आवाज उठा रहे थे।

मौत की सजा मानव अधिकारों का सबसे बड़ा उल्लंघन है। किसी जीवित व्यक्ति से जीने का अधिकार छीन कर उसे तयशुदा तारीख पर कुछ अधिकारियों के सामने मौत के घाट उतार देना भारत के संविधान की धारा 21 में मिली जीवित रहने के अधिकार का सीधा उल्लंघन है और गैर मानवीय भी है। हकीकत यह है कि किसी व्यक्ति को अपराधी बनाने में वहां का राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा प्रबंध सबसे ज्यादा जिम्मेदार होता है। यदि सरकार की नीतियां और नेता ही अपराधिक माहौल को बढ़ावा दे रहे हों तो समाज को अपराध मुक्त कैसे किया जा सकता है? कानून के विश्लेषकों ने भी ये हकीकत पेश की है कि समाज से आतंकवाद, दंगे फसाद और बलात्कार जैसे घिनौने अपराध खत्म करने के लिए मौत की सजा कोई कारगर सजा साबित नहीं हो सकी है। पिछले समय में कुछ ऐसे अदालती फैसले सामने आए हैं, जिनमें निर्दोष मुलजमों को फांसी की सजा सुनाई गई थी। पर बाद में असलीयत पता चलने पर उनको बाइज्जत बरी कर दिया गया। दुनिया के 140 से ज्यादा देशों में मौत की सजा खत्म की जा चुकी है और बाकी देशों में भी इसे लागू नहीं किया जा रहा है। पर मोदी सरकार जानबूझ कर इसे खत्म नहीं करना चाहती। जबकि समय की मांग हैं कि सभ्य भारत में मौत की सजा को समाप्त करके दोषी को सारी उम्र जेल में रखने की सजा दी जानी चाहिए।

इसलिए हमारे देश की सरकारें 10 दिसम्बर को हर वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस मनाकर एक बड़ा दिखावा और पाखंड करती हैं, जबकि ये देश की करोड़ों जनता को भूखे, बेरोजगार, नंगे, प्यासे और बेघरे रख कर रोज ही उनके संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन कर रही हैं और देश का खजाना कार्पोरेट कम्पनियों और पश्चिमी देशों को लूटा रही हैं। सबसे बड़ा आतंकवाद तो देश की सरकारें ही फैला रही हैं।

यदि हमारी सरकारें वाकई मानव अधिकारों का आदर करना चाहती हैं तो उनको निजीकरण की जनता विरोधी आर्थिक नीतियों को खत्म करके एक ऐसा आर्थिक विकास माडल लागू करना चाहिए, जिसमें हर नागरिक को शिक्षा, सेहत, रोजगार, बिजली, साफ पानी की सुविधाएं बराबरी के आधार पर आसानी से प्राप्ति हो सके। किसी भी नागरिक के साथ धर्म, जाति, रंग, भाषा और लिंग के आधार पर पक्षपात न हो और हर नागरिक के संवैधानिक और मानवीय अधिकारों की रक्षा को यकीनी बनाया जाए। इसके अलावा देश के कानून और संविधन से सभी काले कानूनों को खास कर एएफएसपीए और यूएपीए को खत्म किया जाना चाहिए और मौत की सजा को समाप्त किया जाना चाहिए।

अगर सरकारें एक निर्धारित समय में ऐसा नहीं करती, तो देश की जनता को अपने संवैधानिक और जनतान्त्रिक अधिकार लेने के लिए सरकारों के नाक में दम करने की ताकत दिखानी होगी।

★★

पृष्ठ 13 का शेष (दीर्घायु भोगने....)

प्राणियों में कोशिकाएं, इनके शारीरिक आकार के अनुकूल, छोटी अथवा बड़ी नहीं होती, परन्तु संख्या में ये अवश्य कम या अधिक होती हैं। श्रीऊ का शरीर सात अरब के लगभग कोशिकाओं से निर्मित है, जबकि हाथी का शरीर 65 हजार खरब कोशिकाओं द्वारा। हमारा शरीर 50 खरब कोशिकाओं का समूह है, जोकि अंगों-प्रणालियों में योजनाबद्ध हैं तथा जिनके आपसी सहयोग से हमारा जीवन अंकुरित हो रहा है। हम यदि अन्य प्राणियों की अपेक्षा लंबी आयु बिता रहे हैं तो अपने दिमाग के कारण-अन्य प्राणियों से अधिक विकसित दिमाग के कारण। हमारा दिमाग अन्य प्राणियों की अपेक्षा आकार में बड़ा है तथा इसकी बनावट अन्य प्राणियों से कहीं अधिक पेचीदा है। इसी कारण, इसको विश्व के सर्वाधिक पेचीदा अस्तित्व के तौर पर सम्मानित किया जा रहा है। अपनी पेचीदा बनावट के कारण यह अत्यंत क्रियाशील है तथा लंबे समय तक यह क्रियाशील बना भी रहता है। परन्तु बढ़ती हुई आयु के साथ हमारा दिमाग साथ के साथ सिंकुड़ता भी चला जाता है। बढ़ती हुई आयु के साथ वे कोशिकाएं, जोकि प्रयुक्त नहीं हो रही, मृत होती एवं नष्ट होती चली जाती हैं। दिमाग का सिंकुड़ना, अनुभव न होने वाली धीमी गति के साथ लगातार जारी रहता है। इस कारण धीमी होती जा रही दिमागी गतिविधियों के संकेत शरीर के बूढ़ा हो रहे होने से मिलते रहते हैं। धीरे-धीरे बूढ़ा हो रहा शरीर केवल मानव की विशेषता है। अन्य प्राणी न तो हमारी तरह से लंबा बचपन व्यतीत करते हैं तथा न ही लंबा बुढ़ापा। अपने आप योग्य होने में ये कम समय लेते हैं एवं अल्प वृद्धावस्था बिता कर संसार से विदा होते रहते हैं।

यदि विचित्र दिमाग हमें विरासत में मिला है, तब इस विचित्रता का उदार प्रयोग करने से झिझक क्यों? दिमाग का उदार प्रयोग ही लंबी आयु का रहस्य है, जोकि शांतमयी ढंग से चाहे न ही व्यतीत हो। इसी कारण लंबी आयु से उकताए हुए कई व्यक्ति यह भी सोचते रहते हैं : -

'ये किस मुकाम पे ले आई है ज़िंदगी,
कि हर कदम पे बेबसी का आलम है।'

-हिन्दी अनुवाद
बलवंत सिंह लैक्चरार

★★

वृद्धावस्था में क्यों कमजोर हो जाती है याद्दाश्त ?

डा. हरचंद सिंह सरहिन्दी
092178-45812

मस्तिष्क के सब से बड़े एवं महत्वपूर्ण हिस्से सेरिबर्म में एक विशेष स्थान पर याद्दाश्त केन्द्र स्थित होता है, जहां पर स्मृतियां संभाली गई होती हैं। कोई अनुभव अथवा तजुर्बा, याद्दाश्त केंद्र में समा कर स्मृति में तबदील होता है तो मस्तिष्क में अनेक प्रकार के रासायनिक परिवर्तन होते हैं। वैज्ञानिकों ने हाल ही में दिमाग के अन्दर घटित हो रहे इन परिवर्तनों की तस्वीरें खींचीं हैं। इस विलक्षण खोज का कार्य, यूनिवर्सिटी ऑफ जेनेवा (स्विटजरलैंड) के वैज्ञानिक डा. डोमिनीक्यू मूलर की देख-रेख में सम्पन्न हुआ।

याद्दाश्त केन्द्र में नई स्मृतियों को स्थान देने के लिए मस्तिष्क, समय-समय पर अनावश्यक स्मृतियों की छांटी करता रहता हैं वैसे भी कड़वी-कसैली यादों को भुला देना हमारे हित में होता हैं इस से हमारी कई समस्याएं स्वयंमेव ही हल हो जाती हैं।

याद्दाश्त केन्द्र दो स्तरों पर स्मृतियों को सुरक्षित करता है-अल्प काल के लिए एवं दीर्घ काल के लिए। किस याद को थोड़े समय के लिए तथा किस याद को लम्बे समय के लिए स्टोर करना है, बात का फैसला स्थिति के अनुसार दिमाग ने स्वयं करना होता है। किसी स्मृति को दीर्घ समय के लिए सुरक्षित करना, तीन सोपानों पर घटने वाली प्रक्रिया हैं प्रथम स्टेज है-रजिस्ट्रेशन (इन्द्राज) दूसरी स्टेज-रिटेन्शन (स्मरण रखना) एवं तीसरी अवस्था-रिकाल (जरूरत पड़ने पर याद कर सकना) । इसका तात्पर्य है कि यदि किसी बात का रजिस्ट्रेशन गंभीरता के साथ किया जाए और फिर उसे याद रखने के लिए प्रयत्न किया जाए तो उस बात को जरूरत पड़ने पर याद कर सकने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

याद्दाश्त कमजोर हो जाने की समस्या, मुख्य तौर पर तीन कारणों से उतपन्न होती है। प्रथम, जब कोई व्यक्ति किसी जानकारी को याद रखने में दिलचस्पी न रखता हो। द्वितीय, जब कोई व्यक्ति यह महसूस करता है कि उसकी यद्दाश्त काम नहीं कर रही और तृतीय, स्मरण शक्ति का प्रयोग न करना। जब कोई व्यक्ति अपनी स्मरण शक्ति से काम लेना बन्द कर देतार है तो उसके याद्दाश्त केन्द्र की स्नायु कोशिकाओं के आपसी जोड़ शिथिल पड़ जाते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप यद्दाश्त कमजोर हो जाती है।

इन कारणों के अतिरिक्त बढ़ती हुई आयु भी याद्दाश्त पर दुष्प्रभाव डालती है। वास्तव में, दिमाग भी शरीर के अन्य अंगों की भांति आयु के प्रभाव को कबूलता है। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने एक ताजा अनुसंधान द्वारा सिद्ध किया है कि 40 वर्षो की आयु के उपरान्त स्मरण शक्ति कम होने लगती है, जबकि तनाव बढ़ता जाता हैं जब तनाव, चिंता एवं उदासी आ कर घेर लेती है तो स्मरण शक्ति का ग्राफ पतन की ओर जाने लगता है क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में कोर्टिसोल नामक हारमोन का रिसाव बढ़ जाता है, जो कि यद्दाश्त पर दुष्प्रभाव डालता है।

यद्यपि वक्त को विपरीत दिशा में तो घुमाया नहीं जा सकता, परन्तु हां, यदि व्यक्ति यत्न करे तो वह स्मरण-शक्ति के पतन की गति को धीमी अवश्य कर सकता है। देखने में आता है कि पिछली आयु में अधिकतर लोग अपने दिमाग की लगभग समस्त योग्यताओं को अचानक ही चुनौतियों का मुकाबला करने से मुक्त कर देते हैं।

शेष पृष्ठ 24 पर ....

राधामोहन गोकुल जी

–कमेन्दु

जन्म : 15 दिसम्बर, 1865, भदरी, इलाहाबाद, उ त्तर प्रदेश। पूर्वजों का मूल निवास–खेतड़ी, जयपुर रियासत, राजस्थान। पिता लाला गोकुलचंद जी की चार संतानों में सबसे बड़े।

प्रारंभिक शिक्षाः बौद्ध भिक्षुओं के एक आवास विहार में। बाद में सेंट जान्स कॉलेजिएट स्कूल में। मात्र 13 वर्ष की उम्र में विवाह। नौकरी की तलाश में इलाहाबाद आगमन। एक सरकारी महकमे में 20 रुपए माहवारी पर क्लर्की। गोरे अधिकारी स्मिथ द्वारा अपमान। क्षुब्ध होकर अधिकारी की पिटाई। नौकरी से त्याग पत्र। जीवनभर सरकारी चाकरी न करने का संकल्प। 1883 ई. पत्नी का अचानक निधन। आजीवन विधुर रहे। एक पुत्र और एक पुत्री का अल्पायु में निधन। उस समय के सभी महत्वपूर्ण पत्रों एवं पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित।

तीन महत्वपूर्ण पत्रों–ब्राह्मण, समाज सेवक और प्रणवीर के लंबे समय तक सम्पादक।

लेखन–सम्पादन के अतिरिक्त राजनीति सक्रियता। सशस्त्र क्रांति के प्रेरणा–पुरुष।

निधन : 3 सिम्बर 1935, खोही, बुन्देलखंड।

राधामोहन गोकुलजी हिन्दी नवजागरण के एक शलाका पुरुष थे। डा. रामनिवास शर्मा ने उनकी दो पुस्तकों–देश का धन और कम्युनिज्म क्या है? की विस्तार से चर्चा की है।उन्होंने कुछ साम्यवाद संबंधी लेखों के साथ विप्लव के निबंधों से उद्धरण भी संकलित किए हैं। लेकिन गोकुलजी के महत्व को आकंलित करने के लिए इतना ही काफी नहीं था। समस्या उनकी रचनाओं की अनुपलब्धता से भी थी। उनकी रचनाओं के संकलन–सम्पादन की कभी कोई कोशिश नहीं की गई। आज उनकी जो रचनाएं उपलब्ध हो सकी हैं, उन्हें पढ़कर आश्चर्य होता है। हिन्दी नवजागरण में अपनी सक्रियता और क्रांतिकारी विचारों के कारण वे सर्वथा अलग लेखक हैं। धर्म और ईश्वर की सत्ता को डंके की चोट पर चुनौती देने वाला, ऐसा विलक्षण रचनाकार उनके पूर्व कोई दूसरा नज़र नहीं आता। उनके विस्फोटक विचारों की अपने जमाने में जोरदार चर्चा थी। उनके गंभीर विवादों को जन्म देने वाले विचारों को लेकर तीखी बहस चला करती। तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में इन हलचलों को हम आसानी से महसूस कर सकते हैं।

गोकुलजी का जीवन एक ऐसी लौ की तरह था–जो आखिरी सांस तक पूरे दम से जला। वे स्वाधीनता की आग में अहर्निश तपने वाले लौह पुरुष थे–जिनके लक्ष्य के सामने किसी भी आंधी–तूफान का कोई मतलब नहीं था। यह देखकर आश्चर्य होता है कि उनके निधन के सात दशक गुजर गए, उनकी जन्मशती भी गुजर गई–लेकिन वे आज तक हमारी विचार परम्परा में शामिल नहीं हुए। उनकी सामग्री तक उपलब्ध नहीं हुई। उन्होंने विविध रूपों में विपुल लेखन किया है–जो तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में बिखरा पड़ा है। उनक बीच से गुजरते हुए आज भी एक तरह का विरल उत्तेजकात्मक अनुभव होता है। उनमें हमें नवजागरण का एक सर्वथा भिन्न स्वर सुनाई देता है। ऐसा स्वर, जो उनकी व्याकुलता से हमें परिचित कराता है। उनकी बेचैनियां इतनी उत्तेजना पैदा करती हैं कि उन्हें पढ़कर हमारी सुप्त शिराओं में आज भी हलचल हो उठती है। उन्हें पढ़ते हुए हमें विचारों की कम्पकम्पाहट सी महसूस होती है। जोश पैदा करने वाले स्थलों पर तो उनका जौहर देखते बनता है। अपने संस्कारों में वे ठेठ जातीय थे। रूढ़ियों, अन्याय और असमानता के विरुद्ध उनकी घनीभूत घृणा पूरी ताकत से व्यक्त होती है।

गोकुलजी नवजागरण के ऐसे दुर्लभ यौद्धा थे, जिनके कलेजे में अखूंट साहस और देशप्रेम

लबालब था। उद्देश्य के प्रति उनकी अटूट आस्था और संघर्ष-संकल्प ने उन्हें अंदर से फौलादी बना दिया था। उनके सामने विचारों के लिए किसी खतरे या दबाव की कोई अहमियत नहीं थी और न ही किसी आसन्न घटना की उन्हें कोई परवाह ही थी। अनुभव और विचार-दोनों स्तरों पर वे इतने सम्पन्न और समर्थ थे कि कोई भी प्रतिकूल स्थिति, उन्हें अपने विश्वासों से तनिक भी डिगा नहीं सकी। उनका तेवर और मन-मिजाज कबीर वाला था और ईश्वर के विरुद्ध विचारों में तो वे उनसे भी एक कदम आगे थे।

गोकुलजी के राजनीतिक सम्पर्कों को देखकर चकित रह जाना पड़ता है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के सबसे बड़े व्यक्तित्व महात्मा गांधी ने झंडा-सत्याग्रह में उनके अदालत में दिए वक्तव्य पर 'यंग इंडिया' में सम्पादकीय लिखा था और उनके व्यक्तित्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। स्वामी दयानंद सरस्वति, मदनमोहन मालवीय और लाला लाजपत राय जैसे लोगों से उनके निजी सम्पर्क-संवाद थे। बाद में उनके संबंध क्रांतिकारियों से बने-जिसमें रासबिहारी बोस, चंद्रशेखर आजाद से भगत सिंह तक शामिल थे। कई क्रांतिकारी युवकों के तो वे प्रेरणाम्रोत ही रहे। क्रांतिकारियों के बीच उनका असाधारण सम्मान था और वे उन पर अगाध विश्वास करते थे। काकोरी कांड के बाद चंद्रशेखर आजाद ने फरारी के दिनों में उन्हीं के यहां रुककर उनकी मदद से दुबारा संगठन खड़ा किया था।

गोकुलजी का साहित्यिक सम्पर्क भी व्यापक था। प्रतापनारायण मिश्र के सम्पर्क में आकर उन्होंने लिखना शुरू किया और उनके इतने आत्मीय बने कि ब्राह्मण में मैनेजर के रूप में उनका नाम भी छपने लगा। इलाहाबाद में रहते हुए उन्हें पं. बालकृष्ण भट्ट का सामीप्य मिला और उनके कुछ लेख 'हिन्दी प्रदीप' में भी छपे। पं. पद्म सिंह शर्मा, श्याम सुंदर दास, गणेश शंकर विद्यार्थी, ईश्वरी प्रसाद शर्मा, महादेव प्रसाद सेठ, मुंशी नवजादिकाल श्रीवास्तव, शिवपूजन सहाय सहित अपने समय के तमाम प्रमुख लोगों के बीच वे सम्मानित रहे। निरालाजी तो उन्हें अपना राजनीतिक गुरु ही मानते थे। उदयशंकर शास्त्र ने किन्हीं चंद्रोदय दीक्षित के हवाले से यह लिखा है कि -*'पं. किशोरीदास वाजपेयी ने किसी प्रसंग में कहा था कि हिन्दी लिखने की प्रेरणा तो मुझे राधामोहन गोकुलजी से मिली थी।'*

गोकुलजी का जीवन बड़ा ही संघर्षपूर्ण और घटनाबहुल था-उनकी सक्रियता के आयाम भी अलग-अलग रहे। वे व्यवस्थित रहकर साहित्यिक लेखन करने वाले साहित्यिकार नहीं थे। उनकी प्राथमिकता में साहित्यिक लेखन था भी नहीं। उन्होंने जीवनभर राजनीतिक और सामाजिक कार्यो को ही अहमियत दी और उसी के निमित्त अपना ज्यादातर लेखन किया। उनके लेखन में जनता के बीच वैज्ञानिक सोच और विचार फैलाना, राष्ट्रीय भावनाओं को उत्प्रेरित करना, पुरानी और जड़ परम्पराओं को खत्म करना, नई वैज्ञानिक समझ पैदा करना-मुख्य उद्देश्य था। उनकी देशभक्ति उन्हें इस तरह बेचैन किए रहती थी कि उनके भीतर समाज में बुनियादी उलटफेर कर देने का आश्चर्यजनक रूप से तूफानी जज्बा भरा था। वे एक जिद्दी यौद्धा की तरह समाज और सोच की संकीर्णता पर चोट करते थे। उनकी समझ और उनका संकल्प इतना पक्का था कि व्यवहार में तनिक भी डगमगाहट पूरे जीवन में दिखाई नहीं पड़ती। उनकी स्वतंत्रता के प्रति सम्पृक्ति तथा निडरता आश्चर्यजनक थी। राजनीतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक गुलामी के विरुद्ध उनके भीतर ऐसी प्रचंड आग धधकती, जिसे वे व्यक्त करते हुए बौद्धिक भद्रता की भी परवाह नहीं करते। क्रोध और घृणा व्यक्त करने में वे हरामीपन, बेहूदगी, लुच्चापन जैसे शब्दों का बेधड़क इस्तेमाल करते थे। खासतौर से धार्मिक पाखंडों और पुरोहित वर्ग पर तो उनका आक्रमण चकित कर देने वाला है। 'धर्म के नाम पर धंधा' करने वले ध्वजाधारी उनके निर्मम प्रकार की जद में हमेशा आते रहे। वे हिन्दू विरोधी ही नहीं, बल्कि सर्वधर्म विरोधी के रूप में सामने आते हैं।

गोकुलजी का विश्वास था कि वैज्ञानिक सोच के लिए सत्याग्रही और कार्य-कारण वाली पद्धति का

होना बुनियादी शर्त है। गोकुलजी ने कम्युनिस्ट होने के लिए मार्क्सवाद पढ़ते तक प्रतीक्षा नहीं की। सत्य के प्रति आग्रह और तार्किक बौद्धिकता उनके स्वभाव और सोच का सहज हिस्सा थी। उनका लेखन उनके व्यक्तित्व के क्रांतिकारी, राजनीतिक और सामाजिक कार्यो का प्रत्यक्ष प्रक्षेपण था, जिसे पढ़ते हुए यह सहज ही अंदाजा हो जाता है कि वे मामूली पढ़े-लिखे व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने अपने विचारों को पुष्ट करने के लिए देशी-विदेशी ग्रंथों का काफी अध्ययन किया था, जिसमें उर्दू, अरबी और फारसी ग्रंथ भी शामिल थे। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला, उर्दू और फारसी-इतनी भाषाओं को वे मूल में पढ़ सकते थे। लेकिन अकादमिक स्तर पर प्रबल-पुष्ट होने के बावजूद उनके गद्य में कहीं भी अकादमिक ऊब और दुर्गंध नहीं मिलती। दर्शन, मनोविज्ञान और ज्ञान की अन्य विद्याओं की वे तात्विक मीमांसा करते हैं। ऐसे स्थलों पर उनकी मेधा, तर्कशक्ति और वैचारिक आस्था का उत्कर्ष देखते बनता है। निःसंदेह वे जबरदस्त वैचारिक क्षमता के धनी थे। उन्होंने किसी विषय को समग्रता से समझने और जड़ों तक पहुंचने का जो वैज्ञानिक तरीका अपनाया था-उसे साधारण जनों को समझाने की दिलचस्प शैली भी विकसित कर ली थी। इस लिहाज से उनका सम्पूर्ण लेखन विद्वानों के लिए नहीं, बल्कि साधारण जनों के लिए था। श्रमजीवियों के लिए लिखे उनके पर्चे तो पाठकीय बोध पर संवाद कायम करने वाले जन साहित्य के दुर्लभ प्रतिमान हैं।

'हिन्दी जनता की महान सांस्कृतिक विरासत में राधामोहन गोकुलजी का योगदान अत्यंत मूल्यवान है। राधामोहन गोकुलजी हिन्दू समाज के कट्टर वर्ग में परित्यक्त और बहिष्कृत थे। वह वर्ण-व्यवस्था न मानते थे, द्विज-शूद्र का भेद न मानते थे, ईश्वर और धर्म को अस्वीकार करते थे, स्त्रियों को पुरुषों के बराबर समझते थे। वह प्रेमचंद और निराला जी की परम्परा के निर्माता, उसके अभिन्न अंग थे।'

-डॉ. रामविलास शर्मा

'राणामोहन गोकुल जी को मैं उन लोगों में गिनता हूं, जिन्होंने अपना सर्वस्व और सारा जीवन इस पराधीन देश को स्वाधीनता दिलाने और ऊपर उठाने में खपा दिया। मैं उन्हें, उनके सारे जीवन को बुनियाद के उन पत्थरों में गिनता हूं, जिन पत्थरों के ऊपर उस समय के और बाद के लोगों ने 'स्वाधीन भारत' की इमारत को ऊंचा किया। आजकल के ये नुमायशी पत्थर, जिन्हें देख-देखकर, बाहर के दर्शक उनकी खूब प्रशंसा करते हैं, अगर ये तमाम पत्थर हटाकर उनकी जगह नए पत्थर लगा दिए जाएं तो इमारत को कोई नुक्सान नहीं पहुंच सकता। किन्तु यदि उन बुनियादी पत्थरों में से एक भी अपनी जगह से हिल जाए, तो इमारत के किसी कोने के गिर जाने का डर है। प्यारे और पूज्य भाई राधामोहन जी इसी तरह के बुनियाद के पत्थरों में से एक थे, हैं और अनंतकाल तक रहेंगे। उनके साथ मिलकर आजादी के लिए काम करने का मुझे गर्व है और आज भी मैं उसे अनुभव कर रहा हूं।

-पंडित सुंदर लाल

गोकुलजी की प्रकाशित पुस्तकें -

1. देश का धन, 1908, जगनमोहन मल्लिक, कलकत्ता, पृष्ठ 112, मूल्य आठ आने।

2. सभा व वक्ता अर्थात् व्याख्यान कौशल, 1911, देवनागरी यंत्रालय, कलकत्ता, पृष्ठ 58, मूल्य दो आना।

3. नीतिदर्शन, दो खंडों में 1912, देवनागरी यंत्रालय, पृष्ठ पहला खंड 217, दूसरा खंड 210, मूल्य बारह आने प्रतिखंड।

4. देशभक्त लाजपत, 1913, मुद्रक-प्रकाशक राधामोहन गोकुलजी अग्रवाल, देवनागरी यंत्रालय, कलकत्ता, पृष्ठ 320.

5. अंग्रेज डाकू (उपन्यास) 1919, आरएल बर्मन प्रेस, कलकत्ता, पृष्ठ 106, ल्य दस आना।

6. कम्युनिज्म क्या है ? 1927, सोशलिस्ट बुकशॉप, पटकापुर, कानपुर, पृष्ठ 159, मूल्य दस आना।

7. विप्लव (निबन्ध-संग्रह), 1932, नारायण प्रसाद अरोड़ा, बीए, पटकापुर, कानपुर, पृष्ठ 288, मूल्य एक रुपया चार आना।

डॉ. रणजीत की पुस्तक 'भारत के प्रख्यात नास्तिक' में से)

किश्त -12

ब्रह्माण्ड यात्रा

प्लूटो की हार

-डा. अवतार सिंह ढींढसा

094634-89789

साथियो चंद्रमा, शुक्र, सूर्य, मंगल, एस्ट्रॉयड पट्टी, ब्रहस्पति, शनि, यूरेनस एवं नैपचून ग्रहों की यात्रा हम कर चुके हैं। ये ग्रह ज्योतिषियों की सभी कूट चालों के हीरो हैं। आओ, अब सूर्य के शेष परिवार के बारे में जानकारी लेने के लिए हम उड़ान भरें- इसके अन्य पारिवारिक सदस्यों की ओर। ग्रहों से आगे क्या है? परन्तु नैपचून के गुरुत्वाकर्षण से बचकर निकलने के लिए हमारे अंतरिक्ष यान को एक सैकिंड में 21 से अधिक किलोमीटर तय करने पड़ेंगे। नेपचून से आगे हम पहुंचेंगे-हमारे सौर परिवार के एक अत्यंत दिलचस्प सदस्य के पास... .जिस की कहानी अपने आप में एक दुखांत भी है. ...जिसने 76 वर्ष तक सारी दुनिया को चक्कर में डाले रखा। कहानी कुछ इस प्रकार से है कि कुछ वर्ष पूर्व तक (सन् 2006 तक) हमारे सौर परिवार के 9 ग्रह थे। सबसे दूर एवं छोटा-अर्थात नौवां ग्रह था-प्लूटो। परन्तु आकार में तो यह हमारे चांद से भी छोटा है तथा सूर्य के साथ इसके ग्रह पथ का झुकाव, सभी ग्रहों से अधिक अर्थात् 17 दर्जे का है। इन कारणों ने प्लूटो को एक विचित्र प्रकार का गोला बना दिया है। इसको नंगी आंख से अर्थात् दूरबीन के बगैर नहीं देखा जा सकता। फिर तुम्हारा प्रश्न वही होगा कि प्लूटो की खोज किसने एवं कब की थी? प्लूटो को अमेरिका के शौकीन खगोल विज्ञानी 'कलाईड टोमबोह' ने सन् 1930 में खोजा था। 'अंतर्राष्ट्रीय खगोल विज्ञान संगठन' ने इसे अधिकारिक तौर पर नौवां ग्रह मान लिया था।

साथियो आप सोचते होंगे कि प्लूटो नाम कुछ अजीब सा है। इसका नाम प्लूटो किसने रखा था?

इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड में 'वैनीशिया बर्नी' नाम की एक 11 वर्षीय लड़की ने इसका नाम प्लूटो रखा। इसका आधार था यूनानी पौराणिक देवता 'हेडज' जिसको 'अपराध' की दुनिया का देवता माना जाता है। ग्रह....एवं अपराध की दुनिया का देवता. ...समझ में नहीं आता कि ग्रहों के साथ बुरे नाम ही क्यों जोड़े गए? ज्योतिषियों के अनुसार तो ग्रह होते ही बुरे हैं। इस प्रकार से लोगों की सोच उस समय तक वैज्ञानिक नहीं बनी थी।

पहली बात तो यह कि प्लूटो अब ग्रहों की श्रेणी में नहीं आता। दूसरी बात यह कि कई लोग सोचते हैं कि ग्रहों का प्रभाव बताने वाले ज्योतिषी बहुत पढ़े-लिखे होते हैं। यह उनकी गलतफहमी ही है। सच्चाई यह है कि कई ज्योतिषी तो बहुत थोड़ा पढ़े-लिखे होते हैं। इतना ही काफी नहीं....एक पांचवीं पास ज्योतिषी के पास तो विज्ञान की एमएससी एवं पीएचडी की डिग्री प्राप्त कई व्यक्ति भी 'पूच्छा' लेने के लिए जाते हैं।

परन्तु ऐसा क्यों? क्या ज्योतिष विज्ञान है? नहीं, केवल इसलिए कि उन्हें ग्रहों की वास्तविकता के बारे में ज्ञान नहीं होता। अतः दोस्तो...तुम चिंता न करो, धीरे-धीरे ब्राह्मांड की प्रक्रिया समझते जाओ.....और निडर बनते जाओ। अब क्योंकि प्लूटो से ग्रह की पदवी छीन ली गई है। अतः इससे भयभीत होने की क्या जरूरत?

सूर्य से दूरी....प्लूटो सूर्य से कितनी दूरी पर चक्कर लगा रहा है? यह सूर्य से 7,376,124,302 किलोमीटर दूर चला जाता है और अंडाकार पथ

पर घूमता हुआ कभी 4,436,756,954 किलोमीटर की दूरी पर आ जाता है। एक अन्य गणना के अनुसार .....सूर्य से पृथ्वी की दूरी को एक खगोलीय इकाई माना गया है, प्लूटो इस दूरी से लगभग 40 गुना दूर है तथा यह सूर्य के गिर्द अपना एक चक्कर पृथ्वी के 247.92065 वर्ष अर्थात् लगभग 248 वर्षों में पूरा करता है। प्लूटो नेपचून से बाहर नौवें स्थान पर घूम रहा है.....चलो चलते हैं इस विचित्र ग्रह की ओर...नेपचून से यदि हमारा अंतरिक्ष यान एक सैकिंड में 12 किलोमीटर की दूरी तय करे, तो भी हमें प्लूटो के पास पहुंचने में 8.5 महीने लग जाएंगे।

साथियो ज़रा रुको। यह बात कहीं बतानी न रह जाए कि प्लूटो नेपचून से बाहर नौवें स्थान पर हमेशा नहीं घूमता। यह अपना स्थान बदलता रहता है! यही तो कुछ बातें हैं......जिनके कारण प्लूटो को ग्रह मानने पर शंकाएं उत्पन्न हुई। वास्तव में प्लूटो अपने 248 वर्षों के चक्कर में से 20 वर्ष के लिए आठवें स्थान पर घूमता है!!! यह आश्चर्यजनक बात तो हमारी दसवीं कक्षा तक की विज्ञान की पुस्तकों में भी दर्ज नहीं है कि प्लूटो आठवें और नैपचून नौवें स्थान पर चला जाता है!!! दोस्तो हैरानी वाली बात नहीं यह सत्य है कि सन् 1979 से 1999 तक प्लूटो आठवें स्थान पर चलता रहा। अर्थात् इसका ग्रह पथ इतना अधिक अंडाकार है कि यह 20 वर्ष के लिए ...नेपचून की अपेक्षा सूर्य के निकट होता है तथा इस प्रकार प्लूटो अपनी ग्रह होने की शर्तें पूर्ण करने में असमर्थ होता रहा। एक अन्य बात थी, जिसके कारण प्लूटो शेष ग्रहों से अलग है? इसका आकार हमारे प्राकृतिक उपग्रह चंद्रमा से भी छोटा है!!! परन्तु यह ग्रहों की कतार में बैठा रहा है।

आओ दोस्तो, चलते हैं प्लूटो के नजदीक. ..देखो इसका वायुमंडल अत्यंत पतला है। कारण बताते हैं...सुनो। जरा सोचो कि दिसम्बर, जनवरी के सर्द महीनों के दौरान हमारी पृथ्वी के वायुमंडल में से यदि सभी गैसें ठोस रूप बन कर पृथ्वी पर गिर जाएं, तो क्या होगा? वायुमंडल पतला होता हुआ खत्म ही हो जाएगा। फिर हम सांस कहां से लेंगे? तथा हमें सूर्य की किरणों से कौन बचाएगा। सचमुच में प्रलय आ जाएगी। प्लूटो के वातावरण के बारे में सत्य में ही ऐसी एक विचित्र बात है।

पहली बात तो यह है कि प्लूटो चट्टानों एवं बर्फ का ही बना हुआ है। इसके तल पर जमी हुई नाईट्रोजन एवं मीथेन गैस है, जिसे मार्श गैस भी कहा जाता है। जब प्लूटो सूर्य से दूर चला जाता है तो इसके पतले एवं हल्के वायुमंडल की गैसें जम कर ठोस होकर इसकी सतह पर गिर पड़ती हैं। उस समय प्लूटो वायमुंडल से रहित हो जाता है तथा जब यह सूर्य के निकट आ जाता है तो जमी हुई गैसें पुनः वायुमंडल का निर्माण कर देती हैं। सचमुच में प्लूटो एक अजीब सा अंतरिक्षीय पिण्ड है।

साथियो, देखो प्लूटो के गिर्द चांद भी चक्कर लगा रहे हैं। वो बड़ा चांद 'चेरोन' प्लूटो से आकार में आधा है तथा हब्बल अंतरिक्ष दूरबीन ने सन् 2005 में इसके दो छोटे चंद्रमाओं 'निक्स एवं हाईड्रा' को भी खोज लिया। अमेरिका की अंतरिक्षीय दूरबीन 'न्यू होराईजन ने जनवरी 27, 2015 एवं फरवरी 8, 2015 के दरम्यान इनके लिए चित्र खींच कर भेजे हैं।

दोस्तो, प्लूटो को 1930 में खोजा गया था तथा सन् 2015 को इसके 75 वर्षीय जश्न मनाए जा रहे हैं कि इसी दौरान नई दूरबीन एवं कंप्यूटर तकनीक ने इसके लिए खतरे खड़े कर दिए। आप अवश्य सोच रहे होंगे कि यह क्या बात कर दी। इतना बड़ा ग्रह!!! जो ज्योतिष के अनुसार लोगों के लिए खतरा खड़ा कर सकता है....उसके लिए एक छोटी सी दूरबीन अथवा कंप्यूटर कैसे खतरा बन सकते हैं?

बात छोटा अथवा बड़ा होने की नहीं है। बात सत्य के सामने आने की है।

प्लूटो की ग्रह वाली पदवी के लिए सबसे बड़ा खतरा बना 'एरिस' जिसको 2003 4बी 313 भी कहा गया। परन्तु इस खोज के बारे में ऐलान 29 जुलाई 2005 को किया गया। इसका आकार

प्लूटो से भी बड़ा है। बस कहानी शुरू हो गई कि 'दसवां ग्रह' भी खोज लिया गया।

फिर प्लूटो की हालत तो एस्ट्रोयड पट्टी के 'सीरेस' जैसी हो गई। क्योंकि बृहस्पति एवं मंगल के दरम्यान 'सीरेस' के साथ हजारों अन्य 'एस्ट्रोयड' भी घूम रहे हैं। बिल्कुल इसी प्रकार, अब कूपर पट्टी में अकेला प्लूटो ही नहीं, बल्कि इससे भी बड़े -छोटे अन्य अंतरिक्षीय पिण्ड भी चक्कर लगा रहे हैं। अमेरिकी अंतरिक्ष विज्ञानी 'नील डी गैसे टाईसन' एवं 'माईक ब्राऊन' पहले विज्ञानी हैं, जिन्होंने प्लूटो को ग्रह मानने से इन्कार किया। मजाक में उनको प्लूटो ग्रह के कातिल भी कहा जाता है, क्योंकि उनकी दलीलों ने प्लूटो के बारे में एक गंभीर चर्चा को शुरू किया था। इससे भी आगे सुनो....हमारे सौर परिवार के अतिरिक्त ब्राह्मांड में और 'तारों' के गिर्द भी इक्का-दुक्का ग्रह चक्कर लगा रहे हैं। उन तारों को भी सूर्य ही कहा जाने लगा। अब एक नए प्रश्न ने जन्म लिया...कि ग्रह की परिभाषा क्या हो ?

तात्पर्य यह कि किस प्रकार के अंतरिक्षीय पिण्ड को ग्रह माना जाता एवं किस प्रकार के को नहीं। खगोल वैज्ञानिकों की ओर से मांग उठी कि कुछ मापदंड तय होने चाहिएं। साथियो, ज्योतिषियों के लिए यह नई बात सुनने में आ गई...कि कौन सा ग्रह है और कौन सा नहीं ?....इसका फैसला पृथ्वी के मानव करेंगे। वैसे तो ज्योतिष के अनुसार...वह हर अंतरिक्षीय पिण्ड ग्रह ही है...जिस का पृथ्वी के निवासियों पर बुरा प्रभाव पड़ता हो।

ज्योतिषि यह फैसला नहीं कर सकते... क्योंकि उन्होंने तो इन ग्रहों को देखा तक नहीं। हां. ..जिन्होंने देखा है....अर्थात् खगोल विज्ञानी ही फैसला करें कि किस अंतरिक्षीय पिण्ड को ग्रह कहा जाए अथवा नहीं। हालात यह बन गए कि जब भी कभी किसी नए अंतरिक्षीय पिण्ड की खोज हुई तो सबसे पहले प्रश्न यही पूछा जाता है कि यह प्लूटो से बड़ा है अथवा छोटा। अतः 'सेधना' तक तो कोई मुश्किल खड़ी नहीं हुई....क्योंकि ये प्लूटो से छोटे थे। परन्तु 'एरिस' जोकि प्लूटो से दूर है एवं इससे आकार में बड़ा है...इसने ग्रह की परिभाषा के बारे में वाद-विवाद खड़ा कर दिया।

झगड़े के बारे में मैं आपको कुछ उदाहरण दे दूं...'चमगादड़ उड़ सकते हैं - परन्तु वे पक्षी नहीं होते' ये दुधारू अर्थात् दूध देने वाले प्राणी होते हैं 'व्हेल' समुद्र में रहती है...परन्तु यह मछली नहीं बल्कि यह भी दुधारू प्राणी है।'

'पेंगुइन' हवा में उड़ नहीं सकते - परन्तु ये पक्षी हैं।' यह फैसला किया वैज्ञानिकों ने। क्योंकि माता चमगादड़ अपने बच्चों को मानव जाति की भांति जन्म देती है जबकि पक्षी अंडे देते हैं। चमगादड़ माता अपने बच्चों को दूध पिलाती है, परन्तु पक्षी इस प्रकार नहीं करते। बस गुणों के आधारपर ही चमगादड़ दुधारू हैं...बस इसी प्रकार ही ग्रह किसे कहा जाए....इसके भी कुछ गुण अथवा मापदंड होने चाहिएं, जिनके आधार पर भविष्य में किसी अंतरिक्षीय पिण्ड को ग्रह कहा जाए।

ग्रहों की पदवी के बारे में फैसला करने वाली संस्था का नाम 'अंतर्राष्ट्रीय खगोल विज्ञान संगठन' है, जिसको 1919 में स्थापित किया गया था तथा अब इसके 9000 सदस्य हैं। इसकी प्रत्येक तीन वर्ष के पश्चात् मीटिंग होती है, जिसमें नई खोजों के बारे में चर्चा होती है। इसकी जनरल बॉडी की 26वीं मीटिंग 14 से 26 अगस्त, 2006 को चेक गणराज्य के प्राग शहर में हुई थी तथा उसमें ग्रह की नई परिभाषा को मान्यता दी गई।

इस मीटिंग में यह फैसला हुआ...कि उस अंतरिक्षीय वस्तु को ग्रह कहा जाएगा....जो सूर्य के गिर्द चक्कर लगाती हो। दूसरा गुण उसमें यह हो कि उसने अपने गुरुत्वाकर्षण के द्वारा अपने -आपको लगभग गोलाकार बना लिया हो। तृतीय गुण जिस ने अपने ग्रह पथ को आसपास की समस्त अंतरिक्षीय वस्तुओं से साफ कर लिया हो। परन्तु यदि उसने ग्रह पथ के निकट की वस्तुओं को अपने में समेट कर...अपना रास्ता साफ नहीं किया...उसे कहा जाएगा. ..'बौना ग्रह'। तथा उपग्रहों को छोड़ कर शेष सभी

छोटी-मोटी अंतरिक्षीय वस्तुओं को कहा जाएगा- सौर परिवार के छोटे पिण्ड।

दोस्तो, आप पूछेंगे कि हमारा प्लूटो कहां पर मार खा गया? प्लूटो प्रथम दोनों शर्तें पूर्ण करता है...नंबर एक, यह सूर्य के गिर्द चक्कर लगाता है। दूसरी शर्त के अनुसार यह लगभग गोलाकार भी है। परन्तु तीसरी शर्त यह पूर्ण नहीं करता...अर्थात् यह अपने ग्रह पथ को अंतरिक्षीय मलबे से पूर्णतः मुक्त नहीं कर सका। प्लूटो 75 वर्षों तक नौवां ग्रह कहलाता रहा। अब बन गया...बौना ग्रह। दोस्तो, तुम्हारी जिज्ञासा की बहुत चिंता है कि क्या अब इस ग्रह का लोगों पर प्रभाव भी कम हो गया है अथवा नहीं? उत्तर आपके पास है...सोचो कि प्लूटो प्रथम तो हमें दिखाई ही नहीं देता। दूसरे पृथ्वी एवं प्लूटो के रास्ते में मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस एवं नेपचून पांच ग्रह आते हैं। तो फिर इसका प्रभाव हम सब पर कैसे पड़ सकता है? फैसला आपके हाथ में है...परन्तु अब ज्योतिषियों की पत्रियों का क्या बनेगा? ग्रह तो 9 से 8 ही रह गए। अब ज्योतिषियों को अपनी फीस तो कम करनी ही पड़ेगी। वैज्ञानिकों ने प्लूटो से पदवी छीन ली तथा दूसरी ओर बेचारे ज्योतिषियों को अपनी फीस अवश्य कम करनी पड़ जाएगी। मैं तो कभी किसी ज्योतिषी के पास गया नहीं, जो जाते हैं वे इस बारे में सोच लें। परन्तु 'खगोल विज्ञान संगठन ने प्लूटो को 'बौना ग्रह' कहने के बजाए इसका नाम 'प्लूटॉयड' रख दिया तथा इस जैसे जितने भी अन्य अंतरिक्षीय पिण्ड खोजे जाएंगे....उन सभी को 'प्लूटॉयड' अर्थात् 'प्लूटो जैसे' ही कहा जाया करेगा। दोस्तो, यात्रा जारी है....प्लूटो से आगे क्या है.... जानने के लिए हमारे साथ आगामी यात्रा के लिए तैयार रहना....।

हिन्दी अनुवाद बलवंत सिंह लैक्चरार
9416324802

पृष्ठ 17 का शेषः (वृद्धावस्था में)

.......फलस्वरूप दिमाग की कोशिकाएं अप-विकसित (Degenerate) होने लगती हैं तथा स्मरण-शक्ति कम होने लगती है। प्रसिद्ध विज्ञानी डा. बी.रामामूर्ति, अध्यक्ष, वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ न्यूरो सर्जनज़ का कथन है कि ढलती हुई आयु में यद्दाश्त को कायम रखने के लिए वह आवश्यक है कि व्यक्ति स्वयं को रचनात्मक कार्यों में 'उलझाए' रखे तथा बाह्य चुनौतियों का डट कर सामना करे।

वृद्धवस्था में शारीरिक कसरत की कमी भी स्मरण शक्ति के पतन का कारण बन सकती है। 'वैस्ट आस्ट्रेलियन सैंटर फॉर हैल्थ एण्ड एजिंग' की एक टीम ने यह पता लगाया है कि लगातार नियमित कसरत करने वालों की स्मरण शक्ति अन्य लोगों की तुलना में बेहतर रहती है। संस्था के निदेशक लियोन जलिकर के अनुसार 50 वर्ष की आयु पार करने के उपरान्त रोजाना 20 मिनट कसरत करने से यद्दाश्त तीव्र बनी रह सकती है; इस के लिए हल्का व्यायाम, जैसे कि चलना अथवा नृत्य करना ही पर्याप्त है।

यदि मस्तिष्क की कोशिकाओं (नर्वस टिशू) को पर्याप्त मात्रा में खुराक एवं ऑक्सीजन मिलती रहे तो यद्दाश्त बरकरार रहती है। कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता उक्त तथ्य की पुष्टि करते हैं। उनका कथन है कि संतोषजनक नाश्ता करने से स्मरण-शक्ति कायम रहती है, क्योंकि जी भर भोजन करने के पश्चात् मस्तिष्क में सिरोटोनिन नामक हारमोन का स्तर बढ़ जाता है, जो कि स्मरण-शक्ति में वृद्धि करता है तथा हिंसक अथवा पक्षपातपूर्ण व्यवहार को भी रोकता है.....परन्तु खानपान के मामले में संयम अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि मोटापा यद्दाश्त का पक्का शत्रु है।

हम इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि याद्दाश्त को कायम रखने के लिए एक निश्चित जीवन ढंग को अपनाने की आवश्यकता होती हैं अतः यदि व्यक्ति विश्वसनीय ढंग से प्रयत्न करे तो वह अपनी स्मरण-शक्ति को ढलती हुई आयु की परछाईयों से बचा कर रख सकता है। *-हिन्दी अनुवाद*

बलवन्त सिंह लैक्चरार

अंधविश्वास की रात अब खत्म हो

-अज्ञात

ऐसी मान्यताएं व रूढ़ियां जिनकी वास्तविकता के संबंध में कोई परीक्षण न हुआ हो, जिन पर लोग बरसों से आंख मूंद कर भरोसा करते हैं, उसे अंधविश्वास कहा जा सकता है। ऐसी प्राचीन मान्यताएं जिससे किसी व्यक्ति को आर्थिक, शारीरिक, मानसिक प्रताड़ना का शिकार होना पड़े, उनकी प्रगति पर नकारात्मक असर पड़े, ऐसे अंधविश्वासों व उनके परिणामों पर विचार होना तथा उन्हें समाज से समाप्त करने के प्रयास होना आवश्यक है। समाज में विभिन्न आयु, वर्ग, शिक्षा, दीक्षा, भिन्न पृष्ठभूमि, आय, वैचारिक आधार वाले व्यक्ति होते हैं। साथ ही विभिन्न परम्पराओं के वाहक होते हैं मानव सभ्यता के प्रारंभिक काल में मनुष्य को विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं, सूर्य, चंद्रग्रहण, आपदाओं, बाढ़, अकाल, सूखा, भूकम्प, ज्वालामुखी, बीमारियों, महामारियों के संबंध में कुछ जानकारी नहीं थी और न ही उसके पास इन परिवर्तनों के अध्ययन के कुछ साधन थे। इसलिए वह सभी प्रकार विपरीत परिस्थितियों, आपघातों, विपदाओं, बीमारियों, दुर्घटनाओं के लिए किसी अदृश्य शक्ति, जादू-टोना, श्राप को ही जिम्मेदार मानता था। कभी-कभी किसी एक व्यक्ति को भी मनहूस या दुर्भाग्यशाली ठहराकर उसे ही इनके लिए जिम्मेदार करार दिया जाता था। धीरे-धीरे अनुभवों व परीक्षण से मानव ने अलग-अलग प्रकार की आपदाओं के कारण ज्ञात किए, उनसे बचने के उपाय पता किए, उनके उपचार व निदान के रास्ते ढूंढे। विकास की वह यात्रा अब तक चल रही है, लेकिन शिक्षा का पर्याप्त प्रचार-प्रसार न हो पाने से लोगों में जागरूकता व वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी है। जिसके कारण अब भी ग्रामीण आंचल के लोग सुनी-सुनाई बातों, अफवाहों पर जल्दी यकीन कर लेते हैं। बहुत से पढ़े-लिखे व्यक्ति भी जादू-टोने के अस्तित्व के होने या न होने के संबंध में भ्रम में रहते हैं। प्राचीन किवदंतियों के आधार पर पारम्परिक कथाओं से प्रभावित कुछ लोग जहां जादू-टोना, काला जादू को आज भी प्रभावी मानते हैं। सावन के माह में छत्तीसगढ़ के गांवों में घरों के बाहरी दीवारों पर विभिन्न आकृतियां बना दी जाती हैं ताकि घरों में कोई जादू-टोना न कर सके। हरियाली अमावस्या में तो गांव को तंत्र-मंत्र से बांधने का काम बैगा को ग्रामीण पैसा एकत्र करके सौंपते हैं, ताकि वह गांव को बांध दे। वह गांव के बाहर कोनों में कीलें गाड़ता है। जादू-टोने से बचने के लिए लोग घरों में नीम की डंगाल, पत्तियां बांधते हैं। यही नहीं बैगाओं ने ही इस अंधविश्वास को बढ़ावा दिया है कि हरियाली अमावस्या की रात जादू-टोना करने वाली महिलाएं रात में शक्ति प्राप्त करने के लिए आधी रात को अनुष्ठान करती हैं तथा उनकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है तथा अनिष्ट के डर से हरेली की रात को सन्नाटा छा जाता है। घरों के पट बंद हो जाते हैं। कोई मुसीबत का मारा आवाज दे, लाख बार दरवाजा दस्तक दे कोई दरवाजा नहीं खोलता। कुछ दिनों पहले एक शिकायत मिली थी कि कांकेर के पास अंगादेव का पालकी को लोग चलने वाले एक परिवार के घर में जबरदस्ती घुस जाते थे तथा उस पर जादू-टोने करने के जुर्म में जुर्माना व सजा दी गई। आज भी अनेक लोगों की हत्या जादू-टोने के आरोप में हो जाती है। अनेक महिलाएं प्रतिवर्ष टोनही के आरोप में प्रताड़ित होती हैं। कुछ मार दी जाती हैं तो कुछ बेईज्जत करके गांव से निकाल दी जाती हैं। पिछले कुछ दिनों पहले की घटना है कि कुनकुरी में एक

महिला को खेत जोतने के आरोप में यह मानकर बैलों के साथ बांध कर खेत के पांच चक्कर लगाने की सजा दी, क्योंकि उनका मानना था कि महिला के खेत जोतने से इंद्र देवता नाराज हो जाएंगे। कृषि आधारित क्षेत्र में पानी का गिरना एक बड़ी समस्या हो जाती है, लेकिन पानी गिराने के अनुष्ठान के नाम पर इंद्र देवता को रिझाने के लिए महिलाओं को निर्वस्त्र होकर हल चलाने की सजा भी यही पंचायतें सुना रही हैं। कहीं कहीं व्यक्ति को अपनी निर्दोषिता साबित करने के लिए गर्म पानी में हाथ डालना, लाल गर्म लोहे को हाथ से पकड़ना पड़ता है। उसे यह विश्वास दिलाया जाता है कि यदि वह निर्दोष हो तो उसके हाथ नहीं जलेंगे। अनिष्ट उतारने के लिए बच्ची की कुत्ते से शादी करने की घटनाओं की खबर अधिक मिली है। गांवों में कई बार मकान, दुकान बांधने का प्रचार, तो कभी टोना-टोटका के लिए किसी ग्रामीण के घर के सामने नींबू, मिर्च सिंदूर रखा मिल जावे तो टोने के संदेह में व्यक्ति किसी अनिष्ट की आशंका से सिहर उठता है। जबकि मात्र शरारतपूर्ण कार्य होता है। जो व्यक्ति को मानसिक रूप से परेशान करने के लिए किया जाता है और आशंकित व्यक्ति झाड़-फूंक, बैगा के चक्कर काटने को मजबूर हो जाता है, जबकि इसमें कोई विचलित होने वाली बात नहीं होती। वास्तव में जादू-टोना एक काल्पनिक धारणा है। विभिन्न अनुसंधानकर्ताओं, बुद्धिजीवियों तथा घूम-घूम कर जादू के शो दिखलाने वाले व्यवसायिक जादूगरों ने भी जादू-टोने को काल्पनिक माना है, वे भी इसे चालाकी या भ्रम ही करार देते हैं। व्यक्ति को कि सी भी क्षेत्र में यदि सफलता प्राप्त करनी हो तो चाहे वह कृषि, विज्ञान, शिक्षा, उद्योग, अनुसंधान का क्षेत्र हो, उसे कठोर परिश्रम व लगन से ही सफलता मिल सकती है। मेहनत योजनाबद्ध कार्य उचित रणनीति के बगैर कोई रास्ता रातों-रात सफलता के दरवाजे तक नहीं जाता, कई स्थानों से खासकर ग्रामीण आंचल से टोनही प्रताड़ना की खबरें मिलती हैं, जिसमें किसी महिला को सामूहिक अंधविश्वास के कारण खतरनाक महिला के रूप में घोषित कर दिया जाता है। उस पर अनेक प्रकार के आरोप व पाबंदी लगाई जाती है। कई बार तो बाढ़ आने, फसल न होने, महामारी फैलने में भी उसे आरोपी घोषित कर दिया जाता है। इन मामलों में कई बार प्रताड़ना से उस महिला की मृत्यु हो जाती है अथवा बदनामी व अपमान से वह खुदकुशी कर लेती है, जबकि ऐसे प्रकरणों में वे अधिकांश गांव के बाहर तक कानोंकान खबर नहीं होती है, जबकि यह सिर्फ अंधविश्वासों पर टिकी हुई भ्रामक धारणा है, कोई भी महिला इतनी चमत्कारिक रूप से शक्ति सम्पन्न नहीं होती कि वह दूसरे को जादू-टोने से नुक्सान पहुंचा सके, वह तो आत्मरक्षा करने में भी समर्थ नहीं होती। दुख की बात यह है कि आज भी ऐसी घटनाओं में कमी नहीं हुई है।

पहले यह माना जाता था कि ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए किसी प्रिय वस्तु की भेंट देनी चाहिए, बाद में विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए जानवरों की तथा मनुष्य की बलि भी दी जाने लगी। मध्यकाल में ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए दूध, घी, फल, अन्न भी चढ़ाया जाने लगा, जोकि सहज रूप से स्वीकार रहा, लेकिन आज भी कई स्थानों पर नरबलि की घटनाओं के समाचार मिलते हैं, जिसमें बच्चों की हत्या कर देते हैं व इस भ्रम में रहते हैं कि वे बलि देने से धन-धान्य व चमत्कारिक शक्तियों से परिपूर्ण हो जाएंगे। इस अंधविश्वास के चलते भी प्रतिवर्ष अनेक लोगों की हत्या हो जाती है, जिससे कई परिवारों का सुख चैन छिन जाता है, वहीं अंधविश्वास के कारण हत्या के दोषी लोग अंततः कानून की सजा भुगतते हैं तथा उनका अंतिम समय जेल की चारदिवारी में गुजरता है या मृत्युदंड की सजा पाते हैं। विकास की रोशनी से दूर कई स्थानों में आज भी छोटे बच्चे के रोने, बीमार पड़ने पर यह माना जाता है कि उसे किसी व्यक्ति की नजर लग

शेष पृष्ठ 49 पर..

तर्कशील हलचल

पूण्डरी में सोसायटी के सेमिनार का आयोजन

दिनांक 20-9-2015 को तर्कशील सोसायटी हरियाणा का एक सेमिनार एवं राज्य कमेटी की द्विमासिक बैठक सैनी धर्मशाला-पूण्डरी , जिल कैथल में सोसायटी के प्रदेशाध्यक्ष श्री गुरमीत सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

सोसायटी की बैठक में समसामयिक विषयों पर चर्चा, तर्कशील विश्व-दृष्टिकोण, मानसिक रोगों के बारे में जानकारी एवं तर्कशील केंद्र के निर्माण इत्यादि विषयों के एजेंडा पर मुख्य रूप में चर्चा की गई। बैठक में प्रख्यात लेखक एवं चिंतक डा. कलबुर्गी की अज्ञात व्यक्तियों द्वारा निर्मम हत्या पर शोक प्रस्ताव भी पारित किया गया।

सेमिनार का प्रारम्भ करते हुए तर्कशील पत्रिका के संपादक प्रा. बलवन्त सिंह ने मिडब्रेन एक्टीवेशन एवं ब्रेन पीडिया जैसी संस्थओं की कार्यप्रणाल के बारे में समझाते हुए इन की लूट से बचने के लिए जनता को जागरूक करने का आह्वान किया। श्रीमती शशिबाला ने पर्दा-पथा पर विचार रखते हुए महिलाओं को अपने अधिकारों की रक्षा करने की प्रेरणा दी। डा. महेंन्द्र विवेक ने अपनी बातचीत में आजादी आंदोलन में हरियाणा वासियों का योगदान एवं विशेषतः पूण्डरी इलाके के लोगों का 1857 की क्रांति में योगदान को रेखांकित करते हुए समझाया कि सच्चाई एवं नैतिकता का संगम ही वास्तविक तर्कशीलता है।

उत्तर प्रदेश से आए तर्कशील साथी ने सेमिनार में अपनी बात रखते हुए इस बात का प्रण लिया कि वे अपने प्रदेश में भी जागरूक साथियों से मिलकर एवं संगठन बना कर वैज्ञानिक चिन्तन की आवाज़ को दूर-दूर तक पहुंचाएंगे। इसके अतिरिक्त सेमिनार में सुभाष तितरम, मान सिंह पूण्डरी, कुलदीप सिंह, राकेश कुमार ढाण्ड एवं कृष्ण हलवाई ने भी अपने विचार रखे।

मां. राकेश कुमार ढाण्ड एवं अशोक कुमार हिसार ने जादू के कुछ ट्रिक दिखा कर तथा फिर उनके रहस्यों को समझा कर सेमिनार में उपस्थित साथियों का मनोरंजन भी किया। इस सम्मेलन की विशेषता यह रही कि इस में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भी भागीदारी की।

अंत में गुरमीत सिंह ने अध्यक्ष के रूप में संबोधन करते हुए कहा, सत्य के पथ पर चलने वाले हमेशा ही अपने सामने आने वाली विकट से विकटतम परिस्थितियों में भी अपना हैसला बरकरार रखते हुए हमेशा आगे बढ़ते रहे है। आज तर्कशील के समाने भी एक चुनौतीपूर्ण समय है और हमने वैज्ञानिक सत्य के झण्डे को बुलन्द करके आगे ही आगे बढ़ते जाना है।

तर्कशील सोसायटी की पूण्डरी इकाई द्वारा आयेजित कार्यक्रम

सोसायटी की ओर से बीपी आर सी.सै. स्कूल में 'चमत्कारों का पर्दाफाश' कार्याक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में तर्कशील पत्रिका के संपादक बलवंत सिंह राज्य कमेटी सदस्य बलजीत भारती व कृष्ण हलवाई व सदस्य रामफल सैनी ने भाग लिया।

आज के कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को आजकल मीडिया में बहुप्रचारित 'मिड-ब्रेन

एक्टिवेशन' अथवा 'ब्रेन पीडिया' के प्रति सचेत करना था। आजकल ब्रेन पीडिया के नाम पर बच्चों से भारी फीस लेकर उन्हें बिना देखे अथवा सूंघ कर पढ़ना सिखाने का दावा किया जा रहा है। तर्कशील सोसायटी हरियाणा अलग-अलग स्थानों पर जाकर इस प्रकार की अवैज्ञानिक बातों का खण्डन कर रही है। इसके साथ-साथ उक्त लोगों के पाखंड की सच्चाई छात्रों के समक्ष बताने किए तर्कशील सोसायटी द्वारा प्रशिक्षित दो बच्चों मानवी व कनिका ने आंखों पर पट्टी बांधकर पढ़कर सुनाया। यही नहीं सोसायटी सदस्य मान सिंह न आंखों पर पट्टी बांधकर मोटर साइकिल चला कर दिखाई। तत्पश्चात् बच्चों को यह समझाया गया कि यह मात्रा अभयास द्वारा किया जा सकता हैं ताकि इसमें किसी प्रकार का कोई चमत्कार नहीं है। दरअसल दुनिया में किसी के पारस कोई दैवीय या चमत्कारिक शक्ति नहीं होती । तर्कशील सोसायटी हरियाणा ऐसे किसी भी व्यक्ति को 5 लाख रूपये देने की घोषण करती हैं, जो किसी भी प्रकार का चमत्काार दिखाने का दावा करता हो।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा का आह्वान है कि लोग किसी भी प्रकार के पाखंड में न आएं तथा हर बात को तर्क व विज्ञान की कसौटी पर परखें। इस अवसर पर प्राानाचार्या श्रीमती सीमा शर्मा व अर्थशास्त्र प्राध्यापिका शशि बाला ने भी अपने विचार रखे।

आखों पर पट्टी बांध कर और नाक द्वारा सूंघ कर पढ़ने का पर्दाफाश

पूंडरीः तर्कशरील सोसायटी हरियाणा (रजि) द्वारा आर एन पब्लिक स्कूल पूण्डरी में वहम भ्रम एवं अंधविश्वास का पर्दाफाश करते हुए सोसायटी के कार्याकर्ताओं ने विद्यालय के प्रांगण में आंखों पर पट्टी बांधकर मोटरसाइकिल चलाई। और आंखों पर पट्टी बांधकर एवं सूंघकर पढ़ने की चालाकी के बारे में जानकारी दी गई। ताकि स्कूल के विद्यार्थी किसी भी पाखंडी के जाल में न फंसें।? विद्यालय के प्रिंसीपल श्रीमती वंदना मंगल के सहयोग से सोसायटी की पूण्डरी इकाई के सदस्यों द्वारा इस कार्याक्रम का आयोजन किया गया। जिसके तहत कुछ संस्थाओं द्वारा विद्यार्थियों को कुछ दिन की ट्रेनिंग दे कर ब्रेलन को एक्टीवेट करने के नाम पर एक नई प्रकार की ठगी करने का खुलासा करके कलोगों को सच्चाई से परिचित करवाया गया।

सोसायटी के संस्थापक एवं सपूर्वप्रधान श्री राजा राम जो कि विशेष तौर पर बुलाया गया। उन्होंने अनेक चमत्कारी ट्रिक दिखाते हुएकहा कि विश्व में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके पास अलौकिक शक्ति हो। प्रकृति के अनेक रहस्य हैं। अनेक रहस्यों पर पर्दा हट चुका है। शेष को विज्ञान धीरे-धीरे समझने का प्रयास कर रहार है। तंत्र-मंत्र के नाम पर ठगी की जाती है। इसी प्रकार कुछ लोग बच्चों का दिमाग तेज करने के नाम पर नई लूट का जाल बिछा रहे हैं । बच्चों को सूंघ कर पट्टी बांधकर पढ़ाया गया। और इसका वैज्ञानिक कारण भी बताया गया। साथी मान सिंह सैणी एवं कृष्ण राजों द ने आंखों पर पट्टी बांधकर मोटर साईकिल चलाई। विद्यार्थियों को वैज्ञानिक एवं तार्कि ढंग से एमझना सिखाया गया। नई लूट के धंधे से बचने के लिए अपील की गई। प्रिंसीपल साहिबा ने भी बच्चों को अपने अंदर तर्कशक्ति पैदा करने की बात कही। अंत में उन्होंने टीम का धन्यवाद किया। इस टीम में श्री राजा राम हंडियाया कृष्ण कैथल, राजेश---- मानसिंह सैणी कृष्ण हलवाई, मानवी तथा अश्विनी गिरधर शामिली थे। विद्यालय के पूरे स्टाफ का बहुत सहराहनी योगदान रहा और ऐसे और भी कई कार्याक्रम करवाये जाने की सहमति बनी।

कोई नारी टोनही नहीं

– डॉ. दिनेश मिश्र

(बलौदाबाजार में व्याख्यान)

भवन में आयोजित व्याख्यान में अंधविश्वास निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा-अशिक्षा, गरीबी, चिकित्सा सुविधाओं की अनुपलब्धता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में लोग तरह-तरह के अंधविश्वासों के फेर में पड़ जाते हैं, वहीं कई बार शिक्षित लोग भी चमत्कारिक सफलता प्राप्त करने के लिए चमत्कार की धारणा व कथित रूप से अद्‌भुत शक्ति के दावों व भ्रामक विज्ञापनों पर यकीन कर लेते हैं, जिस कारण उन्हें बाद में शारीरिक व आर्थिक नुक्सान उठाना पड़ता है।

डा. दिनेश मिश्र ने कहा-देश में जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक की मान्यताओं एवं डायन के संदेह में प्रताड़ना के मामलों की भरमार है। टोनही/डायन प्रताड़ना के मामलों में अंधविश्वास व सुनी-सुनाई बातों के आधार पर किसी निर्दोष महिला को टोनही/डायन घोषित कर दिया जाता है तथा उस पर जादू-टोना कर बच्चों को बीमार करने, फसल खराब होने, व्यापार-धंधे में नुक्सान होने के कथित आरोप लगाकर उसे तरह-तरह की शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना दी जाती है। कई मामलों में आरोपी महिला को गांव से बाहर निकाल दिया जाता है। बदनामी व शारीरिक प्रताड़ना के चलते कई बार पूरा पीड़ित परिवार स्वयं गांव से पलायन कर देता है। कुछ मामलों में महिलाओं की हत्याएं भी हुई हैं अथवा वे स्वयं आत्महत्या करने को मजबूर हो जाती हैं, जबकि जादू-टोना के नाम पर किसी भी व्यक्ति को प्रताड़ित करना गलत तथा अमानवीय है। वास्तव में किसी भी व्यक्ति के पास ऐसी जादुई शक्ति नहीं होती कि वह दूसरे व्यक्ति को जादू से बीमार कर सके या किसी भी प्रकार का आर्थिक नुक्सान पहुंचा सके। जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, टोनही, नरबलि के मामले सब अंधविश्वास के ही उदाहरण हैं। विदर्भ, छत्तीसगढ़, ओडिया, झारखंड, बिहार, आसाम सहित अनेक प्रदेशों में प्रतिवर्ष टोनही/डायन के संदेह में निर्दोष महिलाओं की हत्याएं हो रही हैं, जो सभ्य समाज के लिए शर्मनाक हैं। नेशनल क्राईम रिकार्ड ब्यूरो ने सन् 2001 से 2012 तक 2200 महिलाओं की मृत्यु डायन प्रताड़ना के कारण होना माना है, जबकि अधिकतर मामलों में पुलिस रिपोर्ट ही नहीं हो पाती। छत्तीसगढ़ में 1260 मामलों में 205 मामलों में टोनही/डायन के संदेह में हत्या की घटना की प्रमाणिक जानकारी है।

गांवों में किसी व्यक्ति के बीमार होने, चाहे वह बच्चा ही क्यों न हो अथवा बुजुर्गवार व चिकित्सक की सलाह लेकर उसका उपचार कराना चाहिए, क्योंकि बीमारियां सूक्ष्म जीवाणु, विषाणु के प्रकोप से होती हैं, जिनका निदान समय रहते कर लिए जाने पर पूर्णतः किया जा सकता है। बीमारियों के उपचार के लिए जादू-टोना, झाड़-फूंक की मदद लेने से बचना चाहिए। पशुओं की बीमारियों, दूध कम देने आदि का कारण भी अलग-अलग होता है। इसी प्रकार अकाल पड़ने, पानी कम गिरने, बाढ़ आने, गर्मी पड़ने, भूकंप आने का कारण भी प्राकृतिक है। किसी महिला को डायन, टोनही, बैगिन कहना गलत है, क्योंकि जो महिला अपनी स्वयं की परिवार वालों की रक्षा नहीं कर सकती, वह किसी दूसरे का भला व बुरा करने में समर्थ कैसे हो सकती है।

डा. मिश्र ने कहा-भूत-प्रेत जैसी मान्यताओं का कोई अस्तित्व नहीं है। भूत-प्रेत बाधा व भुतहा घटनाओं के रूप में प्रचारित घटनाओं का परीक्षण करने में उनके मानसिक विकारों, अंधविश्वास तथा कहीं-कहीं पर शरारती तत्वों का हाथ पाया गया। आज टेलीविज़न के सभी चैनलों पर भूत-प्रेत,

अंधविश्वास बढ़ाने वाले धारावाहिक प्रसारित हो रहे हैं। ऐसे धारावाहिकों का न केवल जनता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, बल्कि छोटे बच्चों व विद्यार्थियों पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला एवं सत्र न्यायाधीश क `एल चरयाणी ने की। जिला न्यायाधीश केएल चरयाणी ने कहा कि डा. दिनेश मिश्र एक आंखों के ही डाक्टर नहीं हैं, बल्कि वे हमारे अंदर अंधविश्वास के पर्दे को भी सर्जरी कर अंधविश्वास को दूर कर हमारी कुदृष्टि को ठीक करते हैं। उन्होंने कहा कि बिना शंका के हमें यह मानना चाहिए कि टोनही का कोई अस्तित्व नहीं है।

इस अवसर पर अमर कलैक्टर मुरली कल्याणी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विमल बैस, महिला अधिवक्ता रूबी वर्मा ने संबोधित किया। कार्यशाला की व्यवस्था जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव कु. पुष्पलता मारकण्डे द्वारा की गई तथा आभार प्रदर्शन जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला बाल विकास अधिकारी श्रीमती आई. टोप्पो ने किया।

टोनही के संदेह में प्रताड़ित परिवार से भेंट

-डॉ. दिनेश मिश्र

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति ने 'कोई नारी टोनही नहीं' अभियान के अन्तर्गत बलौदा बाजार लवन (छत्तीसगढ़) के निकट ग्राम खैरा का दौरा किया। जादू-टोने के संदेह में पूर्व में प्रताड़ित परिवार से भेंट की।

डॉ.दिनेश मिश्र ने बताया बलैदा बाजार लवन के नजदीक ग्राम खैरा में टोनही के संदेह में प्रताड़ित श्यामकुँवर बंजारे व उसके परिजनों से भेंट की। श्यामकुँवर के पुत्री ने बताया कि कुछ वर्ष पूर्व भी उस घटना की याद करके आज भी वे सिहर जाते हैं कि किस तरह पड़ोस के ही ग्यारह ग्रामीण मंशाराम बंजारे के घर में जबरदस्ती घुसकर, उनके मकान का दरवाजा तोड़कर श्यामकुँवर बंजारिन पर जादू-टोने से बीमार करने का आरोप लगाया तथा उसके साथ बुरी तरह मारपीट की। उन्हीं में से एक ग्रामीण ने कपड़े काटने की कैंची उसकी आंखों में घुसा दी तथा जब वह पीड़ा से चीखने लगी तब उसकी जीभ को कैंची से काट दिया। यही नहीं, जब श्यामकुँवर की चीखें सुनकर उसक पति मंशाराम उसे बचाने आया तब उसके साथ भी मारपीट की गई । उसकी आँखों मैं भी कैंची घुसा दी गई। गांव में हड़कंप मचने के बाद उन्हें रायपुर लाया गया तथा उनका उपचार भी हुआ पर इस घटना के बाद से दृष्टिबाधित होने के कारण न तो वे अकेले कहीं आने- जाने लायक बचे हैं और न मेहनत मजदूरी कर जीवन-यापन योग्य बचे हैं।

डॉ. मिश्र ने बताया कि वह दंपति अपनी पुत्री के साथ गांव में रहता है तथा कोई भी काम-काज करने में असमर्थ है। मंशाराम की पत्नी श्यामकुँवर तो न किसी को पहचान पाती है तथा जीभ कटने के कारण नही सही ढंग से बोल भी नहीं पाती हैं। खैरा में ग्रामीणों से बातचीत करते हुए डॉ. मिश्र ने कहा कुछ लोगों के अंधविश्वास से एक परिवार बरबाद हो गया, उन्होंने खैरा के पूर्व सरपंच राम यादव, मंशाराम के पुत्र राजकुमार से भी जानकारी ली तथा प्रताड़ित परिवार को हरसंभव मदद की पेशकश की। डॉ. मिश्र ने कहा किसी व्यक्ति का अंग भंग करना, उसके बुरी तरह मारपीट करना गंभीर अपराध है।

उन्होंने बताया कि मनुष्य व पशुओं को होने वाली बीमारियां अलग-अलग कारणों से होती हैं। बैक्टीरिया, फंगस, वायरस संक्रमण फैलाते हैं। कुपोषण, दुर्घटना, बीमारियों एवं विकलांगता के कारण है। जादू-टोने, तंत्र-मंत्र का कोई अस्तत्व नहीं है तथा इनसे किसी को बीमार करने, परेशान करने की मान्यता पूरी तरह अंधविश्वास है। ग्रामीणों को ऐसे अंधविश्वास में नहीं फंसना चाहिए। आरोपियों को भले ही कानून से सजा मिलेगी पर जिन निर्दोषों का जीवन ऐसी घटनाओं से तबाह होता है उसकी क्षतिपूर्ति किसी भी तरह से संभव नहीं है।

टोनही प्रताड़ना के मामलों के निराकरण हेतु फास्ट ट्रेक कोर्ट हो–डा. दिनेश मिश्र

अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डा. दिनेश मिश्र ने प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. रमन सिंह से मिल कर टोनही प्रताड़ना के मामले को फास्ट ट्रेक कोर्ट में चलाए जाने की मांग की तथा प्रताड़ित महिलाओं को मुआवजा व पुनर्वास के लिए योजना बनाए जाने हेतु चर्चा की।

डा. दिनेश मिश्र ने बताया कि प्रदेश में सन् 2005 से जून 2015 तक 1268 मामले टोनही प्रताड़ना के सामने आए हैं तथा 332 मामले अभी विभिन्न न्यायालयों में लंबित हैं। उपरोक्त मामले लगभग 10 वर्षो से भी अधिक समय तक निराकृत नहीं हैं, जिसके कारण न ही उन महिलाओं को मुआवजा मिल पाया है न ही पुनर्वास हो पाया है तथा न ही कोई अन्य मदद मिल पाई है, जिससे वे गांवों में बहिष्कृत जीवन जीने को मजबूर हैं।

डा. दिनेश मिश्र ने जानकारी दी कि उन्होंने मुख्यमंत्री को बताया कि टोनही प्रताड़ना के कारण ग्रामीण आंचल में गरीब, निराश्रित, विधवा महिलाओं को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जादू-टोने के संदेह में प्रताड़ित महिलाओं के हित व जीवनयापन के लिए इन 6 बिंदुओं पर ध्यान आकर्षित किया:

1. टोनही प्रताड़ना के प्रकरणों में राज्य के विशेष कानून के अनुसार कार्रवाई हो।
2. पीड़ित महिलाओं के पुनर्वास हेतु आर्थिक मदद दी जाए।
3. राज्य शासन द्वारा आसानी से पीड़ित महिलाओं तथा लंबित प्रकरणों की सूची तैयार कराई जा सकती है, जिसके अनुसार प्रताड़ित महिलाओं को कम से कम 25 हजार रुपए उनके जीवन-यापन/पुनर्वास हेतु दिया जा सकता है।
4. आरोपियों को सजा दिलाने के लिए टोनही प्रताड़ित महिलाओं के प्रकरण 'फास्ट ट्रेक कोर्ट' में चलाने की व्यवस्था की जा सकती है।
5. टोनही प्रताड़ित महिलाओं को आंगनवाड़ी केंद्रों या स्थानीय स्तर पर चल रहे शासकीय परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है, ताकि उनके सामाजिक बहिष्कार जैसी स्थिति का निवारण हो।
6. टोनही प्रताड़ित महिला के संरक्षण हेतु स्थानीय पुलिस थाने/चौकी को निर्दिष्टि किया जा सकता है कि वे प्रताड़ना की पुनरावृति रोकने एवं महिला व उसके परिवार के पुनर्वास में मदद करे।

कविता

–हरिवंशराय बच्चन

ना मस्जिद अजान देती ना मंदिर के घंटे बजते
ना अल्ला का शोर होता, ना राम नाम भजते
ना हराम होती, रातों की नींद अपनी
मुर्गा हमें जगाता सुबह के पांच बजते
ना दीवाली होती, और ना पठाखो बजते
ना ईद की अलामत ना बकरे शहीद होते
तू भी इन्सान होता, मैं भी इन्सान होता
.........काश कोई धर्म ना होता
.........कोश कोई मजहब ना होता
ना अर्घ देते, ना स्नान होता
ना मुर्दे बहाए जाते, ना विसर्जन होता
जब भी पयास लगती, नदिओं का पानी पीते
पेड़ों की छांव होती, नदिओं का गर्जन होता,
ना भगवानों की लीला होती,
ना अवतारों का नाटक होता,
ना देशों की सीमा होती,
ना दिलों का फाटक होता
तू भी इन्सान होता, मैं भी इन्सान होता
कोई मस्जिद ना होती, कोई मंदिर ना होता
कोई दलित ना होता, कोई काफिर ना होता
कोई बेबस ना होता कोई बेघर ना होता
किसी के दर्द से कोई, बेखबर ना होता
ना ही गीता होती, और ना कुरान होता
ना ही अल्ला होता, ना भगवान होता
तुझको जो जख्म होता, मेरा दिल तड़पता,
ना मैं हिन्दू होता, ना तू मुसलमान होता,
तू भी इन्सान होता, मैं भी इनसान होता

बाबाओं के काले कारनामे

वीडियो बना कर करता रहा ब्लैकमेल

घामड़ौज गांव के जीवन दास स्मृति आश्रम से पकड़े गये यौन शोषण के आरोपी बाबा ने कबूला कि उसने पीड़ता के साथ दुष्कर्म का वीडियो अपने मोबाइल फोन से बनाया था। इसी वीडियो को प्रसारित करने का भय दिखकर वह किशोरी को ब्लैकमेल कर रहा था। पुलिस को बाबा के पास दो मोबाइल फोन जब्त किए हैं। उसकी कॉल डिटेल और वीडियो क्लिप खंगाली जा रही है। आश्रम को रविवार को ही सील कर दिया गया था।

आश्रम में बाबा के कारनामे के खुलासे के बाद एक दिन की पुलिस रिमांड में आरेपी बाबा विष्णु चैतन्य ने कबूला कि करीब आठ महीने पहले किशोरी के साथ रेप की वीडियो क्लिप बना ली थी । वह पीड़िता को वीडियो क्लिप सार्वजनिक करने की धमकी देकर उसके साथ दुष्कर्म करता था। खुलासे के बाद रविवार देर रात पुलिस ने बाबा के आश्रम की तलाशी ली। आश्रम की ऊपरी मंजिल पर बाबा के कमरे की आंतरिक सज्जा और विलासिता की चींजे देखकर पुलिस भी दंग रह गई । पुलिस को यहां से कई आपत्तिनक वस्तुएं बरामद हुई हैं। पुलिस ने यहां कई साक्ष्य जुटाने के बाद आश्रम को सील कर दिया। पुलिस को आशंका है कि बाबा ने और कई छोटी बच्चियों को अपने जाल में फंसाकर उनसे यौनाचार को अंजाम दिया है। आश्रम के सच के खुलासे के बाद संस्थान के पदाधिकारी भी सकते में हैं। सोमवार को बाबा की रिमंड पूरी होने के बाद भोंडसी थाना पुलिस ने आरोपी बाबा को कोर्ट में पेश किया जहां से उसे 14 दिन की जेल भेज दिया गया।

अमर उजाला : 20-72015 व 22-7-2015

तांत्रिक के जाल में फंसी महिला ने लगाई फांसी

रोहतक 23 सितंबरः तांत्रिक के जाल में फंसी एक महिला ने सोमवार कोफांसी लगा कर आत्महत्या करने का मामला सामने आया है। तांत्रिक महिला को लड़का होने की दवाई देकर ऐंठता रहा। जब ल़का नहीं हुआ तो तांत्रिक उसे आत्महत्या करने के लिए मजबूर करने लगा जिसके चलते महिला ने यह कदम उठाया हैं। गांव सुनारिया निवासी सुरेंद्र की पत्नी पूनम ने सोमवार को घर पर फांसी लगा ली। परिजनों को घटना का पता तब चला जब परिजन उसके कमरे में गए तो उसे फंदे पर लगा पाया । थाना शिवाजी कालोनी पुलिस मौके पर पहुंची और शव को फंदे से नीचे उतरवाया। मृतक के पति ने बताया कि माड़ौदी निवासी देवेंद्र व उसकी बेटी उसकी पत्नी को शीला बाई पास के पास सुनील व एक अन्य तांत्रिक के पास लेकर जाते थे। महिला की शादी 10 साल पहले विनोद के साथ हुई थी । विनोद से उसकी तीन लड़कियां हैं। लड़का नहीं होने पर माड़ौदी निवादी देवेंद्र व उसकी बेटी उसे तांत्रिकों के पास ले जाने लगे। इसके बावजूद लड़का न होने की दशा में दोनों पूनम को प्रताड़ित करते थे। पूलिस ने एफ.आई.आर. दर्ज कर ली है।

पंजाब केसरी 29-4-2014

अनमोल वचन

सौभाग्यशाली जानवर, तुझे कभी प्रार्थनाएं नहीं दोहरानी पड़ीं, न ही तुझे पूजा-पाठ में खींच कर ले जाया गया है।

-जॉन ऑफ़ लाकलैंड

स्वास्थ्य

अच्छी सेहत के लिये है जरूरी आयरन

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अन्य विटामिन की ही तरह आयरन से भरपूर आहार लेना भी बहुत जरूरी है। आयरन की आवश्यकता शरीर को हीमोग्लोबिन बनाने के लिए होती है। यह लाल रक्त कोशिकाओं में पाया जाता है जो शरीर के विभिन्न अंगों तथा ऊतकों में ऑक्सीजन वहन करने का काम करता है। यदि आहार में आयरन की उतनी मात्रा शामिल नहीं है, जितनी शरीर को जरूरत है तो आपको आयरन की कमी या एनीमिया हो सकता है। शरीर में आयरन की कमी होने से आपको थकान महसूस हो सकती है। इसकी कमी होने से कोशिकाओं तक ऑक्सीजन ठीक प्रकार से नहीं पहुंचता। जिससे शरीर को पर्याप्त ऊर्जा नहीं मिल पाती । ऐसे में खून की कमी होने से शरीर जल्दी थक जाता है। सामान्य रूप से सीढ़ियां चढ़ने में सांस फूलना, हल्के व्यायाम में थकान महसूस करना, दिल को अनियमित रूप से तेज धकड़ना, सिर दर्द, काम पर ध्यान लगाने में कमी, मांसपेशियों में दर्द, चिंता, बालों का झड़ना, नाखूनों का कमज़ोर होना आदि आयरन की कमी के मुख्य लक्षण हैं। आयरन के लिए आप टमाटर, मशरूम, पत्तीदार सब्जियां, चुकंदर, सोयाबीन, सूखे मेवे, काबुली चना, दाल, तरबूज, अंगूर सेब, केला, खजूर, किशमिश, साबुत अनाज डाइट में शामिल करें। ।

दिल और दिमाग दुरुस्त रखता है पिश्ता-बादाम

रोजाना पिश्ता, बादाम, और अखरोट के सेवन से दिमाग तो तेज होता ही है, सेहत को भी कई तरह का फायदा होता है। इन सूखे मेवों में सेहत के लिए जरूरी प्रोटीन, कैलोरी ओर कार्बोहाइड्रेट समेत कई अन्य पोषक तत्व होते हैं। इनके सेवन से वज़न घटाने में मदद मिलती है। यही नहीं ये हृदयरोग, डायबिटीज और उच्च रक्तचाप के खतरों से भी बचाते है।

दिमाग रहे फिट

शरीर को फिट रखने के लिए जिस तरह शारीरिक व्यायाम की जरूरत होती है वैसे ही दिमाग को स्वस्थ रखने के लिए मेंटल एक्सरसाइज़ की जरूरत होती है।

मेंटल हेल्थ एक्टिविटी

दिमाग को एक्टिव रखने वाली एक्टिविटीज़ जैसे, पजल्स, क्रास्वर्डस, सूडोक् आदि रोज़ाना हल करें। अकेले न रहें, सामाजिक बने। दोस्तों और परिवार के सदस्यों से मेलजोल बनाए रखें। उनसे बातचीत करें। किसी हॉबी से जुड़ें। सकारात्मक सोचें। हंसें और दूसरों को भी हंसाएं क्योंकि हंसना भी अपने आप में एक थेरेपी है।

रोज़ाना एक्सरसाइज़

लगातार एक्सरसाइज़ करने से दिमाग समेत पूरे शरीर में ब्लड का सर्कुलेशन होता है, इसलिए हफ्ते में एक बार एरोबिक एक्सरसाइज़ जैसे कि ब्रिस्क वॉक, जॉगिंग या साइकलिंग करें। मेडिटेशन, डीप ब्रीदिंग जैसे यौगिक क्रियाएं भी दिमाग को दुरुस्त रखती हैं।

अच्छी नींद, सही डाइट

अच्छी सेहत के लिए जरूरी है पर्याप्त नींद, क्योंकि रोजाना 7-8 घंटे सोने से मेमोरी अच्छी रहती है।

इसके साथ संतुलित आहार पर भी ध्यान दें। रोज़ाना की खुराक में फल, हरी सब्जियां और कार्बोहाइड्रेटस जरूर शामिल करें। सुबह पेट भरकर फल खाएं तो अच्छा रहता है। ऐसी चीजें खाएं जिनमें ओमेगा-3 फैटी एसिड हों। जैसे नट्स, फ्लैक्स सीड्स, बादाम आदि। रोजाना 8-9 गिलास पानी भी पीएं।

बच्चों का कोना

थर्मोमीटर कैसे काम करता है?

थर्मोमीटर का इस्तेमाल तापमान (गर्माहट) के मापन के लिए किया जाता है। असल थर्मोमीटर में पारा या अल्कोहल का इस्तेमाल किया जाता है। यहां हम थर्मोमीटर की क्रिया समझने के लिए हवा का उपयोग करेंगे। इसके लिए सिर्फ कांच की छोटी बोतल और खाली रीफिल की जरूरत होगी।

इस तरह से करें :

♦ बोतल में आधा सेंटीमीटर ऊंचाई तक रंगीन पानी भर लें। बोतल के ढक्कन में खाली रीफिल फिट कर लें। ध्यान रखें कि यह एयर टाईट हो और रीफिल का निचला सिरा पानी में रहे । आपका थर्मोमीटर तैयार है।

♦ अब आपस में रगड़कर हथेलियां गर्म कर लें और एक हथेली में बोतल पकड़ लें। पानी रीफिल में चढ़ने लगता है। बोतल को गीला करके उस पर फूंकें, बोतल की हवा ठंडी होने लगेगी और रीफिल में चढ़ा हुआ पानी नीचे उतरने लगेगा।

कुछ चर्चा :

♦ बोतल की हवा का तापमान जितना बढ़ेगा या कम होगा, वह उतनी ही फैलेगी या सिकुड़ेगी और पानी रीफिल में उसी अनुपात में चढ़ेगा या उतरेगा। असल थर्मोमीटर में भी इसी तरह तापमान में बदलाव के साथ पारा चढ़ता-उतरता है।

♦ सामान्यतः तापमान का मापन सेल्सियस (सेंटीग्रेड) या फॉनहाइट पैमान पर किया जाता है। 0° सेलिसयस (32° फेरनहाइट) वह तापमान है जहां पानी बर्फ बनता है और 100° सेल्सियस (212° फेरनहाइट) पर पानी उबलता है।

फायर-प्रूफ गुब्बारा

आपको पता ही होगा कि हवा भरा गुब्बारा आग के पास जाते ही फूट जाता हैं लेकिन क्या आप सोच भी सकते हैं कि गुब्बारे में पानी गर्म किया जा सकता है।

ज़रूरी सामानः

♦गुब्बारे, पानी, मोमबत्ती और माचिस

इस तरह से करेंः

♦ हवा में गुब्बारे के पास जलती हुई तीली ले जाएं। तीली की लौ गुब्बारे को छुए इससे पहले ही गुब्बारा फूट जाता है।

♦ अब एक गुब्बारे में पानी भर लें और इसे मोमबत्ती की लौ के ऊपर थामकर रखें। ध्यान रखें कि लौ गुब्बारे को वहीं तक छुए जहां तक पानी भरा है। अब देखिए, कितनी देर तक पानी गर्म किया जा सकता है।

कुछ चर्चाः

♦ जब गुब्बारे के भीतर पानी नहीं था तब लौ के पास आते ही गुब्बारे का रबर तुंरत गर्म हो कर पिघल जाता है।

♦ पानी भरे गुब्बारे का रबर जैसे ही गर्म होने लगता है, वह अपने संपर्क में आने वाले पानी को ऊष्मा देने लगता है। रबर इतना गर्म नहीं हो पाता कि वह पिघल जाए।

खोज-खबर

वे सिगनल जो हमें बीमार बना रहे हैं

प्रसिद्ध नाटककार जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का मानना था कि दस अन्य समस्याओं को जन्म दिए बिना विज्ञान किसी समस्या का समाधान नहीं कर सकता। इन शब्दों का अर्थ 39 देशों के वे 190 वैज्ञानिक जरूर समझ गए होंगे, जिन्होंने दुनिया के तमाम देशों से गुज़ारिश की है कि वे वायरलेस तकनीक के इस्तेमाल को लेकर निगरानी तंत्र बनाएं। वायरलेस तकनीक का इस्तेमाल रेडियो में भी होता है और टीवी रिमोट में भी, मगर जो तरंगे हमें ज्यादा नुक्सान पहुंचाती हैं, वे मोबाइल फोन और कम्प्यूटर से जुड़ी हैं। आज भले ही स्मार्टफोन या टैबलेट पर उंगलियां थिरकाना सभी पसंद करते हैं, मगर इसके नुक्सान भी कम नहीं हैं। खासकर इनसे निकलने वाली विद्युत चुंबकीय तरंगों से गर्भवती महिलाएं और बच्चों के अलावा इन तरंगों का मानव डीएनए तथा पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह युवाओं को बीमार कर रही है। असल में वायरलेस में किसी तार, केबल या विद्युतीय कंडक्टर के बिना संचार होता है। यह इसलिए प्रवाहित होती है, जिनकी गति प्रकाश के बराबर मानी जाती है। इसे सिग्नल भी कहते हैं। समस्या की जड़ यही सिग्नल है। स्वीडन के ऑरेब्रो यूनिवर्सिटी का शोध बताता है कि मोबाइल और तार रहित फोन के अत्यधिक इस्तेमाल से ग्लिओमा (घातक ब्रेन ट्यूमर) और एकॉस्टिक न्युरोमा (कान के पास नस में होने वाला ट्यूमर)की आशंका बढ़ जाती है। तो क्या मोबाइल का इस्तेमाल बंद कर देना चाहिए? नहीं लेकिन सावधानी जरूर बरतनी चाहिए। मसलन जब ज़रूरत न हो तो मोबाइल या टेबलनेट को बंद कर दें या फिर उसे एयरप्लेन मोड में डाल दें। वायरलेस उपकरणों के साथ सोना भी खतरनाक हो सकता है। घरों में भी वाई-फाई के बजाए तार लगाकर कम्पयूटर या इंटरनेट चलाने से वायरलेस के खतरों से बचा जा सकता है। विज्ञान का अर्थ विशेष ज्ञान या व्यवस्थित ज्ञान होता है। तो क्या हम विज्ञान का पूरा लाभ उठाने के लिए अपनी जीवनशैली व्यवस्थित नहीं कर सकते?

हेमेंद्र मिश्र, अमर उजाला 16-5-15

अनिद्रा से बढ़ता है जान का खतरा

वाशिंगटनः लगातार नींद न आने की शिकायत से जान का खतरा पैदा हो सकता है। अमेरिका के यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना के शोधकर्ताओं का कहना है कि जो व्यक्ति लगातार अनिद्रा का शिकार होता है उसमें नियमित रूप से अनिद्रा से ग्रस्त व्यक्ति की तुलना में मौत का खतरा 58 प्रतिशतअधिक होता है। भारतीय मूल के शोधकता प्रो. साईराम पार्थसारथी का कहना है कि इस प्रकार की मौत का कारण सी-एरिएक्टिव प्रोटीन में सीरम का स्तर अधिक होना होता है। ऐसे में व्यक्ति की मृत्यु कैंसर से नहीं बल्कि हृदय और रक्तवाहिकाओं संबंधी रोग से होती है। 1972 में शुरू किए गए इस शोध में अनिद्रा रोग से ग्रस्त 1400 व्यस्कों को शामिल किया गया

★★

तर्कशील पथ, स्वयं पढ़ें, और दूसरों को भी पढ़ाएं

केस रिपोर्ट

पानी की टंकी में आग लगने का रहस्य सुलझाया

–बलवंत सिंह लैक्चरार

94163–24802

तर्कशील सोसायटी के गठन के समय से ही हमारे सामने रहस्यमयी घटनाओं के विचित्र से विचित्र मामले आते रहे हैं। वैज्ञानिक ढ़ंग से निरीक्षण एवं परीक्षण करके हमने उन सभी समस्याओ को पूरी तरह से सुलझाया है। जो घटना जितनी अधिक पेचीदा हो उसे हल करते समय हमारी जानकारी में उतनी ही बढौतरी होती है। समस्याओं की गहराई में जाकर उनकी सही पड़ताल करके उनका उचित समाधान कर देना एक सच्चे तर्कशील के मानवीय गुण कहे जा सकते हैं।

कुछ समय पूर्व मेरे पास दो व्यक्ति अपनी समस्या को लेकर आए। वे दोनों शहर में आढ़ती हैं तथा शहर में उनका एक शैलर भी है। उन्होंने बताया कि वे किसी परिचित से मेरा पता लेकर मेरे पास अपनी एक विकट समस्या लेकर उपस्थित हुए हैं। मेरे पूछने पर उन्होंने अपनी समस्या इस प्रकार से ब्यान की।

उन्होंने बताया कि उनका शहर में एक शैलर है। पिछले लगभग एक महीने से उस शैलर में बहुत ही अजीबो-गरीब घटनाएं घट रही हैं। उनका लाखों का नुक्सान हो चुका है। उन्होंने बताया कि शुरू में तो एक दिन शैलर में पड़ी हुई लकड़ी की क्रेटें जल कर राख हो गई। फिर कुछ समय के पश्चात पानी की टंकी में आग लग गई। वे अपने वर्करों को लेकर एक जगह से आग बुझाते तो इतने में किसी दूसरी जगह पर आग लग जाती।

अगले दिन दफ़्तर में दरवाजों एवं खिड़कियों पर लगे हुए पर्दों को आग लग गई। फिर अगले दिन सुबह सवेरे राईस मिल के गेट पर लगी हुई तिरपाल को आग लग गई। फिर एक दिन शैलर में खड़े हुए ट्रक में रखी तिरपाल को आग लग गई। फिर एक दिन दफ़्तर के साथ बनी हुई रसोई में आग लग गई। फिर एक दिन चौकीदार के कमरे में पड़े हुए सामान को आग लग गई। फिर एक दिन राईस मिल की मशीनों के पास रखे हुए सामान को आग लग गई।

इस प्रकार से उन दोनों ने अपनी राईस मिल में बार-बार आग लग जाने की घटनाओं की मोटी-मोटी जानकारी प्रदान की। उनकी सारी बात सुन कर मुझे एक बात पर हैरानी हो रही थी कि पानी की टंकी में आग कैसे लग गई? अतः मैंने उनसे दोबारा पूछा, 'पानी की टंकी में भी आग लग गई थी?' उनका उत्तर था, 'हां जी, एक दिन बाकी सामान के साथ-साथ पानी की टंकी में भी आग लग गई थी, जिससे वह टंकी भी जल कर राख हो गई।' मैंने फिर पूछा, 'टंकी खाली थी या पानी से भरी हुई थी?' उनका जवाब था कि टंकी पानी से पूरी तरह भरी हुई थी।

आग लगने की शेष घटनाएं तो मेरे लिए सामान्य सी बात थी, परन्तु पानी की टंकी में आग? इस बात ने मेरे लिए एक चुनौती खड़ी कर दी थी। अतः मैंने उसी समय उनके साथ जाकर इस समस्या को हल करने का निर्णय लिया।

उनके साथ जाकर उनकी राईस मिल में जब मैंने स्थिति का अवलोकन किया तो पाया कि उनकी सभी बातें बिल्कुल ठीक थी। शैलर में जगह-जगह पर आग से जले हुए सामान का वीभत्स दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। जब मैंने राईस

मिल में रहने वाले लोगों की जानकारी मांगी तो पाया कि कुछ मजदूर शैलर में दिन के समय काम करते हैं तथा शाम को वापिस चले जाते हैं। जांच-पड़ताल में मैंने पाया कि कई बार शैलर में सुबह-सवेरे ही, मजदूरों के काम पर आने से पहले ही आग लग चुकी थी। अतः मैंने शैलर में 24 घंटे रहने वाले व्यक्तियों की जानकारी मांगी।

दोनों मालिकों में से कोई न कोई दिन-रात वहां पर अवश्य रहता था। उनके अलावा एक चौकीदार, उसकी पत्नी तथा दो उनकी बच्चियां भी राईस मिल में बने चौकीदार के क्वार्टर में रहते थे। जब मैंने चौकीदार एवं उसके परिवार से पूछ-पड़ताल की तो पाया कि एक दिन दोनों बच्चियों के बस्तों में भी आग लग गई थी। उन दोनों में से एक पांचवीं कक्षा में तथा एक दूसरी कक्षा में पढ़ती थी। अब मेरे संदेह की सूई पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाली रितु की ओर घूम गई, क्योंकि दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली लड़की अभी काफी छोटी थी। अतः वह ऐसी हरकत नहीं कर सकती थी।

अब मैंने रितु से अकेले में बातचीत करनी शुरू की। पहले पहल तो वह बिल्कुल भी सहयोग नहीं दे रही थी। फिर मैंने उसके सामने जादू के एक-दो ट्रिक किए और उस पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालना शुरू किया। थोड़ी देर में वह मेरे मनोवैज्ञानिक प्रभाव में आ गई और सब कुछ स्वीकार कर लिया कि उसी ने ही सभी जगहों पर माचिस के द्वारा आग लगाई है। उसने आगे बताया कि उसे शैलर मालिक से बहुत नफरत है। उसका बस चलता तो वह राईस मिल की मशीनों को भी जला देती। उसने ऐसी कोशिश की भी थी, परन्तु मशीनें लोहे की होने की वजह से जल नहीं सकी थीं। मेरे द्वारा समझाने पर उसने आश्वासन दिया कि आगे से वह ऐसा कभी नहीं करेगी। उसके पश्चात् उस राईस मिल में कहीं भी कोई आग नहीं लगी।

कारण : यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि किसी भी घटना अथवा दुर्घटना के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। इस मामले में भी इस समस्या के पीछे कुछ हैरानीजनक कारण मौजूद थे। रितु के मां-बाप का कहना था कि पहले तो रितु पढ़ाई में बहुत होशियार थी और स्कूल से कभी गैरहाज़िर नहीं रहती थी। वह अपनी कक्षा की मॉनीटर भी चली आ रही थी, परन्तु पिछले कुछ अर्से से वह स्कूल जाने से आनाकानी करती थी और बात-बात में अपनी मां से लड़ती-झगड़ती रहती थी।

जब मैंने उसे अपने मनोवैज्ञानिक प्रभाव में लेकर उसका विश्वास जीत लिया और उसे सारी बात बता कर उसे अपने मन का बोझ हलका करने के लिए प्रेरित किया तो उसने अपने मन की व्यथा ब्यान करते हुए बताया कि वह पढ़ाई में बहुत अच्छी थी। अब उसका मन पढ़ाई में बिल्कुल भी नहीं लगता, अब वह पढ़ाई में पछड़ती जा रही है। जब उसकी क्लास टीचर इस बारे में पूछताछ करती है तो उसे बहुत गुस्सा आ जाता है और वह स्कूल जाने से मना कर देती है। इसी कारण उसने अपने व अपनी बहन के बस्ते को आग लगा दी थी और उससे पहले एक दिन उसने दोनों बहनों के बस्ते रास्ते में झाड़ियों में फैंक दिए थे तथा घर जाकर बता दिया था कि कोई 'ओपरी चीज' बस्तों को छीन कर ले गई है।

मेरे यह पूछने पर कि 'ओपरी चीज' का विचार उसके मन में कैसे आया? जवाब में उसने बताया कि शैलर मालिक एक दिन एक बाबा को शैलर में इलाज के लिए लेकर आए थे। तब तक शैलर में एक-दो बार ही आग लगी थी। उसने अपनी बात जारी रखते हुए आगे बताया – 'पहले तो बाबा को देखकर मैं डर गई थी कि बाबा मेरे कारनामों को पकड़ लेगा और शैलर मालिक एवं घर वाले सभी मिल कर मेरी पिटाई करेंगे।'

'फिर क्या हुआ', मैंने पूछा

'फिर!' उसने मुस्कराते हुए बताया 'उस बाबा को तो कुछ पता ही नहीं चला। वह बाबा कहने लगा कि यह तो कोई ओपरी चीज कर रही है।'

'फिर तुम्हारा तो हौसला बढ़ गया होगा?'

'हां! जब बाबा ने मेरा नाम नहीं लिया तो मैं बहुत खुश हो गई। फिर मैंने ठान लिया कि शैलर मालिक से बदला लेने का यही सबसे अच्छा तरीका है कि इसके शैलर में आग लगा दो।'

'तुम शैलर मालिक से बदला क्यों लेना चाहती हो। उसने तुम्हरा क्या बिगाड़ा है?'

'वह मेरी मां के साथ गंदा काम करता है।'

यह सुन कर मैं सन्न रह गया। फिर उसने सारी कहानी की विस्तारपूर्वक इस प्रकार से जानकारी दी उसने बताया कि एक दिन उनकी स्कूल से जल्दी छुट्टी हो गई। वे दोनों बहनें स्कूल से शैलर में बने अपने घर में आ गई। घर आकर देखा तो घर में कोई नहीं था। वह अपनी मां को ढूंढते हुए मालिक के दफ्तर की ओर चली गई। दफ्तर का दरवाजा तथा खिड़कियां बंद थे। परन्तु अंदर से किसी के बोलने की आवाज आ रही थी। उसने ध्यान से सुना तो वह उसकी मां एवं शैलर मालिक की आवाजें थी। उसने खिड़की के एक सुराख से अंदर झांक कर देखा तो पाया कि उसकी मां और शैलर मालिक नग्न अवस्था में एक बैड पर पड़े हुए थे। यह देखकर वह बहुत परेशान हो गई और अपने घर में भाग गई। उस दिन से उसका पढ़ाई से मन उचाट हो गया। वह अंदर ही अंदर घुटती चली गई। पढ़ाई में भी वह पिछड़ती चली गई। अध्यापकों द्वारा पूछने पर वह और भी परेशान हो जाती और स्कूल जाने में आनाकानी करने लगी। घर में रहकर एक तरह से वह अपनी मां की निगरानी करना चाहती थी।

इसी अंतर्द्वंद्व में उसने एक दिन शैलर में पड़ी हुई लकड़ी की क्रेटों को आग लगा दी। फिर जब एक बाबा ने अपना तंत्र-मंत्र करते हुए 'ओपरी पराई चीज' का ऐलान कर दिया तो रितु का हौसला और बढ़ गया। फिर एक दिन रितु ने पानी की टंकी के पास रखी हुई लकड़ी की टूटी हुई क्रेटों को आग लगा दी। वहां पर पानी की प्लास्टिक की टंकी 5-6 फुट ऊंचे चबूतरे पर रखी हुई थी। आग की लपटें जब ऊंची उठी तो प्लास्टिक की टंकी भी उसमें जल गई, उसमें से सारा पानी भी बह गया। जब सभी वर्कर वहां पर लगी आग को बुझा रहे थे तब रितु ने दूसरी जगह पर आग लगा दी। जब वे दूसरी जगह से आग बुझा रहे थे तो उसने तीसरी जगह पर आग लगा दी।

इस प्रकार शैलर मालिक को परेशान देखकर रितु को अत्यंत मानसिक तसल्ली हो जाती थी। इसीलिए उसने समय-समय पर कभी कहीं तो कभी कहीं पर आग लगा दी। उसने आगे यह भी बताया कि उसने तो यह समझा था कि उसे कोई पकड़ ही नहीं सकता। परन्तु उसने यह कल्पना भी नहीं की थी कि तर्कशील तो रहस्यमयी से रहस्यमयी घटनाओं का भी निवारण कर देते हैं। सारी बातचीत करने के पश्चात वह गिड़गिड़ाने लगी कि उस द्वारा किए गए कारनामों को गुप्त ही रखा जाए। मैंने उसे आश्वासन दिया कि यदि आगे से वह ऐसी हरकत नहीं करेगी, तो यह सारी बात बिल्कुल गुप्त रखी जाएगी। परन्तु यदि उसने आगे से ऐसी कोई गलती की तो उस द्वारा किए गए कारनामों को सबके सामने खोल कर रख दिया जाएगा। उसने इस मामले में अपनी पूर्ण सहमति दे दी।

अब समस्या के सम्पूर्ण हल के लिए मैंने रितु की मां को अलग से बुला कर कुछ डांट पिलाई और फिर उसे समझाया कि उसकी मूर्खता के कारण उनका सारा पारिवारिक माहौल बिगड़ जाएगा। यदि ऐसा खेल खेलते हुए उसे उसके पति ने देख लिया तो उसका क्या अंजाम होगा? मेरी खरी-खरी बातें सुन कर वह अत्यंत शर्मिंदा हुई और उसने वचन दिया कि वह आगे से ऐसे गलत रास्ते पर नहीं चलेगी।

तब से लगभग 10 महीने बीत चुके हैं, वहां किसी भी प्रकार की कोई अनहोनी घटना नहीं घटी।

नोट *: यह एक सत्य घटना है। परिस्थितिवश पात्रों के नाम व स्थान बदल दिए गए हैं।* ★★

गरीबी

-आर.पी.गांधी

9315446140

मानव समाज में गरीबी सबसे बड़ा अभिशाप है। जहां गरीब मनुष्य की छोटी-छोटी इच्छाओं का दमन होता है। जीना उसकी मजबूरी बन जाती है। प्रकृति का नियम है कि जीव अपने को जीवित रखने के लिए भरसक प्रयास करता है। विश्व में बहुत सारे ऐसे देश हैं जहां अमीरी और गरीबी में बहुत विषमता है। भारत भी ऐसे देशों में से एक है। हजारों-लाखों ऐसे लोग मिल जाएंगे जो रेलवे प्लेटफार्म अथवा सड़कों के किनारे सो कर रात गुजारते हैं और सिर पर छत नसीब नहीं होती। हर बड़े शहर में रेलवे लाईन के दोनों और झोपड़ियां देखी जा सकती हैं, जो गरीबों का आवास होता है। इन झोंपड़ियों में कई प्रकार के जुर्म भी पलते रहते हैं कई बार कच्ची शराब की भट्टियां पकड़ी गई हैं और कई बार ऐसी शराब के सेवन से लोगों की मौत भी हो जाती है। एक विशेष जाति 'डेहा' में प्रायः गरीबी पाई जाती है। ये लोग ज्यादातर मांस का सेवन करते हैं। इन लोगों की बस्तियां में गंदगी की भरमार पाई जाती है। बच्चे और औरतें प्रायः कबाड़ बीनते देखे जा सकते हैं इनकी बस्तियों में जुआ भी खेला जाता है। कुछ लोग कबाड़ी का काम भी करते हैं इनमें से कुछ लोग चोरी की घटनाओं में भी संलिप्त पाए जाते हैं और कई प्रकार के जुर्म में ये लोग लिप्त होते हैं इन सब का मूल कारण गरीबी ही है। इसी कारण इनमें अशिक्षा व अज्ञानता पाई जाती है। प्रायः ये लोग कुपोषण का शिकार होते हैं। बीमार होने पर अच्छे डाक्टर से इलाज लेना इनके सामर्थ्य से बाहर की बात होती है। इलाज के लिए जादू-टोनों पर निर्भर रहते हैं। यही कारण है कि इन लोगों की औसत आयु लगभग 50 वर्ष ही रहती है। अनपढ़ता के कारण इनके परिवार भी बड़े होते हैं, जिससे इनकी समस्याएं और विकराल रूप धारण कर लेती हैं। जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कई बार किसी अमीर आदमी से अधिक ब्याज पर कर्ज ले लेते हैं, जिससे ये शोषण का शिकार हो जाते हैं।

भारतीय समाज की एक और जाति जिसे बागड़ी लुहार कहते हैं भी एक अति निर्धन वर्ग है। ये प्रायः घुमक्कड़ किस्म की जाति है जो एक जगह स्थायी निवास न बनाकर घूमते रहते हैं और प्रायः लुहार का काम करते हैं और इसी काम से अपना जीवन चलाते हैं। ये लोग भी स्थायी निवास न होने के कारण शिक्षा से वंचित रहते हैं और इसी कारण अज्ञानतावश अनेक बुराइयों के शिकार होते हैं। इनकी आर्थिक अवस्था भी अच्छी नहीं होती। शारीरिक कार्य करने के कारण इस जाति के पुरुष और नारियां काफी पुष्ट शरीर के स्वामी होते हैं। ये झगड़ालु प्रकृति के होते हैं और छोटी सी बात पर झगड़ा पैदा कर लेते हैं।

इसी प्रकार एक और जाति जो 'सांसी' के नाम से जानी जाती है, भी गरीबी से पीड़ित हैं। जो प्रायः भिन्न प्रकार के अपराधों में लिप्त पाए जाते हैं। ये लोग भी घुमक्कड़ प्रकृति के लोग होते हैं और चोरी करना इनमें प्रायः पाया जाता है। गरीबी के कारण ही इनमें इस तरह की बुराइयां मिलती हैं।

आज के इस वैज्ञानिक युग में भी गरीबी के कारण मनुष्य को पशुओं की तरह काम करना पड़ता है। वह रिक्शा चलाता है और दूसरे मनुष्यों को ढोता है। सामान रेहड़ी में लाद कर पशुओं की तरह

ढोता है। कहने को दास प्रथा खत्म हो गई है, लेकिन कुछ लोग दासों की तरह काम करते देखे जा सकते हैं। ये ईंट भट्ठों, फैक्ट्रियों में बंधुआ मजदूर की तरह काम करते हैं, क्योंकि ये मालिकों से एडवांस में ही कुछ पैसे ले लेते हैं, जिसका भटठ्ा मालिक और फैक्टरी मालिक दुरुपयोग करते हैं और इनको अपने जाल में फंसा लेते हैं। ये अपनी मर्जी से कार्य छोड़ कर नहीं जा सकते। इस प्रकार इन गरीब लोगों का भरपूर शोषण होता है। एक फिल्म 'दो बीघा जमीन' के नाम से बनी थी, जिसमें बलराज साहनी नायक थे। उसकी कहानी कुछ इस तरह से थी। नायक ने अपनी कोई आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपनी दो बीघा जमीन गिरवी रख दी। फिर जमीन को गिरवी से छुड़ाने के लिए कलकत्ता में मेहनत-मजदूरी करने पहुंचा। कलकत्ता पहुंच कर उसे रिक्शा खींचनी पड़ी, जहां पर ये लोग नंगे पांव अर्धनग्न अवस्था में रिक्शा खींचते हैं। रिक्शा में दो आदमी बिठा घोड़े की तरह रिक्शा को खींचते हैं। आज के इस युग में गरीबी का इससे दर्दनाक दृश्य क्या होगा? दो बीघा जमीन का नायक भी अपनी दो बीघा जमीन छुड़वाने के लिए रिक्शा खींचते-खींचते दम तोड़ देता है। एक बार हमारे देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी गरीबी हटाओ का नारा देकर अच्छे बहुमत से विजयी हुई। परन्तु गरीब आज भी खून के आंसू रो रहा है और उसे दो वक्त भी भरपेट खाना नसीब नहीं होता। इस प्रकार के लोग कई बार छोटे-मोटे अपराधों के शिकार बन जाते हैं। दूसरी ओर हमारा पड़ौसी देश चीन जिसने हमसे दो साल बाद स्वतंत्रता प्राप्त की और आर्थिक रूप से भी हमसे पीछे था। सन् 1978 तक चीन ने 68 करोड़ चीन वासियों को गरीबी के स्तर से ऊपर उठा लिया। प्रश्न यह है कि अगर चीन ऐसा कर सकता है तो भारत क्यो नहीं?

अब मैं आपके सामने गरीबी से संबंधित आखों देखे कुछ दृष्टांत प्रस्तुत करने जा रहा हूं। मैं गाड़ी से जमालपुर (बिहार) जा रहा था। जब गाड़ी गया रेलवे स्टेशन पर रुकी तो गाड़ी में बैठे कुछ यात्रियों ने खोंचे वालों से कुछ खाने को लिया और खाने के बाद जूठी पतलों को प्लेटफार्म पर फैंक दिया। इन झूठी पत्तलों की ओर कुछ बच्चे लपके और इनको चाटने के लिए होड़ लग गई। कुछ ऐसे भी थे, जिनके हाथ कोई झूठी पत्तल न लगी। इन सभी बच्चों की दयनीय दशा देखने वाली थी। इसी स्टेशन पर शारीरिक रूप से कमजोर कुछ बच्चे भारी सामान अपने सिर पर रखकर लड़खड़ाते हुए कुली का काम कर रहे थे। उनको देखकर किसी भी संवेदनशील व्यक्ति का दिल करुणा से भर जाए।

एक बार लखनऊ से प्रतापगढ़ जाने का अवसर मिला। मेरे बहुत प्यारे मित्र शिव मिश्रा के यहां भोज था और वे मुझे अतिथि के रूप में वहां ले गया। मुझे एक बैठक में बिठा दिया गया जहां कुछ कुर्सियां व मेज पड़ी थी। सामने खाने वालों की दो पंक्तियां लगी थी। ये खाना खाने वाले धोती पहने अर्धनग्न अवस्था में पैरों के बल बैठे थे। कमरे से बाहर कुछ कुत्ते व आदमी खड़े थे। मेरा खाना मेरी मेज पर परोस दिया गया था। जब खाना खा चुके तो बाहर खड़े लोग और कुत्ते जूठन पर झपटे और एक-दूसरे के साथ लड़ाई करने लगे। मैंने अपने मित्र शिव को बुलाया और पूछा ये सब क्या हो रहा है? उसने बताया कि कसोरे, कुम्हारों ने उपलब्ध कराए हैं और पत्तलें किसी और जाति ने। ये दोनों जातियां जूठन पर अपना पहला हक जताने के लिए लड़ रहे हैं और कुत्ते भी इस लड़ाई के बीच में आ गए हैं। मैं कुर्सी पर बैठा सोच रहा था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी हमारे देश के लोगों की हालत क्या है? इस प्रश्न का कारण और उत्तर खोजते-खोजते मैं परेशान हो गया।

जालंधर रेलवे स्टेशन की बात है। वहां पर दो व्यक्ति बैंच पर बैठे थे जो किसान थे। तीन पुलिस वाले जिनके हाथ में डंडे थे। कुछ लोगों को गर्दन से पकड़ कर ला रहे थे। बैंच पर बैठे दोनों किसान पुलिस वालों से पकड़े गए मजदूरों की

सौदेबाजी कर रहे थे। वे शारीरिक क्षमता के हिसाब से उन मजदूरों का दाम लगा रहे थे। किसी का दाम 100 रुपए तो किसी का 150 रुपए तथा किसी का 200 रुपए भी लग जाता। मैं यह सब कुछ देखकर पूरी बात समझ न पाया। अतः पास जाकर मजदूरों से बात की कि यह सब कुछ मोल भाव क्या हो रहा है? एक मजदूर ने मुझे बताया कि हम बिहार से आए हैं। हमारे पास टिकट थे, लेकिन पुलिस वालों ने टिकट देखने के बहाने हमसे टिकट लिए और फाड़ कर फैंक दिए। साथ में धमकी दी कि या तो हमारा कहा मानो, नहीं तो बिना टिकट होने के कारण जेल की हवा खाओगे। हम इनकी बात मान गए और अब ये हमें किसानों के पास बेच रहे हैं। पुलिस वाले अपनी कीमत वसूल कर हमें किसानों के पास बेच रहे हैं। ये किसान हमें अपने गांव ले जाकर दूसरे किसानों के पास बेच देंगे और बीच में अपना मुनाफा कमाएंगे। हमसे वहां बंधुआ मजदूर की तरह काम लिया जाएगा। बदले में केवल इतना खाने को देंगे, जिससे हम जीवित रह सकें। रात के समय हमें ये एक कमरे में बंद करके दरवाजे पर बाहर ताला लगा देते हैं। यह बात उस नौजवान मजदूर ने बताई थी, जो एक बार वहां से भागने में सफल हो गया था और दोबारा पकड़ा गया था। उसने यह भी बताया कि ये किसान हमारी सुबह की चाय में थोड़ी अफीम डाल देते हैं, ताकि हम दिनभर काम करते रहें। उन्हीं दिनों पंजाब केसरी समाचार पत्र में यह समाचर छपा था कि चाय में अफीम की मात्रा अधिक होने पर पांच मजदूरों की मौत हो गई थी।

एक बार मुझे मकराना (राजस्थान) जाने का भी अवसर मिला। वहां पर संगमरमर की बहुत बड़ी-बड़ी खदाने हैं। मैं वहां उन लोगों से मिला जो पत्थरों को तराश कर देवताओं की मूर्तियां बनाते हैं। पूरा-पूरा परिवार जुटता है तब कहीं जाकर मूर्ति बनती है। इन लोगों की हालत दयनीय होती है। फटेहाल और नंगे पैर तथा भूखे पेट इनको देख। अनपढ़ता व अज्ञानता का बोलबाला है। इनकी हस्तकला के संबंध में एक शेयर :

मेरे हाथों के तराशे हुए सनम,
आज मंदिर में भगवान बने बैठे हैं।

आजादी के 68 वर्ष बाद भी मेरे देश में करोड़ों की संख्या में लोग गरीबी की दशा में जी रहे हैं। धार्मिक स्थलों में भिखारियों की लंबी लाईनें देखी जा सकती हैं। खाना तो वहां दानी लोगों की मेहरबानी से मिल जाता है। हमारी सरकार आज भी हर हाथ को काम देने में असफल रही है। हम सब को मिल कर संघर्ष करना होगा। जहां सब को निशुल्क शिक्षा मिले। निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं मिलें और हर हाथ को काम मिले ताकि सभी नागरिक सम्मानित जीवन जी सकें।

नींद में चौंक क्यों जाते हो?

नींद में डरकर उठ जाने की समस्या कई लोगों के साथ आम है। लेकिन नींद में चौंक कर जागने की यह समस्या सिर्फ डरावने सपनों तक ही सीमित नहीं है। इंग्लैंड के लंदन क्लीनिक ने इस गुत्थी को सुलझा लिया हैं। प्रो. गैबी बैड्रे के अनुसार नींद में मस्तिष्क और शरीर के तालमेल में खलल पड़ने के कारण ऐसा होता है। तनाव, थकावट और अनियमित निद्रा इसका कारण होते हैं। इसे हाप्निकएक्लोनिया के नाम से जानते हैं। सोते समय शरीर को रिचार्ज करने के लिए मस्तिष्क सपने देखता है और आराम के दौरान शरीर की मांसपेशियां पैरालाइसिस जैसी स्थिति में होती हैं। किसी सपने के दौरान जब मांसपेशियां त्वरित प्रतिक्रिया नहीं करती तो उस स्थिति में इंसान की नींद झटके से खुल जाती है।

अनमोल वचन

वेदों का सैंकड़ों बार किया गया जाप भी अग्नि को ठण्डा नहीं कर सकता।'

-शंकर (8वीं शताब्दी) भारतीय दार्शनिक

कलयुग के ये स्वयंभू भगवान

-निर्मल रानी

भारतवर्ष को पूरे विश्व में विभिन्न प्रकार के धर्मो, आस्थाओं, नाना प्रकार के विश्वास तथा आध्यात्मवाद के लिए जाना जाता है। इस देश की धरती ने जितने महान संत, फकीर तथा आध्यात्मिक गुरु पैदा किए, उतने संभवतः किसी अन्य देश में नहीं हुए। यही वजह है कि भारतवर्ष को राम रहीम, बुद्ध और नानक की धरती के रूप में जाना जाता है। निःसंदेह भारतवर्ष की पावन धरती पर अनेक महापुरुषों ने अवतार लिया। आज भी हमारे देश में जब कभी राजनीतिक व प्रशासनिक उथल-पुथल के चलते यहां की जनता विचलित होती है तो निराश होकर यही कहती है कि यह देश तो भगवान व पीरों-फकीरों की बदौलत ही चल रहा है और निश्चित रूप से यही वजह थी कि भारतवर्ष को विश्वगुरु कहा जाता था। परन्तु बदलते समय के साथ-साथ जहां जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में ह्रास की स्थिति देखी जा रही है। वहीं धर्म व अध्यात्म का क्षेत्र भी अब दागदार होने लगा है। देश के धर्मभीरू, आस्थावान व भावुक लोगों की भावनाओं का लाभ उठाकर अपने ही देश के तमाम चतुर बुद्धि लोग स्वयं को भगवान, देवी-देवता या उनका अवतार बताकर देश के शरीफ व सीधे-सादे लोगों को ठगने पर तुले हुए हैं। दूसरी ओर ऐसे लोगों के प्रति आस्था रखने वाली जनता अपने ऐसे पाखंडी गुरुओं व स्वयंभू अवतारों के मोहपाश में बुरी तरह जकड़ चुकी है कि उसे अपने गुरु अथवा स्वयंभू भगवान के विषय में खुलती हुई हर पोल एक साजिश नज़र आती है। देश का यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है। आज पूरे देश में इसी प्रकार के सैंकड़ों स्वयंभू संत तथाकथित अवतार व नकली भगवान जोकि विभिन्न धर्मो से संबंध रखते हैं। देश की अलग-अलग जेलों में अपने पापों की सजा भुगत रहे हैं। ऐसे ही कई लोग विभिन्न अपराधों के आरोपी हैं और फ़रार होकर पुलिस से आंख मिचौली खेल रहे हैं। किसी पर बलात्कार का आरोप है, कोई आध्यात्म की राह पर चलकर अकूत धन सम्पति का मालिक बन बैठा है, कोई हत्या आरोपी है, कोई अप्राकृतिक यौन संबंध स्थापित करने का दोषी है, कोई सैक्स रैकेट चलाता है, कोई हवाला कारोबारी है तो किसी पर अपने ही शिष्य व शिष्याओं के साथ यौन शोषण का आरोप है। जाहिर है कि प्रत्येक आम अपराधियों की ही तरह ऐसे स्वयंभू संत तथाकथित भगवान व अवतार भी अपने-आपको बेगुनाह अथवा अपने विरोधियों की साजिश का शिकार बता रहे हैं। यहां एक सवाल यह जरूर उठता है कि आखिर प्राचीन व मध्ययुगीन काल में यहां तक कि आधुनिक युग में जन्म लेने वाले शिरडी वाले साईं बाबा तक पर कोई व्यक्ति इस प्रकार के घटिया व अपमानजनक आरोप क्यों नहीं लगा सका? निश्चित रूप से केवल इसीलिए कि वे सब वास्तविक संत थे। अवतारी महापुरुष थे। उनमें सांसारिक मोहमाया के प्रति कोई लगाव अथवा आकर्षण नहीं था। और वे धर्म व आध्यात्मवाद की जीती जागती प्रतिमूर्ति थे। परन्तु आज के जमाने में तो संभवतः धर्म व आध्यात्मवाद की परिभाषा ही बदल गई लगती है। पाखंड, अपराध, स्वार्थ, माया मोह, अय्याशी, धनसम्पति संग्रह, राजनीतिक संरक्षण आडंबर व दिखावा ही धर्म व अध्यात्म बनता जा रहा है। आए दिन किसी न किसी साधू व साध्वी का वेश धारण करने वाले किसी न किसी पाखंडी स्वयंभू देवी अथवा देवता को मीडिया द्वारा बेनकाब किया जा रहा है, परन्तु उनकी अंधभक्ति व आस्था में डूब चुके उनके भक्त यही

कहते दिखाई दे रहे हैं कि हमारे गुरु अथवा हमारे अवतारी देवी अथवा देवता को फंसाया जा रहा है। उनके विरुद्ध षड्यंत्र व साजिश रची जा रही है। परन्तु ऐसे पाखंडी धर्माधिकारों के कुछ समझदार शिष्य ऐसे भी होते हैं जो अपने इन पाखंडी व दुराचारी स्वयंभू देवी देवताओं के बेनकाब होने के बाद ऐसे लोगों से पीछा छुड़ाने में ही अपनी भलाई समझते हैं। सवाल यह है कि ऐसे लोगों को गुरु बनाने, उन्हे अवतारी महापुरुष की नजरों से देखने तथा उनका महिमामंडन करने का जिम्मेदार आख़िर है कौन? शिखर पर बैठने की इच्छा आखिर किसमें नहीं होती? अपनी पूजाअर्चना कौन नहीं करवाना चाहता? खासतौर पर हमारे देश में तो जिसे देखो वही व्यक्ति अपना महिमामंडन कराने, स्वयं को गुरु कहलवाने अथवा स्वयंभू रूप से उपदेशक बनने के रोग से पीड़ित है। यहां तमाम लोग ऐसे देखे जा सकते हैं, जिन्हें स्वयं ज्ञान हो या न हो, परन्तु वह व्यक्ति ज्ञान की गंगा बहाने को आतुर दिखाई देता है। स्वयं दुष्चरित्र हो फिर भी दूसरों को चरित्रवान होने का पाठ पढ़ाता नज़र आता है। धर्म व आध्यात्म से जिसका दूर दूर तक का कोई वास्ता न हो, यहां तक कि धर्म व अध्यात्म की परिभाषा भी न जानता हो, ऐसे व्यक्ति धर्म व अध्यात्म का ज्ञान बांटते नज़र आते हैं। वैसे भी हमारे देश में अपनी झूठी प्रशंसा सुनने व सुनकर गुब्बारे की तरह फूल जाने का काफ़ी प्रचलन है। किसी सिपाही को दरोगा जी कहिए तो वह खुश हो जाता है। साधारण शिक्षक को प्रोफेसर साहब पुकारने से उसकी बांछें खिल जाती हैं। तमाम लोग एक-दूसरे को देवता जी और मेरे भगवान और गुरु जी जैसा संबोधन करते दिखाई देते हैं। यानी महिमामंडन करना खुशामदपरस्ती दोनों ही बातें हमारे समाज में अपनी जगह बना चुकी हैं। जाहिर है कि ऐसे में जनता के इस स्वभाव का फायदा उठाने में उन शातिर लोगों को ज्यादा देर नहीं लगती जो अपनी पूजा व महिमामंडन करवाने के साथ-साथ इसी धर्म व अध्यात्म के माध्यम से धन सम्पति भी अर्जित करना चाहते हैं और अय्याशी व ऐशपरस्ती की जिंदगी भी बसर करना चाहते हैं। फिर आखिर इन हालात का जिम्मेदार कौन है? संत कबीर ने 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाएं। बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो मिलाए' यह श्लोक लिखकर गुरु की महत्तता को भगवान के बराबर बताने का प्रयास किया है। क्या संत कबीर ने कभी सपने में भी यह बात सोची होगी कि भविष्य में इसी भारतवर्ष में ऐसे गुरु व स्वयंभू देवी देवता भी जन्म लेने वाले हैं, जो अपनी शक्ल सूरत, वेशभूषा तो साधू संतों व देवी देवताओं जैसी बनाकर रखेंगे, परन्तु उनके भीतर एक अय्याश ऐशपरस्त व धनलोभी आत्मा पल रही होगी? संत कबीर ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि कलयुग का स्वयंभू गुरु हत्या, बलात्कार व अन्य जघन्य अपराधों के आरोप में जेल की सलाखों के पीछे सड़ रहा होगा। परन्तु आज की वास्तविकता तो कम से कम यही है। ऐसे कलयुगी, पाखंडी गुरु व स्वयंभू देवी देवता व तथाकथित भगवान अपने दुष्कर्मो के चलते मीडिया की सुर्खियों में बने रहते हैं। जेलों में अपने कर्मो का फल भुगत रहे हैं या फिर पुलिस से लुक्काछुपी करते फिर रहे हैं। आज देश के अधिकांश शहरों व कस्बों में अनेक ऐसे अनपढ़ लोग देखे जा सकते हैं, जिन्हें कथित रूप से देवियों की चौकियां आती हैं। और यह भी देखा जा सकता है कि इस प्रकार की तथाकथित चौकी आने से पूर्व ऐसा परिवार जो रोटी तक से मोहताज था, वह देवी कृपा से सम्पन्न हो जाता है। जाहिर है कि शरीफ, निश्छल तथा आस्थावान लोगों द्वारा की जाने वाली धनवर्षा ऐसे निठल्ले लोगों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बना देती है और ऐसे लोगों को देखकर दूसरे लोग भी कोई व्यवसाय या कामकाज करने के बजाए स्वयं ही इसी पाखंड की दुनिया में प्रवेश कर अपना भाग्य आजमाने लग जाते हैं। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि हमारे देश की शरीफ, सीधी - सादी, भोलीभाली व आस्थावान जनता अपने-अपने धर्मो, समुदायों व

विश्वासों के उन्हीं धर्मगुरुओ, देवी-देवताओं, पीर पैगम्बरों, ऋषियों-मुनियों, संतों व फकीरों, महापुरुषों तथा अपने-अपने धर्मग्रंथों का का ही अनुसरण करे ओर उन्हीं को अपना प्रेरणा स्त्रोत समझते हुए सद्मार्गो पर चलने की कोशिश करे। हमारे देश में पाए जाने वाले किसी भी धर्म से संबंध रखने वाला कोई भी सद्गुरु ऐसा नही मिलेगा, जिसने अपने भक्तों से धन दौलत की उम्मीद रखी हो। किसी भी धर्म का कोई भी अवतार या देवता ऐसा नहीं मिलेगा, जिसने अपने भक्तों से धन ऐंठ कर अपने तमाम आश्रम, महल तथा फार्म हाऊस बनाए हों। कोई भी अवतारी पुरुष या स्वयं को देवता बताने वाला कोई महापुरुष ऐसा नहीं था जो वासना का भूखा रहा हो और अय्याशी व ऐशपरस्ती को उसने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया हो। सभी धर्मो के संतों, फकीरों, अवतारों व देवी-देवताओं ने अपने शरीर पर बड़े से बड़े कष्ट झेलकर स्वयं को संकट में डाल कर, अपने समय की राक्षसी व बुरी ताकतों का विरोध कर व उनकी यातनाएं सहकर समाज को जीने का सलीका सिखाया है। खुद फटे कपड़े पहनकर, भूखे रहकर आर्थिक संकट के दौर से गुजर कर अपने भक्तों की सफलता व उनके उज्जवल भविष्य की कल्पना की है। हमारा देश ऐसे ही वास्तविक महापुरुषों के अध्यात्मवादी जीवन की बदौलत विश्वगुरु कहा जाता रहा है। लिहाजा आम लोगों को यही चाहिए कि वे कलयुग के इन स्वयंभू देवी-देवताओं व पाखंडी अवतारों को अपना गुरु व अपनी आस्था का केंद्र बनाने से परहेज करें।

धूप अगरबत्ती के पैकेट पर भी हो चेतावनी संकेत हो

आज तक दुनिया में जितने भी आविष्कार व अध्ययन हुए हैं वह लगभग विदेशों में ही हुए हैं। सूई से लेकर जहाज तक, चेचक कैंसर पोलियो व मलेरिया जैसे ख़तरनाक रोगों का पता भी विदेशी लोगों ने ही लगाया है।

हमारे देश में प्रंतिदिन हज़ारों टन अगरबत्ती व धूपबत्ती घरों दफतरों दुकानों व प्रतिष्ठानों में प्रयोग की जाती है। इसका इन्सान के स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, मैंने आरटीआई एक्ट के तहत स्वास्थ्य मंत्रालय से इसकी जानकारी मांगी थी। उन्होंने इसके बारे में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्राण बोर्ड से इसकी जानकारी मांगी ।इसके बाद केंद्रीय प्रदूषण नियंत्राण बोर्ड ने 17 अक्तूबर, 2012 को यह जानकारी दी कि यह कार्य लोगों के घरों के अंदर संपादित होने के कारण केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की कार्य निर्देशिका में शामिल नहीं है और न ही प्रदूषण बोर्ड ने इस पर कोई अध्ययन किया है। इसके बाद मुझे कहीं से भी किसी प्रकार का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। अचानक 30 अगस्त, 2015 को कुछ समाचार पत्रों में यह खबर पढ़कर मैं हैरान रह गया कि सिगरेट से भी ज्यादा खतरनाक अगरबत्ती का धुंआ है। इससे भी ज्यादा हैरानी इस बात की हुई है कि यह कार्य भी विदेशी लोगों ने ही किया। इस पर विदेशी विशेषज्ञों ने मेरी दस साल की मेहनत को सही साबित कर दिया है जिसका जवाब दो मंत्रालयों जिनका सालाना बजट लाखों-करोड़ों रूपये में है, उनसे नहीं मिला। बल्कि यह केवल दो रूपये के अखबार से मिल गया। ब्रिटिश लंग फाऊंडेशन रिसर्च मैडिकल के डॉक्टर निक राबिन्सन और साऊथ चाइना यूनिवर्सिटी ऑफ टैक्नॉलोजी के शोधकर्ताओं ने अध्ययन करके यह टिप्पणी की है कि अगरबत्ती व धूपबत्ती का धुआं जहरीला होता हैं जो सांस व फेफड़ों पर बुरा प्रभाव डालता है जिससे कैंसर को बढ़ावा मिलता है।

मेरी भारत सरकार से मांग है कि सिगरेट, बीड़ी व तम्बाकू की तरह अगरबत्ती वह धूपबत्ती के पैकेट पर भी चेतावनी का संकेत होना चाहए।

-जयदेव आर्य-इंद्री मो. 9813409023

■ ■

अभिव्यक्ति की जंग में बलिदान हुए निलोय!

-घनयश्याम बादल

एक था निलय। निलय यानी निलय नील चक्रवर्ती जो निलोय के नाम से लिखता था। बंगलादेश में रह कर कट्टरपंथिता के खिलाफ लिख रहा था। कितना बड़ा अपराध था यह? कठमुल्लों को कहां पसंद आती उसकी यह आदत? उसे धमकाया भी गया पर वह माना ही नहीं। परिणाम सामने है। सरकार उसकी हिफाजत नहीं कर पाई और वह अपने घर में अपने दोस्तों और पत्नी के सामने मार डाला गया। उसे ब्लागिंग के जरिए अपनी बात कहने की सजा मिली।

एक तरफ इंटरनेट के जरिए ग्लोब को गांव बना देने की कवायद जारी है, सारी दुनिया को पास लाने का काम हो रहा है। अभिव्यक्ति के अधिकार की सुरक्षा की बातें की जा रही हैं और दूसरी तरफ उसी दुनिया के एक हिस्से में आदिमयुग की दुनिया जैसा कत्लेआम मच रहा है। यूं यह कोई पहला कत्ल नहीं है। इस तरह का। आईएसआईएस जैसे संगठन तो लगातार सर कलम कर रहे हैं। वे तो बच्चे तक से कत्ल करवाने के दृश्य दिखा कर मगरूर हो रहे हैं।

अब निलोय का कत्ल हुआ है। फिर ऐसा ही अपराध करने वाले किसी दूसरे तीसरे और अनगिनत नंबर तक निलयों को असुरक्षित छोड़ दिया जाएगा। हो सकता है कि उसकी भी घर में घुस कर या सड़क पर दुस्साहसी तरीके से हत्या कर दी जाए। ढाका बंगलादेश में अज्ञात हमलावरों ने 40 साल के एक धर्मनिरपेक्ष बलॉगर की उसके फ्लैट में धारदार हथियार से गला काट कर निर्मम हत्या कर दी। अलकायदा से जुड़े स्थानीय समूह ने इस घटना की जिम्मेवारी ली है। देश में छह माह से भी कम समय के भीतर यह चौथे बलागर की हत्या हुई है। बंगलादेश में इस साल यह चौथे बलॉगर की हत्या है। इसी साल मई में नकाबपोश व्यक्तियों ने सिलहट शहर में बलागर अनंत विजय दाय की हत्या कर दी थी। इसी साल फरवरी महीने में बलॉगर अविजीत राय की भी निर्मम हत्या की गई थी। इसके बाद बलॉगर वशुकर रहमान की हत्या की गई। इसी मंच के एक अन्य कार्यकर्ता तथा बलागर अहमद रजीव हैदर की भी दो साल पहले मीरपुर स्थित उनके आवास पर हत्या कर दी दी गई थी। निलय चक्रवर्ती नील की अज्ञात लोगों ने ढाका के उतरी गोरहान इलाके में हत्या की, जहां वे अपने किराए के फ्लैट में पांचवीं मंजिल पर रहते थे। नील की पांचवीं मंजिल पर स्थित उनके फ्लैट में हत्या बताती है कि वहां कट्टर लोग कितने मुफीद और उनकी मर्जी के खिलाफ लिखने, कहने-बोलने वाले कितने असुरक्षित हैं।

खुदा की इबादत जुमे की नमाज के बाद दुस्साहसी पांच हमलावर किस तरह फ्लैट के भीतर दाखिल हुए और अंदर मौजूद उनकी पत्नी तथा दोस्तों के सामने ही उन्होंने नील पर तब तक खुखरी से वार किए जब तक कि उन्हे यकीन नहीं हो गया कि निलय अब नहीं बचेंगे। हमारे कूटनीतिज्ञों को सचेत हो जाना चाहिए कि कहीं बंगलादेश भी अफगानिस्तान की राह पर ही तो नहीं जा रहा धीरे-धीरे। यदि ऐसा है तो फिर हम सबसे बड़े खतरे से जूझने जा रहे हैं।

उपमहाद्वीप में अलकायदा की बंगलादेश शाखा अंसार-अल-इस्लाम ने बलॉगर की हत्या की जिम्मेवारी ली है। इस समूह का बयान कहता है, अलहमदुल्लिाह अंसार-अल-इस्लाम के मुजाहिदीनों ने अल्लाह के दुश्मन का कत्ल करने के लिए

अभियान को अंजाम दिया है। इस्लाम कभी भी इंसान और इन्सानियत के खिलाफ नहीं हो सकता। यह तो अपनी दुकान चलाने वाले कठमुल्ले टाईप के लोग अपनी करतूत को जायज़ ठहराने का बहाना ढूंढते हैं। साहसी निलोय निलय में खो गए पर उनका विचार नहीं गुम होना चाहिए। उनकी अभिव्यक्ति के अधिकार के लिए लड़ी गई जंग चलती रहनी चाहिए। ध्यान यह भी रहे कि इस अधिकार का मतलब अनर्गल कहना लिखना या छपना भी नहीं बन जाए।

संवेदनशील मुद्दों पर हमें यह धैर्य दिखाना चाहिए, मगर यह धैर्य, डर नहीं सहने की ताकत के रूप में आगे आना चाहिए और सत्ता में रहने वालों पर वह जिम्मेवारी भी आयद होनी चाहिए कि वे हर हाल हर तरीके से अभिव्यक्ति के अधिकार व उससे जुड़े लोगों के जानमाल की हिफाजत करें।

■■

कविता

-डा. रणजीत

मेरे पास नहीं है कोई चीज़ तुम्हें देने को भाई
मैं तो बस केवल ख्वाब लुटाया करता हूं -
हर मुर्दा दिल में फिर जीवन की
आग जलाया करता हूं।
लो यह सपना तुम नयी सुबह की लाली का
यह सपना खेतों की सांझी हरियाली का।
यह मिल पर सब मज़दूरों के हक का सपना
यह नई जिंदगी और नए जग का सपना।
यह दुनियां के सब लोगों के
हिलमिल कर रहने का सपना।
यह देशें-रंगों-नस्लों का दीवारें ढहने का सपना
यह मंदिर-मस्जिद-चकलों-पागलखानों बिना
समाज चलाने का सपना।
यह जेल-कचहरी, फौज-पुलिस के
बिना जगत का राज चलाने का सपना।
यह सपना जिसमें हर मानव
स्वाधीन और सक्षम होगा।
हर भेदभाव होगा समाप्त,
मानव मानव के सम होगा।
ये सब सपने सच बनने को बेताब,
लुटाया करता हूं।
हर मुर्दा दिल में फिर जीवन की
आग जलाया करता हूं।

यों स्वप्न लुटाने वाले तो बहुतेरे हैं
लेकिन कुछ अलग तरह के सपने मेरे हैं
कुछ सपने बूढ़े और बीमार हुआ करते हैं
कुछ सपने बेबस होते हैं जो महज आ भरते हैं
कुछ हिम्मत वाले चट्टानों को तोड़ राह करते हैं,
कुछ सपने मन के चोर हुआ करते हैं,
छिप कर रहते हैं।
कुछ सपने बागी होते है
जो कहना हो सो कहते हैं
कुछ सपने किसी एक की कुंठाओं की
सृष्टि हुआ करते हैं
कुछ सपने सारे युग समाज की
दृष्टि हुआ करते हैं
मैं लुटा रहा हूं सबको ऐसे सपने
जो सब के सांझे हैं, सबके हैं अपने
कविता की धरती में, सपनों के बाग लगाया करता हूं
हर मुर्दा दिल में फिर जीवन की आग जलाया करता हूं।
यह जीवन क्या है ? कुछ सपनों का मेला है
इन्सान हमेशा सपनों से ही खेला है

रैगिंग

-अरविंद हंस, पानीपत

9896650582

आज के समय में कालेज, यूनिवर्सिटीज या किसी भी शिक्षण संस्थान में रैगिंग ने एक भयावह रूप धारण कर लिया है। स्कूल से निकल कर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा करने वाले छात्रों के मन में उमंग की जगह भय का अहसास बना रहता है कि नए शिक्षण संस्थान में प्रवेश लेने पर रैगिंग के नाम पर हमारे साथ क्या होगा।

वास्तव में रैगिंग पाश्चात्य देशों से आई हुई ऐसी परम्परा है, जिसमें कि किसी भी शिक्षण संस्थान मे प्रथम बार प्रवेश लेकर आए छात्र-छात्राओं की झिझक या झेंप समाप्त करने के लिए उनके वरिष्ठ छात्र-छात्राएं उनसे खुद ही संवाद स्थापित करने हेतु उन्हें कोई गीत, कोई कविता या चुटकला आदि सुनाने को कहते हैं या इसके अतिरिक्त किसी प्रकार का कोई हावभाव प्रकट करना, जिससे कि संस्थान में नए आए छात्रों को अपनेपन का अहसास हो। ऐसा करने से नए आगंतुक छात्र अपने-आपको अपरिचित वातावरण में भी बिल्कुल सहज अनुभव करते हैं और शिक्षा ग्रहण करने में ठीक से मन लगा सकते हैं लेकिन हमारे देश में कुछ असामाजिक तत्व इस परम्परा का अनुचित लाभ उठाकर नव प्रविष्ट छात्रों को मानसिक एवं शारीरिक रूप से कई बार इतना प्रताड़ित कर देते हैं कि छात्रों को गंभीर रूप से घायल करना तो बड़ी आम बात हो गई है और छात्रों का शिक्षण ग्रहण बीच में छोड़ जाना और आत्महत्या कर लेने की घटनाओं में भी दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। यह वातावरण हमारे और हमारे देश के लिए बहुत ही घातक है। नई पीढ़ी का स्वतंत्र एवं स्वच्छंद वातावरण में शिक्षा ग्रहण कर पाना राष्ट्र की प्रगति में बाधक होगा। हमें ऐसे दूषित वातावरण से निजात पानी होगी।

रैगिंग को रोकने के लिए हमारी सरकार ने कुछ कानून जरूर बनाए हैं, परन्तु इससे छुटकारा पाने के लिए हमें असामाजिक एवं दूषित वातावरण पैदा करने वाले छात्रों की मानसिकता बदलने की जरूरत है। ऐसे लोगों के हृदय में परिवर्तन लाकर उनमें नैतिकता जगानी होगी। हमें यह करना चाहिए कि हर शिक्षण संस्थान मे नए सत्र के प्रारंभ में ही 'नव-प्रविष्ट छात्र अभिनंदन समारोह' या 'परिचय सम्मेलन' नाम से कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए। यह आयोजन वरिष्ठ छात्रों की तरफ से आयोजित हो और सभी नए प्रवेश लिए छात्रों का फूल-मालाओं से स्वागत किया जाए। उनका परिचय सहज ढंग से जाना जाए और उनका जीवन में क्या करने का उद्देश्य है? आदि-आदि कई तरह के प्रश्न ऐसे हो सकते हैं, जोकि मंच पर सम्मानजनक ढंग से पूछे जा सकते हैं। ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की पहल शिक्षण संस्थान की प्रबंधक समिति को करनी पड़ेगी। एक-दो वर्ष ऐसा करने से यह परम्परा बन जाएगी, जिसे वरिष्ठ छात्र-जन खुद ही आयोजित करने के लिए उत्सुक रहेंगे। यह कार्यक्रम कुछ-कुछ विदाई समारोह जैसे ही हो सकते हैं।

सभी शिक्षण संस्थाओं जहां-जहां रैगिंग का चलन है, वहां ऐसे कार्यक्रम प्रायोगिक रूप में करेंगे तो उन्हें निश्चित रूप में रैगिंग को रोकने में सफलता मिलेगी और छात्रों के बीच आपसी सद्भाव, सौहार्द एवं आत्मीयता का वातावरण बनेगा।

★★

जनगणना द्वारा जाहिर नहीं हुई असली संख्या

–सुभाष गाताडे

सन् 2011 की जनगणना के धर्मों संबंधी आंकड़े जारी होने के बाद जो सनसनी पैदा हुई, उसने एक दिलचस्प तथ्य को परछाई में ला दिया, जोकि एक विशाल कार्यवाही से उभरा था। यह तथ्य हमें बताता है कि भारत में 28,87000 लोग किसी धर्म में यकीन नहीं रखते। यह कुल जनसंख्या का 0.24 फीसदी बनते हैं। वास्तविक तौर पर इनमें न सिर्फ नास्तिक और तर्कशील बल्कि वह सभी लोग भी शामिल हैं, जो किसी धर्म में नहीं, बल्कि, अनजानी ताकत में विश्वास रखते हैं। यह भी निश्चित तौर पर स्वागत योग्य घटनाक्रम है कि राज्य ने आखिर उनके अस्तित्व को कबूला है और जैसे द्राविड़ कड़गम के नेता केरु विरामनी ने कहा है 'जनगणना' में पहली बार उनकी आवाज़ को दर्ज किया गया है, परन्तु इससे पहले हुए सर्वेक्षण और अध्ययनों पर एक सनसनी नज़र मारते हुए यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि दर्शायी गई संख्या वास्तव में काफी कम है। टाइम्स ऑफ इंडिया ने प्रसिद्ध एजेंसी टीएस के साथ मिलकर भारत के 10 शहरों दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, बैंगलौर, हैदराबाद, पटना, लखनऊ और नागपुर में एक सर्वेक्षण किया था, जिसका नाम था भगवान और आस्था को कैसे देखते हैं भारतीय! सर्वेक्षण के अनुसार दो तिहाई भारतीय भगवान में पक्की आस्था रखते हैं। उम्र के 20वें में से 72 फीसदी लोग भगवान में पक्का यकीन रखते हैं।

सर्वेक्षण में शामिल 11 फीसदी लोग भगवान को मानवीय रूप में पूजते हैं। यह भी देखा गया है कि उन लोगों की संख्या ज्यादा है, जिनका मानना है कि अब वह पहले के मुकाबले ज्यादा धार्मिक हैं। इस सर्वेक्षण ने उत्तरी और दक्षिणीय भारत के मध्य मौजूद अलिखित दरार को सामने लाया है। सर्वेक्षण के अनुसार उत्तर भारत के 92 प्रतिशत लोगों ने भगवान में आस्था जाहिर की, जबकि दक्षिण में यह संख्या घट कर 86 प्रतिशत रह गई। इसी तरह धार्मिकता और नास्तिकता के विश्व सूचक अंक में बताया गया है कि भारत में गैर धार्मिक लोगों की संख्या बढ़ी है। 2005 में इस सर्वेक्षण में 87 प्रतिशत लोगों ने खुद को धार्मिक बताया था। 2013 में यह संख्या घटकर 81 प्रतिशत रह गई। इसी तरह 7 वर्षों में 6 प्रतिशत की कमी पाई गई। दिलचस्पी वाली बात यह है कि खुद को नास्तिक कहलाने वाले लोगों की संख्या में भी एक प्रतिशत की कमी देखी गई। 2005 में 4 प्रतिशत लोगों ने खुद को नास्तिक घोषित किया, जबकि 2012 में ऐसे लोग 3 प्रतिशत रह गए।

यह भी पता चला है कि विश्वभर में इसी तरह का रूझान है। विश्वभर में जहां धार्मिकता 9 प्रतिशत घटी है, वहीं नास्तिकता सिर्फ 3 प्रतिशत ही बढ़ी है। वैसे खुद को धार्मिक कहलाने वालों की संख्या में जिक्र योग कमी दर्ज की गई। 'द टेलीग्राफ' में 11 जनवरी 2015 को छपे लेख 'इन गॉड बी डांट बलीव' में बताया गया है। 'यह विरोधी मुहिम खामोशी के साथ जोर पकड़ रही है' और 'भारतीय नौजवानों में नास्तिकता के पैरोकारों की संख्या बढ़ रही है।' लेख में कहा गया कि महानगरों का एक मोटा सा सर्वेक्षण दिखाता है कि तकरीबन 30 प्रतिशत लोग भगवान में आस्था नहीं रखते। इनमें से 17 प्रतिशत जाहिर नास्तिक हैं। भगवान के अस्तित्व में यह यकीन रखने वालों में तकरीबन आधे भगवान को किसी धार्मिक संकल्प के साथ एक परिभाषित न की जा सकने वाली गैबी ताकत मानते हैं। चाहे इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि उपरोक्त सर्वेक्षण छोटे से नमूनों पर आधारित थे, **परन्तु यह बात जरूर प्रत्यक्ष है कि जनगणना के आंकड़ों में अविश्वासी की श्रेणी में दर्शाए गए लोगों की संख्या बहुत कम है**, जबकि भारत एक ऐसा देश है जहां नास्तिकवाद

और संदेहवाद का एक लंबा इतिहास है और बुद्ध, जैन धर्मो और हिन्दूवाद की कुछ धाराओं की ओर से नास्तिकता को कबूलने योग माना गया है। इसके साथ-साथ ही भारत में कई नास्तिक राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक भी हुए हैं। एक और अहम् तथ्य यह ध्यान में रखे जाने की ज़रूरत है कि आधुनिक धर्म निरपेक्ष लोकतंत्र में एक नया रूझान देखने को मिल रहा है, जिसके तहत लोग दिन-प्रतिदिन धर्म से मुंह मोड़ रहे हैं। मिसाल के तौर पर नीदरलैंड में 40 प्रतिशत लोगों ने किसी धर्म आदि के प्रति अपनी प्रतिबद्धता नहीं प्रकट की है।

जनगणना में 'अविश्वासी' श्रेणी में लोगों की संख्या कम रहने का एक संभव कारण यह लगता है कि जनगणना के फार्म में छोटे या कबायली धर्मो के साथ-साथ नास्तिकों और संदेहवादियों को भी और सरलेख में एक ही गैर-वर्गीकृत श्रेणी में बांधा गया है। ज़िक्रयोग है कि कई नास्तिकों और संदेहवादियों ने इस बात पर नाराजगी भी जाहिर की थी कि 2011 की जनगणना के फार्म के सवाल नंबर 7 में लोगों को सिर्फ उनका धर्म बताने के लिए कहा जाता है। अगर उनका धर्म 6 मुख्य धर्मो में आता है तो उसके लिए एक कोड दिया जाता है। उनका कहना है कि यह एक बंद किस्म का सवाल है जो एक धार्मिक जवाब देने के लिए ही मजबूर करता है। हालांकि संबंधित मंत्रालय ने बाद में जनगणना करने वालों को हिदायत दी थी कि ऐसे व्यक्तियों के लिए जनगणना में 'कोई धर्म नहीं' दर्ज किया जाए। परन्तु फिर भी तकनीकी तौर पर जनगणना के आंकड़ों में सिर्फ कोड वाले जवाब ही शामिल हो सके हैं। इसलिए, अविश्वासी श्रेणी में लोगों की संख्या कम रहने का कारण राज्य की ओर से प्रयोग की गई अस्पष्टता ही है। ब्रिटेन में भी 2011 की जनगणना के समय ऐसी ही मामला सामने आया था, जहां धर्मनिरपेक्ष समूहों की ओर से एक मुहिम चलाकर लोगों को इस बात के लिए प्रेरित किया गया कि जो धार्मिक नहीं है, वह जनगणना में इस बात का स्पष्टता के साथ जिक्र करें।

-;दैनिक सवेरा साभार

पृष्ठ 26 का शेष (अंधविश्वास..).

गई है या बाहरी हवा लग गई है, कई बार गंभीर रूप से बीमार होने के बाद लोग बुखार झाड़-फूंक, बैगा, गुनिया के पास ही होते हैं, जबकि बच्चे रात में भूख लगने, पेट में संक्रमण होने से वे बुखार आदि से पीड़ित हो जाते हैं। जब तक चिकित्सा पद्धति का विकास, बीमारियों की दवाएं, टीके नहीं बने थे, तब तो काला धागा बांधने, झाड़-फूंक, मंत्र-तंत्र से ठीक करने का प्रयास किया जाता था, लेकिन अब भी कई स्थानों पर स्वास्थ्य शिक्षा के प्रचारित न होने से लोग अपना स्वास्थ्य व समय इन टोटकों में गंवाते हैं, जैसे सर्पदंश, कुत्ता काटने जैसे मामलों में विभिन्न परीक्षणों से यह स्थापित हो चुका है कि विषैले सर्प तथा रैबीज वायरस से ग्रस्त कुत्ते के काटने पर यदि समय रहते चिकित्सा सुविधा उपलब्ध न कराई गई तो प्रभावित व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। उसी प्रकार उच्च्य रक्तचाप मधुमेह, कैंसर, कुष्ठ रोग, लकवा, मिर्गी जैसे पुरानी बीमारियों के उपचार के संबंध में भी भांति-भांति की धारणाएं प्रचलित हैं, जबकि भारत शासन के दवा एवं चमत्कारिक उपचार के अधिनियम 1954 में स्पष्ट लिखा है कि ऐसी 54 गंभीर बीमारियों का त्वरित उपचार, मान्यता प्राप्त चिकित्सकों से करवाया जाना ही उपयुक्त है तथा ऐसी व्याधियों के चमत्कारिक उपचार का दावा करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जा सकती है। पिछले कुछ वर्षो से लोगों की समस्याओं को सुलझाने के नाम पर कथित भविष्यवक्ता और तांत्रिक होटलों में रुकते हैं तथा बड़े-बड़े विज्ञापनों के आधार पर भीड़ बटोरने का प्रयास करते हैं। लोगों की किसी भी समस्या को तीन दिनों में सुलझाने का दावा करके उन्हें ग्रह दोष, संकट से मुक्ति दिलाने के नाम पर ठगते हैं, विज्ञापनों से आकर्षित हो जो व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानियों से मुक्त होने जाते हैं, बाद में वे ही अपने को ठगे जाने की शिकायत करते हैं। जबकि मंगल, शुक्र, शनि, बुध आदि सौरमंडल के ग्रह हैं तथा चंद्रमा, पृथ्वी का उपग्रह है। ये ग्रह-उपग्रह पृथ्वी से करोड़ों मीलों की दूरी है, इसलिए ये अलग-अलग राशि,नाम के व्यक्ति पर भोले-भाले लोगों को अपना शिकार बनाते हैं।

धर्म या अधर्म

–बलजीत भारती
मो. 8295051400

धर्म भारत के आम जन–मानस में गहरी पैठ रखता है। ज्यादातर लोग स्वयं को धार्मिक कहने में गर्व महसूस करते हैं। जो व्यक्ति जितना अधिक धार्मिक होगा, उतना ही अच्छा समझा जाएगा। लेकिन क्या वास्तव में भी ऐसा ही है। क्या धर्म ने मानवता की कोई भलाई की भी है या फिर धर्म के नाम पर कोरा पाखंड, धंधेबाजी एवं राजनीति हो रही है।

कहा जाता है कि 'मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।' लेकिन वास्तवकिता में मजहब यानि धर्म ने सिवाए पाखंड और नफरत के कुछ भी नहीं दिया। धर्म ने आदमी को इस बुरी तरह से बांट दिया है कि इस शब्द से एक तरह की चिढ़ सी होने लगी है। आदमी तो एक ही है, लेकिन यदि उसकी मूछें हैं, दाढ़ी नहीं है तो उसे हिन्दू कहा जाएगा। दाढ़ी है मूछ नहीं है तो मुसलमान। दोनों है तो सिख, सफाचट है तो ईसाई। आदमी का ही नहीं वरन् अदमी से जुड़ी चीजों का बंटवारा भी धर्म के आधार पर कर दिया गया है। धोती हिन्दुओं की, पायजामा मुसलमानों का, पगड़ी वाला सिख है, चपटी टोप हिन्दू की है और गोल टोपी मुसलमान की। गाय का संबंध हिन्दुओं से और सूअर का मुसलमानों से जोड़ दिया गया है। सूरज हिन्दुओं का और चांद मुसलमानों का हो गया। यहां तक कि सब्जियां हिन्दू हो गई और बकरा मुसलमान। हम इसे धर्म में विविधिता कहकर मुंह नहीं मोड़ सकते। यह तो सरासर आदमी को बांटने की साजिश है।

धर्म ने आदमी को दिया क्या है? इतिहास गवाह है कि धर्म नफरत और अलगाववाद फैलाने के लिए जिम्मेवार है। दुनिया की ज्यादातर लड़ाइयां धार्मिक कट्टरता के नाम पर लड़ी गई हैं, जिसमें लाखों बेकसूर लोग मारे गए और अरबों की सम्पति का नुक्सान हुआ। धर्म के आधार पर भारत–पाक बंटवारा हुआ जो अभी तक दुनिया में सबसे बड़ा सामूहिक विस्थापन था। 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के उपरांत दिल्ली में हज़ारों सिखों का कत्ल कर दिया हुआ । ईसाई प्रचारक ग्राहम स्टेन्ज और उसके बच्चों को जिंदा जला दिया गया। 2002 में गोधरा कांड के बाद गुजरात में लगभग 2000 मुसलमानों का कत्ल कर दिया गया। कुछ साल पहले हरियाणा के दुलीना में 5 व्यक्ति एक मरी हुई गाय की खाल उतार रहे थे। किसी ने पुलिस में शिकायत कर दी और पुलिस ने उन्हें चौकी के लॉकअप में बंद कर दिया। उधर अफवाह यह फैली कि कुछ लोगों ने एक गाय की हत्या कर दी है। उन्मादी भीड़ ने चौकी को घेर लिया और लॉक अप को तोड़ कर उन पांचों व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया। क्या यही धर्म है? यह प्यार करना सिखा रहा है या नफरत। अगर यही धर्म है तो हमें ऐसा धर्म कतई मंजूर नहीं है। हमें मानवता को अपना धर्म बनाना होगा। धर्म के नाम पर हो रहे विभिन्न गोरखधंधों से छुटकारा पाना होगा। गर्व से कहो हम हिन्दू है जैसे अमानवीय व भयानक नारों के स्थान पर हमें इंसान होने पर गर्व है जैसे नारे देने होंगे। कट्टरपंथी ताकतें धर्म के नाम पर जहर घोलने में लगी हुई हैं ताकि उनकी रोजी–रोटी चलती रहे। हमें मानवता के हित में उनकी चालों से सावधान रहना होगा, नहीं तो वह दिन दूर नहीं, जब कि भारत भी इराक, सीरिया, अफगानिस्तान व पाकिस्तान की तरह जलकर राख हो जाएगा।

अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाए
जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाए

परिंदो में कहां इंसानों सी फिरकापरस्ती है
कभी मस्जिद पे आ बैठे, कभी मंदिर पे जा बैठे

सफर हयात का तमाम हिजरतों में बंट गया
वतन जमीन भी न रही, मैं सरहदों में बंट गया

हजार नाम थे मगर मैं सिर्फ एक था
न जाने कब मैं मस्जिदों-मंदिरों में बंट गया

गज़ल

रामेश्वर दास 'गुप्त'

मंदिरों में अब सजे भगवान मिलते हैं बहुत
बोलता कोई नहीं, बेजान मिलते हैं बहुत

लूट कर सब माल घर का, ले गया अंधा-यकीन
धर्म का गटके नशा, अनजान मिलते हैं बहुत

पढ़ रहे अनपढ़ लकीरें, आज एम.ए. पास की
सिर झुकाए सब जगह, नादान मिलते हैं बहुत

हां मुझे तो धर्म से, हासिल हुआ कुछ भी नहीं
मिल रही रोटी नहीं, अहसान मिलते हैं बहुत

कट रही जेबें हमारी, खूब डेरों में जनाब
लुट गए तो फिर खड़े, हैरान मिलते हैं बहुत

बस गए दो एक घर, बेशक खा हिस्सा लूट का
घर उजाड़े आप के, सुनसान मिलते हैं बहुत

ढोल भीतर पोल हैं, सब खोल कर तुम देख लो
है कहानी एक सी, उन्वान मिलते हैं बहुत

कारखाने मिल चलाते, त्याग के दुनिया जनाब
संत वाले भेष में, धनवान मिलते हैं बहुत

लेखकों/पाठकों के लिए:-

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए ।
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mai:tarksheeleditor@gmail.com आदि पर भेजी जा सकती है। ई-मेल भेजते समय SG-4 हिन्दी टाईप का ही उपयोग करें।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णत: अव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

विशेष अपील:

अपने मित्रों और रिश्तेदारों को किसी शुभ अवसर पर सरपराईज़ उपहार दीजिए। 100 रुपये चन्दा देकर साथ में उनका पता भेजें। आपकी ओर से एक वर्ष तक 'तर्कशील पथ' लगातार उनके घर भेजा जायेगा।

विशेष अपील

तर्कशील पथ के सभी सदस्यों से अपील है कि वे तर्कशील पत्रिका के कम से कम दो-दो सदस्य-ग्राहक और जोड़ें ताकि समाज में वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ाया जा सके

समृतिमयी क्षण : तर्कशील परिसर समारोह



साथी भगवन्त सिंह (यू.के.) तर्कशील भवन बरनाला (पंजाब) में तर्कशील परिसर का नींव पत्थर रखते हुए।



राज्य कार्यकारिणी द्वारा साथी भगवन्त सिंह को समारोह में सम्मानित किए जाने का दृश्य



समारोह में उपस्थित तर्कशील कार्यकताओं एवं अन्य प्रशंसकों के समृतिमयी चित्र

तर्कशील लहर के नेतृत्व, कार्यकर्ताओं, प्रशंसकों एवं जनतक संघठनों से इस परिसर के निर्माण के लिए

अपील

सम्पर्क : मा. राजेन्द्र भदौड़, प्रमुख कार्यकारी प्रबंधक तर्कशील सोसायटी पंजाब (मोबा: 98728 74620)

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera ByPass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।